भोजपुरी खातिर समर्पित त्रैमासिक पत्रिका

भोजपुरी जिंदगी

वर्ष : 1 अंक : 3 अप्रैल-जून 2012

DCP Lic. No. F2(B-15)/2011-Press
RNI.- DELBHO-00009/29/1/2010-TC

प्रधान संपादक	डॉ. गोरख प्रसाद 'मस्ताना'
संपादक	संतोष कुमार
सह संपादक	अभय कुमार सिंह
प्रबन्ध संपादक	मनोज कुमार सिन्हा
शब्द संयोजन	तरुण चन्द्र चतुवेदी
तकनीकी सलाहकार	नरेश कुमार रुडोला
ग्राफिक्स	आर. जयराम प्रसाथ

संपादकीय कार्यालय

आर जैड एच/940, जानकी द्वारिका निवास, प्रथम तल, राजनगर-2, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली-110077

फोन - 09868152874, **ई.मेल** - **bhojpurijinigi@gmail.com**

सहयोग राशि : 25 रुपये (प्रति अंक,) **सालाना** : 100 रुपये

इस अंक में

टैगोर के कृतियन में नारी चित्रण 5

रवीन्द्रनाथ टैगोर: एगो सर्जक 7

रवीन्द्रनाथ, गाँधी जी आ सर एंड्रूज 13

रवीन्द्रनाथ टैगोर: भारतीय साहित्य पुर्नजागरण के पुरोधा 15

हे मोर दुर्भागा देश 21

'चंडालिका' अउर अनुवाद उ पल 9

स्वारथ आ साधु 26

विद्यार्थी के परीक्षा 53

सदका 30

अन्य पृष्ठ

रवीन्द्रनाथ टैगोर - बिहार के गौरव 18

रवीन्द्रनाथ टैगोर के कविता 'Where the Mind is without fear' के भोजपुरी अनुवाद 32

A English poem of Ravindra Nath Tagore "Day by day it float my paper boats" 28

चित्त जेथा भयशून्य उच्च जेथा सिर 33

पेटवा के आग 33

कविता - 'माई के दुलार-चुचुकार हो' आ 'मरलस महंगिया' 34

कहानी - 'मुँहबाई' आ 'गुमान' 35

कविता - 'मारता अमीरी' आ 'गमछा' 36

सत्यकवि रविन्द्र समान अब भी विश्व में कोई नहीं 37

प्रश्नगत चम्पारण 38

पूर्वी के धाह में आह 39

भोजपुरी उपन्यास के उद्भव आ विकास 43

सत्यार्थी जी आ शांतिनिकेतन 46

मातृ-अभिषेक: रवीन्द्रनाथ ठाकुर 48

डाक बाबू 49

इतिहास गूंगा होला 57

प्रत्येक रचना के लिए लेखक के विचार उसके निजी विचार हैं। लेखक और सम्पादक के विचारों में साम्य होना आवश्यक नहीं है। अत: प्रत्येक रचना के विवाद के लिए लेखक स्वयं ही उत्तरदायी होगा। कथा एवं लेख में प्रकाशित चित्र अविवादित एवं प्रतीकात्मक हैं। इनका उपयोग केवल कलात्मकता बढ़ाने के लिए किया गया है। किसी भी विवाद का निपटारा दिल्ली न्यायालय में ही होगा।

भोजपुरी खातिर समर्पित त्रैमासिक पत्रिका

अतिथि संपादक के कलम से .....

भारत के सामाजिक व्यवस्था एगो अइसन अत्याधुनिक व्यवस्था बा जे करा चलते आजो इ देश के वंचित समाज घोर कष्ट में जीवन जीये खातिर बाध्य बा। जाति व्यवस्था जेकरा ऊपर धरम के मोहर लागल बा उ 'कैंसर' जइसन भयानक बेमारी लेखा लाइलाज होके बार-बार फूट पड़ेला। आजो 2012 में भी हमनी के देश के चारों कोना में इ व्यवस्था के भयानक रूप में प्रत्यक्ष देखऽ तानी जा।

समाज के निचला तबका के साथे आजो जवन वेवहार होता उ मानवता के नाम पर कलंक हऽ। भोजपुरी जिंदगी खाली भोजपुरी भाषा अउर क्षेत्र से जुड़ल विषय लेके एकांगी पत्रिका नइखे। इ पत्रिका आपन राष्ट्रीय स्वरूप के ओर अग्रसर हो रहल बीया। हमनी के इ पत्रिका के इ नवका अंक देख अपने सभे इ सहज रूप से अनुमान लगा सकऽतानी जा कि आपन राष्ट्रीय दायित्व के लेके अउर भोजपुरी जइसन समृद्ध भाषा के विश्व स्तर पर अन्य भाषा के समक्ष लाये खातिर इ पत्रिका के भूमिका केतना महत्वपूर्ण होत जाता।

विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर अपना साहित्य के माध्यम से आपन देश के नाम रोशन क के भा खाली नोबेल पुरस्कार पाके विख्यात ना भइलन बाकिर मानवता के पोषक विचारधारा खातिर विश्वविख्यात भइलन। इ पत्रिका अइसन महान साहित्यकार अउर चिन्तन के ऊपर विशेषांक निकाल के फिर एगो नवका सामाजिक चेतना खातिर अउर भारत के नवनिर्माण खातिर आपन योगदान देवे खातिर अग्रसर हो रहल बिया। आशा बा साहित्य के विभिन्न विधा से पूर्ण अउर सामाजिक चेतना से परिपूर्ण साहित्य पढ़ के निश्चित रूप से रउरा लोग में नवचेतना के संचार होई। हमार कामना बा कि गुरू रवीन्द्रनाथ ठाकुर के अनछुअल पहलू के पढ़े के बाद रउरा लोग भी इ पत्रिका के आगे बढ़ावे में आपन योगदान जरूर देम।

राउर आपन
प्रो. शत्रुघ्न कुमार
निदेशक, भोजपुरी भाषा, साहित्य एवं सांस्कृतिक केन्द (इग्नू), दिल्ली

वरिष्ठ दलित साहित्यकार प्रो. शत्रुघ्न कुमार इग्नू में प्रोफेसर पद पर बानी। 'हिस्से की रोटी' 'अग्निशिखा' 'दलित आंदोलन के विविध पक्ष आ मेरे कार्य, विचार और संस्कार' इहाँ के प्रसिद्ध पुस्तक प्रकाशित बाड़ी सन। 'लंदन विश्व हिन्दी सम्मेलन' के विश्व मंच पर इहाँ के दलित साहित्य के परचम लहरा देले बानी। इहाँ के रचनन के कई गो देशी आ विदेशी भाषा में अनुवाद भइल बा जवन दलित आंदोलन के मजबूत दिशा दे रहल बा। विश्व के सबसे लमहर विश्वविद्यालय इग्नू में भोजपुरी भाषा में पाठ्यक्रम आ भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक केन्द्र के स्थापना करके एगो अमर इतिहास रचले बानी। भोजपुरी के पाठ्यक्रम में दलित, पिछड़ा आ महिला विमर्श के मजबूती से जगह दिअवले बानी। रउआ पहलकीं बेर 'हीरा डोम' के पूरा कविता पाठ्यक्रम में जोड़ले बानी। कई भाषा के जानकार प्रो० शत्रुघ्न कुमार चित्रकार भी हई। रउरा 1976 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी जी के हाथ से रजत पदक से विभूषित भइनी। 'भोजपुरी जिंदगी' के इ अंक के अतिथि संपादक के रूप में पत्रिका परिवार राउर आपन हार्दिक आभार व्यक्त करब बा। 'संपादक'

प्रधान संपादक के कलम से .....

वर्तमान समय में भोजपुरी भाषा गाँव जवार से निकल के राज्य प्रान्त में पसरत, देश के अलगे-अलगे भाग के भिंगावत विदेश ले पहुँच गइल बा। एकर प्रभाव बिहार से बंगाल ले, भोपाल से मुम्बई ले देखल जा सकेला, एतने ना, मॉरिशस से नेपाल ले इ आपन सुगंध बिखेर रहल बा। पिछला बरिस हमरा कलकता प्रवास के मौका मिलल। स्टेशन से निकल के जहवाँ-जहवाँ, जेने-जेने गइनी भोजपुरी भाषा बोले वाला लोगन से भेंट होत गइल। बुझइबे ना कइल कि हम बिहार में बानी कि बंगाल में। एक हफ्ता के प्रवास में विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के रचना पढ़े के खूब मौका मिलल। कलकता में रवीन्द्र संगीत आ कला संस्कृति के दरसनो भइल। प्रकृति के जवन-जवन खल-बेखल के चित्र उहाँ के आपन कवितन में खींचले बानी उ अद्भूते नू बा। एतने कोमल आ सतरंगी चित्र भोजपुरी भाषा में भी लउके इहे हमार मंशा रहेला। रवीन्द्रनाथ के अध्यात्म में आ प्रकृति काव्य में अगर जे भारत के आत्मा बोलेला तऽ उ एकदम सही बा। उहँवे हमरा 'भोजपुरी माटी' के संपादक 'सभाजीत मिश्र' अउर भोजपुरी कवि आ गीतकार 'रामजीत राम' से भेंट भइल। कलकते में भोजपुरी गज़लकार नूर अहमद 'नूर' से बातचीत भइल तऽ लागल कि बंगाल में भोजपुरिया भाषा-भाषी लोग बंगाल के विकास में लमहर योगदान दे रहल बा।

भाषा प्रेम आ सद्भाव के बानगी हऽ। महापुरुष आ महान साहित्यकार के कवनो विशेष भाषा भा प्रदेश में बान्ह के देखल उचित ना होला उ सभन के बोली अउर क्षेत्रियता से ऊपर उठ के देखले पर एकता, साहित्य भा संस्कृति के विकास संभव होला। 'भोजपुरी जिंदगी' के हरमेसे इ कोशिश रहल बा कि अपना में सभ का के लेके, समेट के चलल जाए। जहवाँ गुण बा, बटोर लिहल जाए। एही भावे-विचारे इ अंक विश्वकवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के स्मृति अंक के रूप में प्रोसेल जा रहल बा।

'गीत' भोजपुरी भाषा के एगो विशेष विधा ह। गुरुदेव के गीतांजलि में गीतन के मोती बा। जवना बरिस (1913) गुरुदेव के गीतांजलि खातिर नोबेल पुरस्कार मिलल ओकरा से दू बरिस (1911) पहले रघुबीर नारायण जी के राष्ट्रीय भाव के गीत 'बटोहिया' लिखाइल रहे। गुरुदेव के राष्ट्रीय भाव उहाँ के लिखल कविता 'Where the mind is without fear' में जेतना पोढ़गर लउकेला ओही भावे 'बटोहिया गीत' में राष्ट्रीयता के दरसन होला।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के जिनगी एगो आदर्शमय आ बहुरंगी जिनगी हऽ जहवाँ कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी आ ना जानी केतना संस्मरण लिखाइल बा। आजू भोजपुरी में ओह कुल विधा पर काम हो रहल बा अउर शोध हो रहल बा। गुरुदेव के 150वीं जयंती के अवसर पर जहवाँ सज्जी दुनिया में उनकर लिखल साहित्य अउर व्यक्तित्व पर चर्चा हो रहल बा तऽ भोजपुरी भाषा-भाषियो के उहाँ के प्रति आपन कृतज्ञयता बरते में पाछे काहे रही? इ हमनी के कर्तव्यो बा अउर नैतिकतो। एही भावे 'भोजपुरी जिंदगी' के इ अंक गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर पर आधारित अंक बा। उमेद बा कि अपने सभे एकर आदर करब अउर आपन उत्साहवर्धन से संपादक के मनोबल बढ़ावत रहब। आखिर में -

"इ धरम हवे आपन पुरूखन के
आगू शीष नवाईं
इ संस्कार ह उनकर कृति
अपना हीया बसाईं।"

एही भावे
राउर आपन

संपादक के कलम से .....

संतोष कुमार

कवि सम्राट रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 150वीं वर्षगाँठ पूरा देस में धूमधाम से मनावल जा रहल बा। साहित्यिक संस्थन के अलावा राज्य सरकार, भारत सरकार आ देश-विदेशन में बड़ा जोर-शोर से इनकर जनमदिन के मनावल जाता। गुरुदेव भारत के प्रसिद्ध महाकवि जइसे कबीर, रैदास, वाल्मीकि आ तुलसी के परम्परा के कवि रहनी। आज देस विदेस में इहाँ के मानवतावादी दृष्टिकोण आ वैश्विक भाईचारा के विचार समझे खातिर इहाँ के लिखल रचना सन के अनुवाद हो रहल बा। अध्ययन हो रहल बा आ महातम के समझे के कोशिश हो रहल बा। महाकवि के रचना कवनो संकीर्णता न बलुक विश्व-मानव के एकता आ श्रेष्ठता के संदेश देला। भोजपुरी क्षेत्र में हाशिया पर खड़िआइल लोगन, दबल-कुचल, दुर्बल, कमजोर, दलित, पिछड़ा के भितरी एगो नया सामाजिक चेतना के प्रवाह करेला गुरुदेव के रचना। 1901 में टैगोर क्षेत्रवाद के विरोध करत बंगाली भाई लोगन के आपन सीमित दायरा (Parochialism) से बाहर आये के कहलन -

The Bengali people, petty minded by nature, are neglectful towards people of other regions. Unfortunately the few Bengali who have recently done well in there sphere of activity are mainly in politics.

टैगोर राष्ट्रवाद आ स्वदेशी के नाम पर साधारण जन के दु:ख चहुँपाये के विरोध कइनी। 'भोजपुरी जिंदगी' के इ अंक में रउआ विश्व कवि से जुड़ल तरेह-तरेह के आलेख, विश्वकवि के लिखल कवितन आ दूसर विधन के अनुवाद पढ़े के मिली। आज के वैज्ञानिक युग में अनुवाद के महत्व बढ़ गइल बा। टैगोर के विचार के 20 करोड़ भोजपुरिया जाने माने जइसे विश्व के दूसर देशन में कई गो भाषा में अनुवाद पढ़ के लोग जानत आ मानत बा। गुरुदेव के अंग्रेजी कविता से भोजपुरी भावानुवाद, काव्यानुवाद आ सारानुवाद इहाँ पाठक लोग ला दिहल जा रहल जवन भोजपुरी भाषा आ साहित्य में अनुवाद के खाली जगह भरे के काम करी। हम आभारी बानी प्रो. शत्रुघ्न कुमार जी के जे हमनी के इ पत्रिका के अतिथि सम्पादक बने के निहोरा स्वीकार कर के इ पत्रिका के महत्व बढ़ा देनी। हम स्व0 सिपाही सिंह 'श्रीमंत' के परिवार के लोगन के कृतार्थ बानी। हम अमृतपुत्र के आभारी बानी, हम पत्रिका परिवार से जुड़ल प्रत्येक सदस्यन श्री तरूण चन्द्र चतुर्वेदी, श्री जयराम प्रसाथ, श्री अभय कुमार सिंह आ मनोज कुमार सिंह के विशेष धन्यवाद देम जेकर मदद के बगैर इ पत्रिका इ रूप में आ ना सकत रहे।

गुरुदेव के प्रति भोजपुरी जिंदगी के इ श्रंद्धाजलि अंक रउआ सभे के पसन पड़ी इहे उमेद बा।

राउर आपन
संतोष कुमार

आलेख

टैगोर के कृतियन में नारी चित्रण

अमृता बेरा

अमृता बेरा एगो सुप्रसिद्ध कवयित्री, साहित्यकार, अनुवादक आ गज़ल गायक बानी। इहाँ के तस्लीमा नसरीन के गई गो किताबन आ लेखन के बंगाली आ हिन्दी अनुवाद कइले बानी। इनकर कइल गइल अनुवाद सुप्रसिद्ध हिन्दी पत्रिका 'हंस' में प्रकाशित भइल बा। इनकर बंगाली अनुवाद 'हनिया' के बहुत प्रशंसा हो रहल बा। रउआ पिछला बरिस मॉरीशस में आपन संगीत गायन के सफल प्रस्तुति देके आइल बानी। भोजपुरी भाषा के प्रति इनकर प्रगाढ़ प्रेम बा आ समय-समय पर इ पत्रिका खातिर आपन सेवा देत रहेनीं। इहाँ से सम्पर्क खातिर amrujha@gmail.com पर मेल कर सकीला।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के बारे में कहल जाला कि उहाँ के "Myriad minded man" आनि की अनगिनत दिमाग राखे वाला आदमी रहनी। उहाँ के केतना रचनात्मक शैलियन पर विस्तृत रूप से लिखले बानी, जइसे कविता, कहानी, नाटक, गद्य, निबंध, हजारन गीत, जेकर संगीत उहाँ के अपने से तइयार कइनी, लिपिबद्ध कइनी आ हजारन चित्र अउर रेखाचित्रो बनवनी जहवाँ एक ओरि गुरुदेव के कविता प्राकृतिक, सुन्दरता, जीवन के गूढ़ मरम के जाने अउर आध्यात्मिक विषय पर होत रहे, उहे दोसरा ओरि उनकर लघुकथा में आम जन से जुड़ल घटना, समस्या, सुख-दुख के प्रधानता रहे। उहाँ के कहानियन में मेहरारूअन के समाज में दयनीय स्थिति ओकनी के संघर्ष, ओकनी के शोषण के चित्रण बा, उहँवे उहाँ के कहानियन के नायिका साहसी, समाज के चुनौती देवे वाली, विदुषी अउर सशक्त महिला रहली सन। गुरुदेव में स्त्री के मानस के समझे के अद्भुत क्षमता रहे। उहाँ के सामाजिक व्यवस्था में स्त्री-पुरुष के असमानता के अन्याय रूप में महसूस कइले बानी अउर स्त्री के घर समाज में जादा आजादी, निर्णय लेवे के अधिकार आदि, आपन कहानियन के स्त्री चरित्रन के माध्यम से हमेशा समर्थन व्यक्त कईनी। उहाँ के शुरुआत के कहानियन में स्त्री चरित्र के ममता से भरल महतारी जइसन चरित्र जइसे - 'गोरा', 'राशोमोनीर छेले' आ फेर 'शेषेर रात्रि' आ फेर प्रेमिका के रूप में जइसे 'डाकिया', 'जय-पराजय' भा 'शोनार तोरी' में रहल। उहाँ के लघु कथा में स्त्री के जीवन के मुख्यत: तीन पक्ष रउरा सामने आवता - पहिलका मर्द-मेहरारू के बीच के संबंध, दूसरका मेहरारू के सामाजिक शोषण अउर तीसरका, एगो नयकी औरत के जनम जवन रूढ़िवाद के चुनौती देतीया आ अपना जीवन के निर्णय

खुदे लेतिया। इ जवन तीसरकी तरह के मेहरारू बाड़ी उ बहुत मजबूत रूप में उभर के सामने आवत बाड़ी। उहाँ के रचना – 'स्त्रीर पोत्रो', 'चित्रांगदा', 'नोष्टो नीर', 'पोएला नम्बर', 'घरे-बाईरे' आ 'लैबोरेट्री' आदि में स्त्री के चरित्र उजागर हो रहल बा। उहाँ के रचना 'चोखेर बाली' आ 'लैबोरेट्री' के नायिका अपना देह के प्रति जागरूक आ केहु के अपना ओर सम्मोहित करेके क्षमता राखत बाड़ी सन। उहाँ के ब्रिटिश साम्राज्य के समय, जब देश के सामाजिक वातावरण रूढ़िवादी संस्कारन से घिरल रहे, जहवाँ औरतन के कवनों स्थान ना रहे आ नाही आपन सोच, आपन विचार, कल्पनाशीलता के प्रकट करे के आजादी रहे, ओह समय टैगोर अपना लेखनी में अभिव्यंजना (Romanticism) के स्थान दिहलें जेकरा के स्त्री के प्रेरणा, कल्पनाशीलता, वैचारिकता के स्रोत के रूप में अपना कहानियन में डललें। उहाँ के 'नोष्टो नीर' अउर 'घरे-बाईरे' के स्त्री पात्र, वास्तविक जीवन में सामाजिक बंधन में तर्क देवे के, देखे के आउर आपन इच्छा रखे के अधिकार राखत बाड़ी सन, जवना के पुरुष पात्र मानतो बाड़े, सम्मानो देत बाड़े। उहाँ के कहानियन के विषय तनी अलगे रहत रहे जइसे कि बाल-विवाह, दहेज प्रथा, गाँव अउर शहर के बीच के दूरी, कट्टरपंथी धर्मांध समाज, जातपात अउर स्त्री के जरावल।

टैगोर के कहानी समय, स्वाद, भाव अउर मानवीय संबंधन में सर्वव्यापक बा जवन फिल्मकार लोगन के सामने चुनौतियो के रूप में खड़ा हो जाला। इहाँ के, बेटी के बिदाई में बहुत ही मर्मस्पर्शी, दिल के छू देवे वाला कहानी जइसे 'पोस्टमास्टर', 'तीन कन्या' आदि पर महान फिल्मकार सत्यजीत रे बहुत ही सुंदर फिल्म बनवले बानी। 'चारूलता', 'घरे-बाईरे' बहुत अद्भुत फिल्म बाटे जवना में सत्यजीत रे स्त्री के मानसिकता रुचि, विश्व के जाने के ओकर इच्छा के बड़ा प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कइले बाड़न।

अन्त में, कविन्द्र रवीन्द्र के लेखन, साहित्य पर बोलल ओसहीं बा जइसे सूरज के दिया देखावल। उहाँ के समझे खातिर, उहाँ के साहित्य के समझे खातिर उहाँ के लिखल चीजन के जादा से जादा पढ़े के पड़ी, गावे के पड़ी अउर उहाँ के महसूस करे के पड़ी।

मूल लेखक : अमृता बेरा

भोजपुरी अनुवाद : अभय कुमार सिंह

आलेख

रंजू पटेल

रवीन्द्रनाथ टैगोर : एगो सर्जक

रवीन्द्रनाथ टैगोर (7 मई 1861-7 अगस्त 1941) के जदि एगो महामानव के रूप में मूल्यांकन कइल जाब त एह में कवनो अतिशयोक्ति ना होई। 7 मई, सन् 1861 में इनकर जनम धनी मनी आ जमींदार बंगाली परिवार में भइल रहे जवन धार्मिक आ सामाजिक रूप से बड़ा सबल रहे। रवीन्द्रनाथ के लड़िकाई बहुत एशो आराम से गुजरल। 14 बहिन भाई में सबसे छोट 'गुरुदेव' के लड़िकाई में पढ़ाई लिखाई स्कूल में ना बलुक घरे पर भइल रहे। कला, साहित्य आ दर्शन के प्रति उनकर जादा लगाव रहल आ पारिवारिक विरासत में कला आ संगीत गुरुदेव के मिलल रहे।

सच्चाई इहो बा कि रवीन्द्रनाथ के विश्वविद्यालय स्तर के शिक्षा-दीक्षा ना मिलल रहे। उ सतरह साल के उमिर में इंग्लैण्ड पढ़े खातिर गइल रहलन जहवाँ 'युनिवर्सिटी ऑफ लंदन' में नामांकन भइल बाकिर उहाँ उनकर मन ना लागल। घर वापिस अइला के बाद, रवीन्द्रनाथ टैगोर गाँवे-गाँवे घुमस। गाँव के खेत खरिहान में घुमस। गाँव गिराव के शान्त माहौल में, प्राकृतिक छटा में शुद्ध हवा-पानी में, गुरुदेव के आपन साहित्यिक मन-मिजाज आ लगाव के अउर बढ़ावा मिलल।

टैगोर, खाली एगो कविये ना रहस बलुक उह एगो उच्च लेखक, लमहर कलाकार, संगीतकार आ विलक्षण प्रतिभा के धनी महामानव रहस। उ एगो उपन्यासकार के संगे-संगे एगो प्रसिद्ध आ मानल-जानल बंगाली साहित्य के नाटककारो रहलन जिनकर नाटक में नाटकीयता के संगे-संगे काल्पनिकता के उद्दात (Elevation) रहे।

टैगोर के साहित्यिक यात्रा बहुत जल्दिये शुरु हो गइल रहे। गुरुदेव बचपने से गीत के रचना करे लगलन। उनकर गीतन के संग्रह 'मानसी' (ManasiChitra) 1890 में प्रकाशित भइल ओकरा

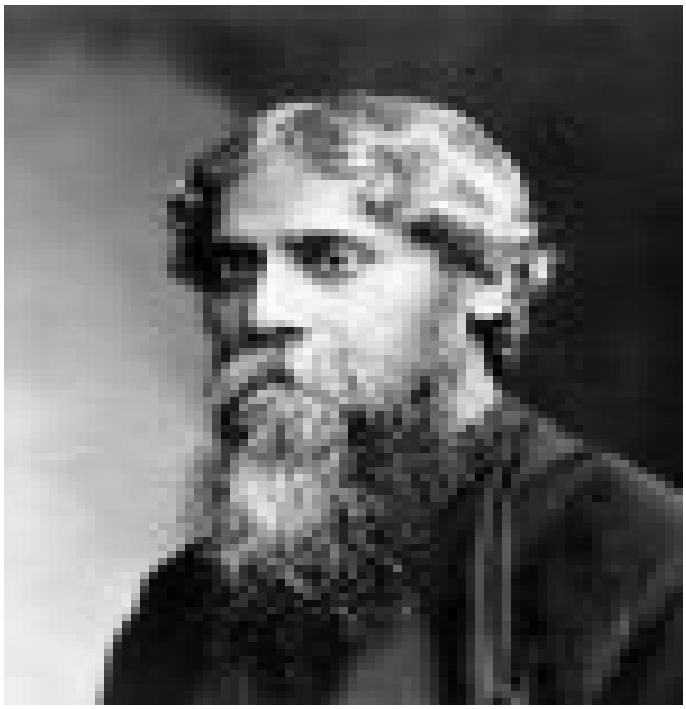

बाद में दू गो अउर संग्रह 'चित्रा' (Chitra) आ सोनार तारी (Sonar Tari) आइल। उनकर सबसे महत्वपूर्ण आ प्रसिद्ध गीत के संग्रह (Celebrated Collection of Lyrics) 'गीतांजलि' (Gitanjali) के प्रकाशन 1909 में भइल रहे जेकरा 1913 में साहित्य खातिर 'नोबेल प्राइज़' (Nobel Prize) मिलल।

उनकर नाटक आ उपन्यास में 'बीसरजान' (Bisarjan), राजा-ओ-रानी (Raja-O-Rani) मुक्तधारा (Muktdhara), रक्त करबी (Rakt Karabi), गोरा (Gora), शेशेर कविता (Sesher Kabita), नउकाडुबी (Naukadubi), चोखेर बाली

(Chokher Bali), घरे-बाहिरे (Ghare-Bahire), मुख्य बाड़े सन। गुरुदेव कई गो आलोचनात्मक लेख (Critical Essays) लिखलन, संगे-संगे लघु कथा के रचनो कइले।

टैगोर एगो शिक्षाविद् आ समाज सुधारको रहलन। विश्वविख्यात 'विश्वभारती' आ 'शांतिनिकेतन' के स्थापना 1901 में पं. बंगाल के बोलपुर में कइलें। एगो मजल संगीतकार के रूप में, गुरुदेव दू हजार भक्ति गीतन के रचना कइले आ आपना गीत आ संगीत के मिश्रण करके एगो नया संगीत 'रवीन्द्र संगीत' के गढ़ले बाड़न। एही से Rama Kundu लिखत बाड़ी कि -

"Rabindranath Tagore (1861-1941) is such a house hold name for an average Bengali house".

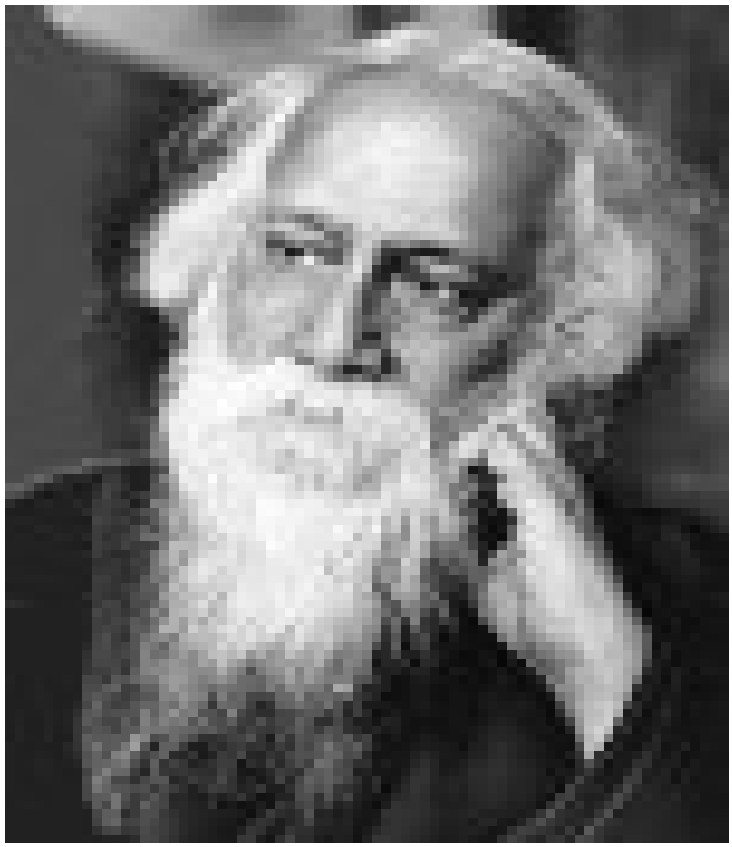

रवीन्द्रनाथ टैगोर महाविद्वान के साथे-साथे एगो महान मानववादी विचारधारा के समर्थक रहलन। चीन के पेकिंग विश्वविद्यालय में स्वागत भाषण में महाकवि कहलन, "भाइयों! मैं एक सामान्य कवि हूँ पर मैं एक मनुष्य हूँ और उसी हैसियत से तुम्हारे सामने खड़ा हूँ। मेरे हृदय में तुम सबके लिये ऊँचा स्थान है। तुमने भी मुझे बड़े प्रेम के साथ अपनाया है। इस प्रकार का प्रेम बराबर वालों में ही हो सकता है। मैं भी तुमसे बड़ा नहीं नहीं बराबर का ही हूँ।"

गुरुदेव जिनगी भर 'मानवतावाद' के सम्पोषक रहलन। विश्व शांति आ बैश्विक भाईचारा के दिसाई विश्व कवि हरमेसा सजग रहत रहले। गुरुदेव गुलामी, दासता आ साम्राज्यवाद के विरोध कइले। उपनिवेशवाद के विरोध कइलन। दुनिया के तमाम दुखी भा सतावल लोगन के पक्ष में गुरुदेव खड़ा रहत रहले। जलियावाला बाग नरसंहार के विरुद्ध में गुरुदेव Kinght hood के उपाधि ब्रिटिश सरकार के वापस कर देले रहस। राष्ट्रीयता के बारे में गुरुदेव के मानल रहे "It is better to serve the country through small, ordinary acts rather than by expressing grandiose intent"

मानवता के बारे में विश्वकवि कहलें -

If humanity is alive within us, we can understand concepts of humanity that are ancient and modern, eastern or western".

कविन्द्र रवीन्द्रनाथ के देहांत 7 अगस्त के भइल। जब गुरुदेव 80 साल के एगो लमहर जिनगी जी के अनुभव हमनी खातिर वैश्विक भाईचारा आ मानवतावाद के पाठ पढ़े ला छोड़ गइलन। आजो इ विद्धान के बराबर के प्रतिभा भारत में ना जनम ले सकल।

संतोष कुमार, संपादक 'भोजपरी जिंदगी'

अनुवाद

प्रो० शत्रुघ्न कुमार

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ के रचना 'चंडालिका' अउर अनुवाद उ पल

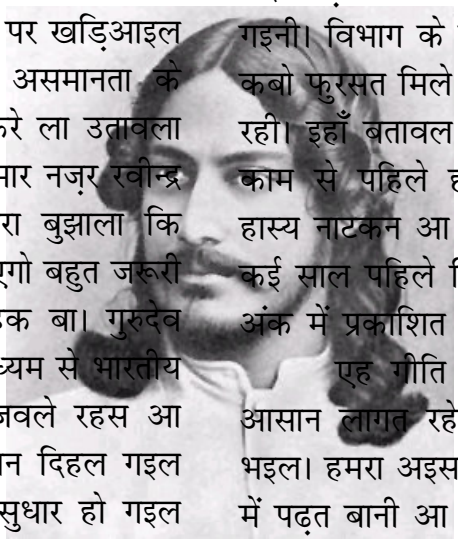

भारतीय समाज के सड़ल गड़ल 'वर्ण व्यवस्था' बदले खातिर समाज के एगो लमहर वर्ग आंदोलित हो रहल बा। साँच कहल जाव तऽ भारतीय समाज एगो संक्राति काल के बेला से गुजर रहल बा। उ चाहे धार्मिक क्षेत्र होखे, सामाजिक क्षेत्र होखे या राजनीति, सभ जगह एह परिवर्तन (बदलाव) के लहर लउक रहल बा। समाज के दबल कुचलल, हाशिया पर खड़िआइल तबका उठ खड़ा भइल बा आ असमानता के महत्व के हरमेसा खातिर खतम करे ला उतावला बा। एही हलचल की बीचे जब हमार नज़र रवीन्द्र साहित्य की ओर जाला तऽ हमरा बुझाला कि विश्वकवि इ रचना 'चण्डालिका' एगो बहुत जरूरी आ बरियार मानवता के संदेशवाहक बा। गुरुदेव केतना पहिले एह 'नाटिका' के माध्यम से भारतीय समाज में परिवर्तन के बिगुल बजवले रहस आ ओही समय जदि ओकरा पर धेयान दिहल गइल रहित तऽ देश के दशा में बहुत सुधार हो गइल रहित।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर साँचो में विश्वकवि तथा मानवता के पोषक रहलन। एह नाटिका के रचना कर के कवि भारतीय समाज के सोझा एगो सवाल रखलन आ उ कोशिशो कइलन कि एह नाटिका कऽ अध्ययन करके आ मंचन देख के भारतीय जनमानस आत्मिक मंथन करस आ सोचे पर मजबूर होखस कि का इ असमानता ठीक बा? का ऊँच नीच के भावना सही बा? कवि ऊपरी संघर्ष से जादे मानसिक संघर्ष के महत्व देत रहलन एही महत्वपूर्ण तथ्यन के धेयान में राख के हमहूँ एह गीति नाट्य के अनुवाद शुरु कइनी। हम चाहत रहनी कि इ रचना में दिहल संदेश के विस्तार होखे आ देश के दूर-दूर तक फइले, लोग एकरा जाने समझे आ एही बहाने, हम समतामूलक समाज (बराबरी) के स्थापना करेके आंदोलन में शामिल होखे के चाहत रहनी।

हम नवम्बर 1991 के साहित्य अकादमी गइनी आ रवीन्द्र रचनावली में से एह गीति के नाट्य रचना के फोटोकॉपी करा लिहनी आ आपन मैदानगढ़ी के आफिस के कमरा में इ काम में जुट गइनी। विभाग के काम के निपटइला के बाद जब कबो फुरसत मिले तऽ हम एही काम में लाग जात रही। इहाँ बतावल जरूरी बा कि एह अनुवाद के काम से पहिले हमार कइल गुरुदेव के कुछेक हास्य नाटकन आ भानु सिंह पत्रावली के अनुवाद कई साल पहिले विश्व भारती पत्रिका के कई गो अंक में प्रकाशित हो चुकल रहे।

एह गीति नाट्य के अनुवाद हमरा बहुत आसान लागत रहे बाकिर कइ जगहे कठिनाइयो भइल। हमरा अइसन बुझाइल कि हम एकरा हिन्दी में पढ़त बानी आ जल्दी-जल्दी लिखत रहनी। हँ, जब नाटिका के नायिका 'प्रकृति' आ ओकर माँ में बतकही पढ़ी तऽ मन भारी हो जाये। भाव से हिया भर जाये। विश्वकवि के मानवतावादी दृष्टिकोण से मन आनंदित हो जात रहे। दूनू पात्र के वार्तालाप (बतकही) के माध्यम से कवि भारतीय समाज के सोझा तार्किक तरीका से साफ कर देले बाड़न कि आपन समाज के बेवस्था गलत बा। एगो आदर्श समाज के बारे में कवि सोचत बाड़े आ चाहत बाड़े कि भारतीय समाज अमानवीयता से हटके मानवीय बन जाए। कवि बुद्ध के विचार के बहुत युक्तिपूर्ण तरीका से रखले बाड़न। इंसान-इंसान में भेद कइल पाप हऽ आ जे अपने के छोट कहेला उहो गलती करत बा काहे कि जदि इ प्राकृतिक भेद होइत तऽ आकाश के बादलो में भेद होखित आ उहो

अलगे-अलगे तरीका से उ लोगन पर बरसतन। आ सूरज के रोशनीयो ओही अनुपात में दूनू के हासिल होखित। बाकिर अइसन नइखे। इ असमानता इंसाने के मन के उपज हऽ आ एकरा प्रकृति से जोड़ के मानल आ ओकरा पर अमल कइल मनुष्य के सबसे बड़ भूल हऽ। बुद्ध आपन संदेश में कहले कि जवन धरम इंसान-इंसान में भेद करे उ धरम होई ना सकेला। एही सब बात के कवि आपन पात्र के माध्यम ये समझवले बाड़न।

इ गीतिनाट्य में दू गो पात्र बा। 'प्रकृति' आ ओकर 'महतारी'। कवि बड़ा सहज तरीका से में परिवारिक दैनिक काम के माहौल से नाटिका के शुरुआत कइले बाड़न। प्रकृति हरेक दिन के तरह कुँआ पर पानी भरे गइल रहली। उहाँ गाय के बछड़ा के उ नहवावत रहली। ओही समय महात्मा बुद्ध के चेला आनंद ओनही से जात रहले। सड़ल गरमी पड़त रहे। आनंद के जोर से पियास लागल। देखलन इनार पर एगो लड़की पानी भरत रहली आनंद उहाँ गइलन आ पानी पिआवे के निहोरा कइलन। 'प्रकृति' के बड़ा आश्चर्य भइल। उ तऽ चण्डाल कन्या रहली एही से कोई दोसर जात के आदमी कइसे उनकर हाथ के पानी पी? प्रकृति के हालत 'का करी भा ना करी' वाला हो गइल रहे। उ जानत रहली कि उनकर सामाजिक स्थिति का बा। उनकरा बतावल गइल बा कि अछूत होखला के चलते उनकर छूअल पानी अशुद्ध हो जाई आ छुआइल पानी केहू के कइसे पियावल जा सकेला? उ अपना मन के शंका आ संशय आनन्द के कहत बाड़ी कि उ एगो अछूत कन्या हई एही से उनकरा के पानी ना पीया सकेली। एह बात पर आनंद जवाब दिहलन "जे तरह हम इंसान बानी ओही लेखा तूँ हो इंसान हऊ, सभ पानी तीरथ के पानी होखेला काहे कि पानी से पिआसल के पिआस ओराला आ तृप्ति मिलेला।"

आनंद 'प्रकृति' के कइ तरीका से समझवलन कि सभ इंसान एक समान होला। ओकरा में कवनो भेद ना हऽ। कएगो तर्क देके आनंद 'प्रकृति' के भीतरी बइठल छोट होखे के भाव खतम कइलन। नाटिका में 'प्रकृति' आ ओकर माई के बीच भइल बतकही से ढेर बात साफ हो जाता।

आनन्द के बात सुनके प्रकृति में एगो लमहर बदलाव आ गइल। ओकरा भितरी एगो नया चेतना के विकास भइल। इ एगो सामाजिक चेतना कऽ रूप हऽ। भारतीय समाज में छुआछूत के जवन अमानवीय नियम लागू बा ओकर महल ढाहे के प्रयास रवीन्द्रनाथ टैगोर आपन इ नाटिका में कइले बाड़े। ब्राह्मणवादी बेवस्था एगो वर्ग विशेष के भीतर एगो अइसन ग्रन्थि बना देले बा कि ओकरा छुअला पर दोसर वर्ग के लोग अपवित्र हो जाई। कवनो सभ्य समाज खातिर इ सामाजिक नियम केतना शर्मनाक बा। ब्राह्मणवादी बेवस्था के ठेकेदार पूरा षडयन्त्र के तहत इ नियम के एतना मजबूत बना देले कि 'वर्ग विशेष' एकरा माने खातिर मजबूर हो गइल। एही अमानवीय नियम के तोड़े खातिर कवि 'आनन्द' के माध्यम से 'प्रकृति' में आत्मसम्मान के भरे के भाव जगइलें।

'प्रकृति' आनंद के उपदेश से प्रभावित भइल। उनकरा तथाकथित ब्राह्मणवादी बेवस्था के षडयन्त्र के ज्ञान हो गइल। उनकर आत्मसम्मान जाग गइल। प्रकृति आनंद के पानी पिआ देली आ पानी पिअला के बाद आनंद के पिआस बुझा गइल। 'प्रकृति' के इ साफ पता चल गइल कि उ अछूत नइखी। जदि साँचो उ अछूत रहती तऽ जे घड़ी उ आनंद के पानी पिलावत रहली ओही समय कवनो अनहोनी जो जाइत, आसमान टूट के गिर जाइत आ औरी कुछु हो जाइत बाकिर अइसन कुछु ना भइल। प्रकृति सामाजिक दाँवपेंच आ छल प्रपंच से बाहर निकल के आ गइली।

प्रकृति खातिर उनकर जिनगी के इ अनहोनी घटना रहे एही से उ कुछु देर खातिर सोंचे लगली।

इहाँ तक कि उ आपन रोज-रोज के कामो भूला गइली। देरी भइला के चलते 'प्रकृति' के माई उनकरा बोलवली। प्रकृति हुँकारी मारत कहली कि उ इनार लगे बाड़ी। माई के बड़ा अचरज भइल कि निद्दात दुपहरी में उ इनार के भीरी का करत बाड़ी? आ हेतना देर से ओहिजा काहे खड़ा बाड़ी। माई कहली 'का हो तूँ पारवती जी खानी तपेस्या करत बाड़ु का?' प्रकृति जवाब दिहली -

प्रकृतिः हाँ, माई, तपेस्या करत बानी।

माईः इ त बड़ा अचरज के बात बा, केकरा खातिर?

प्रकृतिः जे हमरा के बोलावले बा, ओकरे ला।

माईः के बोलवले बा?

प्रकृतिः जे हमरा हिरदया के वीणा के तार 'पानी माँग के' झनझना कर देले बा।

इहा प्रकृति के कहनाम जे उनकरा हिरदय के वीणा के तार 'पानी माँग के' झंकारित कइलख। एही बात से साफ हो रहल बा कि उनकरा भीतरी सामाजिक चेतना के संचार भइल। माई फेरू सवाल कइली -

माईः रे करमजली! तोहरा से केहू पानी मँगलस? इ का हम सुनत बानी? मालूम बा नू कि हमनी के जात का ह?

प्रकृतिः अइसहीं उहो कहलख! उहो हमनिये के जात हऽ?

माईः आपन जात तऽ ना नू छूपवलिस? का बतवली कि तू चण्डालिन हई का?

एह सवाल पर प्रकृति जवन बतवली उहे बात के कवि समाज के संदेश देवे के चहलन। एक ओरी हिन्दू सामाजिक बेवस्था के तहत प्रकृति आ ओकर माई जवन वर्ग के बाड़ी सन उनकर मानसिकता के पता चलत अउर दोसरी तरफ कवि टैगोर के मानवतावादी विचारधारा के बोध होताऽ। प्रकृति आपन माई के बतवली कि आपन जात ना छुपवली हऽ आ साफ-साफ बतवली कि उ अछूत कन्या हई। बाकिर आनंद ओकरा माने से इनकार कर देलन।

प्रकृतिः बतवले रहीं, बाकिर उ कहलन कि इ झूठ हऽ। उ कहलन कि सावन के महीना में आसमान में आइल करिया बादर के चाण्डाल के नाम दिहला से का होई? ओकरा जात तऽ ना बदल जाई। ओकर पानी बरसावे के गुण तऽ खतम ना हो जाई। आनंद इहो कहलन कि रउआ आपन निन्दा ना करे के चाहीं आपन निन्दा आत्महत्या लेखा लमहर पाप हऽ।

ऊपर दिहल बतकही के हिस्सा से एगो निमन उदाहरण मिलेला। उनकर कहल कि जे तरह करिया बादर के नाम बदल दिहला से बादल के प्रकृति ना बदलेला। करिया बादर पानी से भरल रहेला आ पानी के बारिस होबे करी। ठीक ओइसहीं, मानव मानव में भेद ना होखे। भेद होबो करी तऽ मरदाना आ जनाना में। मानव जाति के कवनो अउर जाति के नाम दिहला से ओकरा प्राकृतिक गुण में बदलाव ना हो सकेला। आगे, कवि संदेश दे रहल बाड़न कि आत्मनिन्दा महापाप हऽ कहे के मतलब अपना के हीन समझल गलत हऽ। सभ अदमी एक समान बा।

'प्रकृति' में एगो नया चेतना के विकास भइल आ उनकरा में बदलाव आ गइल बाकिर उनकर माई के सामाजिक बेवस्था से दबाइल बाड़ी आ इ बेवस्था के मान लेले बाड़ी। एही से उनकरा में चेतना के बोध नइखे हो पावत। उ सोचत बाड़ी साइत उनकर बेटी कवनो गलती क देली एही से प्रयिश्चित करे के पड़ी। उनकरा संदेह होखे लागल कि आनंद कवनो मन्तर मार देले बाड़न। 'नाटिका' में प्रकृति आ उनकर 'माई' के बीच पुरान सामाजिक बेवस्था देखावल गइल बा। बाकिर प्रकृति के बात से नया सामाजिक चेतना के आभास हो रहल बा। इहाँ दूनू पात्र के बीच भइल बतकही दिहल जात बा जेसे साफ पता चली कि इ रचना मानवता के सन्देशवाहक हऽ।

माईः रे तोहरा मुँह से हम का सुनत बानी? कही तोहरा पिछला जनम के कवनो कथा कहानी त नइखे इयाद आवत?

माईः रे बुड़बक लड़की, अचके में तोहरा हिरदय में हेतवक लमहर आकांक्षा कइसे जाग गइल। पगली! तोहरा प्रायश्चित करे के पड़ी। मानत नइखी तू कवन कुल में पइदा भइल बाड़ीस?

माईः इयाद रख प्रकृति, उनकर (आनंद) के बात खाली सुने खातिर बा। यथार्थ में नइखे। जवन दोष के कारण जवन कुल में जनमल बाड़िस ओकर बेड़ी के तुड़ल बड़ा कठिन बा। ओकरा ला कवनो लोहा के छेनी नइखे बनल। तू अछूत हऊ बस, अछूत। इहे माहौल में रहअ। जहवाँ बाड़ू उहे रहअ ओकरा से बाहर आइल पाप कहल जाई।

माईः झूठो के गोस्सात काई बाड़े रे बुचुआ? तोर जनम अछूत कुल में भइल बा। विधाता के लिखल के मिटा सकेला?

माईः तू धरम ना मानेलू का?
इ कल्ही बतकही में अन्धविश्वास, सामाजिक बेवस्था आ दासता के बेड़ी के झलक मिलेला। इ कुल्ही सभ ब्राह्मणवादी बेवस्था के परिनाम हऽ।

अब हमनी प्रकृति के कथन के देखीं –
प्रकृतिः ऊ हमरा हाथ से खाली एके अंजुरी पानी लिहले, बाकिर ऊ अंजुरी भर पानी हमरा खातिर अगाथ आऊर अथाह बन गइल। ऊ पानी हमरा खातिर सात समुन्दर के जइसन बन गइल जवना में हमार मन के नदी के दूनू किनारा डूब गइल, हमार जन्म, वोह जनम में घुल गइल।

प्रकृतिः माई रे तोहरा हम फेर कहत बानी कि बेकार में आपन हीनाई मत कर। इ पाप हऽ पाप! घर-घर में राजा महराजा के केतना दासी सन के जनम होताऽ हम दासी ना हई। ब्राह्मण के घर में ना जानी केतना चाण्डाल के जनम होता। हम चाण्डाल ना हई।

प्रकृतिः कइसे कहीं। हम उनहीं के मानेली जे हमरा के मानेला। जवन धरम इंसान के अपमान करे उ मिथ्या हऽ, झूठ हऽ अइसन धरम मनुष्य के आन्हर बना देला। गूँगा बना देला। सभ केहू मिल के हमनी के झूठ मिथ्या धरम माने के मजबूर कइले बाड़ें बाकिर ओह दिन से इ धरम मानल हमरा खातिर मना बा।

प्रकृति के बात बेवस्था के खिलाफत हऽ उ कवनो तरहके सामाजिक बन्धन के नइखी मानत। पाखण्ड धर्म के उ साफ नकार देत बाड़ी। मानव-मानव एक हऽ। बराबर हऽ। इ कुलही उदाहरण से साबित हो रहल बा। ब्राह्मणवादी बेवस्था के तहत जवन वर्ग में बाँटल गइल सभ में अलग-अलग प्रकार के प्रकृति वाला मनुष्य के जनम होला। अइसन कबो नइखे भइल कि सभ केहू ब्राह्मण वर्ग में निमने पैदा होलन भा शूद्र वर्ग में सभ केहू दुराचारी होले। इ तऽ इंसान के बनावल बेवस्था हऽ जवन अमानवीय आ आधारहीन बा।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर मानवतावादी विचारधारा के पोषक रहलें। उ इ नाटिका के माध्यम से मानवतावादी बेवस्था के झूठ साबित कइले बाड़न। ■

जय भोजपुरी

अनुवाद

संतोष कुमार

रवीन्द्रनाथ, गाँधी जी आ सर एंड्रूज

महात्मा गाँधी रवीन्द्रनाथ टैगोर से बहुत प्रेम करत रहले। इ दूनू महामानव के एक दोसरा के नजदीक लाये वाला महामानव रहस 'सर एंड्रूज़'। सर एंड्रूज़ साहेब एगो अंग्रेज रहले जे विलायत के इसाई मिशनरी के नौकरी करे खातिर दिल्ली के एगो 'क्रिश्चियन महाविद्यालयन' में पढ़ावे खातिर आइल रहलें। बाकिर अंग्रेज के अमानवीय बर्ताव, अहंकार, शोषण, आ भारत के लोगन के प्रति दुर्व्यवहार देख के उनकर हिरदय बड़ा दुखित भइल आ उ भारत के आजादी खातिर काम करे लगलन। ईसाई कॉलेज के नौकरी छोड़ के उ महाकवि रवीन्द्रनाथ के शांति निकेतन में चल गइलन आ उहाँ भारत के विद्यार्थी लोगन के शिक्षा देवे लगलन। संगे-संगे भारत के आजादी में आपन सहयोग देवे लगलें। आगे चल के उ भारत के राजनैतिक आंदोलन के हिस्सा बनले आ बाद में गांधी के संगे सत्याग्रह आंदोलन के सहायता करे खातिर दक्खिन अफ्रीका गइल रहले। इ काम में महाकवि टैगोर के पूरा-पूरा समर्थन रहे एड्रूज़ जी के साथे। रास्ता में कईगो अंग्रेज एंड्रूज़ जी के खूब धमकवले सन, डेरववले सन कि दक्खिन अफ्रीका में इ जइसे चंहुपियन उहाँ के शासक 'जनरल स्मट' जहाज से उतरते गिरफ्तार कर लिहन। बाकिर मि. एंड्रूज़ इ कुल्ही बात के चिन्ता ना करके दक्खिन अफ्रीका में सत्याग्रह संग्राम में गाँधी जी के लमहर सहायता कइलन आ उहाँ के दूनू पक्ष में सुलह करा के जादातर माँग के पूरा करावे में मदद कइलन। बाद में एंड्रूज़ गाँधीजी के बाल-बच्चन के शांति निकेतन ले अइलन। गाँधी जी इहवें रवीन्द्रनाथ टैगोर के 'गुरुदेव' कहके

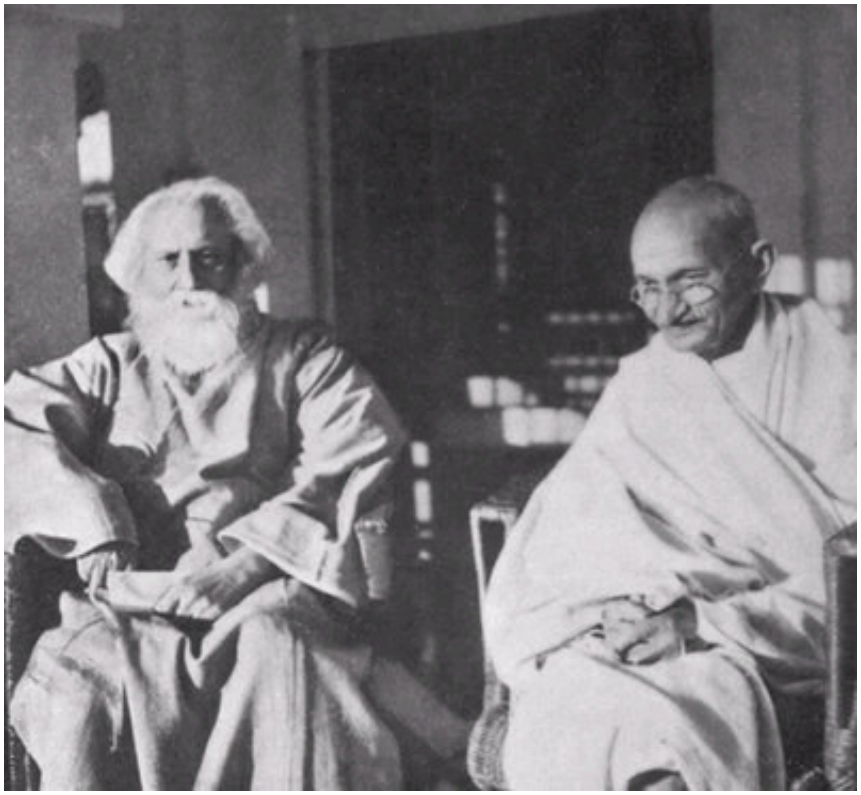

रवीन्द्र नाथ टैगोर और महात्मा गाँधी

संबोधित कइले। देखल जाए तऽ विद्या आ आयु के दिसाई विश्वकवि खातिर इ पदवी योग्य रहे। रवीन्द्रनाथ के गाँधी जी से बड़ा प्रेम रहे। जब यरवदा जेल में गाँधी जी सरकार नीति के खिलाफ आमरण अनशन कइले रहीं तऽ ओह समय महाकवि उनकर तबीयत के लेके बड़ा फिकिर में रहलन एही से गाँधी जी के हालचाल जाने खातिर गुरुदेव पूना गइलन आ गाँधी जी से भेंट कइलन। ठीक ओकरा बाद विलायती सरकार के 'तार' करके गुरुदेव गाँधी बाबा के छोड़े के कहलन। एकर नतीजा भइल कि दूनू पक्षन में समझौता हो गइल आ बापू अनशन समाप्त कर देले। ओह समय गाँधी जी के तबीयत बहुत खराब हो गइल रहे आ गुरुदेव बराबरे उनका बिछौना के लगे बइठ के देखभाल करत रहले। गाँधी जी के रवीन्द्र नाथ के संगीत बड़ा नीक लागे। अनशन छोड़ला के बाद गाँधी महाकवि के मुँह से एक सुन्दर गीत सुनलन।

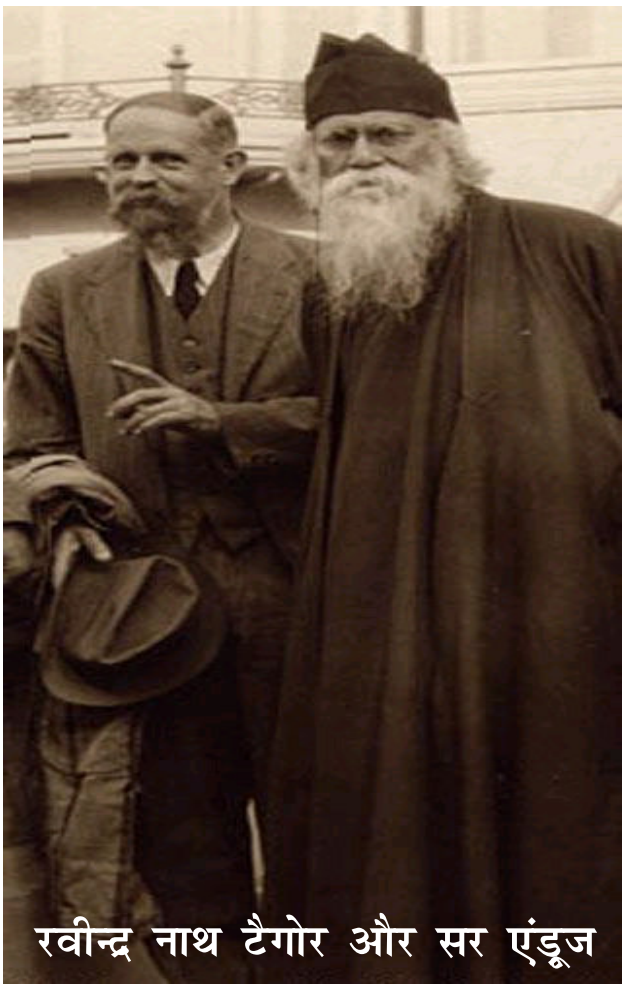

रवीन्द्र नाथ टैगोर और सर एंड्रूज

बाकिर साँच एहो बा कि गाँधी जी आ गुरुदेव में व्यक्तिगत रूप से प्रेम रहे बाकिर राजनीतिक आंदोलन के संबंध में दूनू लोगन में मतभेदो रहे। जब गाँधी जी आपन आंदोलन के आधार अहिंसा के बनवलन तऽ उ गुरुदेव के पसंद पड़ल बाकिर जब उ असहयोग के घोषणा कइले, लइकन के स्कूल कॉलेज छोड़े के कहलन, विलायती कपड़ा के होली जलावे के काजकरम शुरु कइलन तऽ महाकवि एकर जबरदस्त विरोध कइलन।

महाकवि के कहनाम रहे कि एह तरह लइकन के भड़कावला से उ अवारा बन जइहें सन। कपड़ा के बहिष्कार आ चरख के विषय में गुरुदेव कहलन 'गाँधी जी मशीनों के खिलाफ हैं, तो मेरी भी वही सम्मति है। पर हमारी बुराइयों की जड़ तो भीतरी कमजोरी है। हम चलने, बोलने और हँसने में भी डरते हैं। अंग्रेज सरकार के हुक्म पर उठते-बैठते हैं। हमारी अपनी ताकत कुछ भी नहीं है। हम कायर हैं, सरकार से हर बात में डरते रहते हैं। इस जबर्दस्ती के मैं विरुद्ध हूँ। पर गाँधीजी भी लोगों पर ऐसी ही जबर्दस्ती कर रहे हैं। वह देश को स्वतंत्र करना चाहते हैं, पर लोगों के स्वतंत्र विचारों पर वह हुक्म चला रहे हैं। इस तरह अगर हमको स्वतंत्रता मिल भी जाएगी, तो भी हम सच्चे अर्थों में स्वतंत्र न हो सकेंगे।'

साभार: साहित्यिक ऋषि-रवीन्द्र-
आचार्य पं. श्रीराम शर्मा
(भोजपुरी अनुवाद: संतोष कुमार,
संपादक, भोजपुरी जिंदगी)

आलेख

संतोष कुमार

रवीन्द्रनाथ टैगोर : भारतीय साहित्य पुर्नजागरण के पुरोधा

रवीन्द्रनाथ टैगोर (1861-1941) भारतीय साहित्य के पुर्नजागरण के सबसे बेजोड़ कलात्मक उपज रहलन। विक्टोरिया काल (Victorian Period) के बीचे टैगोर के जनम ओह समय भइल जब देश में ब्रिटिश हुकूमत रहे। टैगोर के मातृभूमि 'भारत माई' ब्रिटिश साम्रज्यवाद के गुलामी झेलत रहली। इ रचनात्मक साहित्यिकार देश में एगो साहित्यिक पुर्नजागरण के सूत्रपात कइलन। टैगोर के एही से 'भारतीय साहित्यिक पुर्नजागरण के पुरोधा' कहल जाला। जइसे डब्लू॰ बी॰ ईट्स (W.B. Yeats) के आयरिश साहित्यिक पुर्नजागरण (Irish Literay Renaissance) के पुरोधा कहल जाला।

श्री अरविन्दो के शब्द में "भारतीय साहित्यिक पुर्नजागरण आ आयरिश साहित्यिक पुर्नजागरण में समानता ए मायना में रहे कि दूनू पुर्नजागरण राष्ट्र के प्रति देशवासियन के आत्मा के झकझोरे के काम कइलख। इ लोग आपन लेखनी आ अभिव्यक्ति से लोगन में आध्यात्मिक जागरण पैदा कइले जेसे देश के नवनिर्माण आ विकास हो सके।"

टैगोर काव्यात्मक नाटक (Poetic Drama) के पुर्नजागरणो कइले जेकरा लोग बहुत पहिले भुला गइल रहे। अंग्रेजी के महान नाटककार शेक्सपियर (Shakespeare) के समय में प्रचलित इ विधा के लोग भुला गइल रहे। टैगोर के काव्यात्मक नाटक जादातर भारतीय पौरिणक कथा (Indian Mythology) पर आधारित बा। टैगोर के कृतियन में भारत के आत्मा साफ-साफ देखाई देला। टैगोर के कविता भारतीय लोकगीतन के छवि हऽ। उनकरा में समकालीन चिंतन करे के जबरदस्त क्षमता रहे आ उ चिंतन के एकीकरण उनकर कृति आ साहित्यिक विधा में हमनी देख सकीले।

टैगोर काव्यात्मक नाटक (Poetic Drama) के पुर्नजागरण कइले जेकरा लोग भूला गइल रहे। अंग्रेजी के महान नाटककार शेक्सपियर (Shakespeare) के समय में प्रचलित इ विध ा के लोग लगभग भूला गइल रहे। टैगोर के काव्यात्मक नाटक जादातर भारतीय (Indian Mythology) पौरिणक कथा पर आधारित रहे। टैगोर के कृतियन में भारत के आत्मा साफ देखाई देला। टैगोर के कविता भारतीय लोकगीतन के छवि हऽ। टैगोर में समकालीन चिंतन करे के जबदस्त क्षमता रहे आ उ चिंतन के एकीकरण उनकर कृति आ साहित्यिक विधन में हमनी देख सकीले।

1901 ई॰ में टैगोर शांति-निकेतन विद्यालय के बोलपुर (प॰ बंगाल) में स्थापना कइलन। प्रकृति के गोद में बनल इ स्कूल 1921 में आगे चलके विश्वप्रसिद्ध विश्वभारती विश्वविद्यालय में बदल गइल। टैगोर 1922 में श्रीनिकेतन के स्थापना कइलन जवन 'ग्रामीण पुर्ननिर्माण संस्था' रहे। टैगोर के वैश्विक प्रेम, मानवतावाद के प्रति लगाव आ उनकर समझ उनकर स्थापित कइल संस्थन में साफ-साफ लउकेला।

टैगोर एगो नया शब्द 'विश्वभारती' बनवलन जेमे शांति निकेतन आ श्रीनिकेतन दूनू संस्थन के समाहित कइल गइल रहे। संस्कृत के शब्द 'विश्वभवतयेकानिदम्' अर्थात् समूचा संसार एगो घर (Where the world makes its home in a single nest) के लेखा होला। 1921 में

विश्वभारती के उद्घाटन के बाद, एकर दुआर सभ लोगन खातिर खोल दिहल गइल ताकि विश्व के हर कोना के बौद्धिक लोगन के जमवाड़ा ओहींजा हो सके ताकि साहित्य आ समाज के विकास के गति मिले। दूसर शब्दन में हमनी इ जानी कि 'विश्वभारती' सस्था खाली एगो स्कूलो ना बन के ना रहे बलुक एगो तीर्थस्थान बन जाए जहँवा आ के लोगन के मानसिक शांति आ आराम मिले। घर के संकीर्ण चहारदिवारी के बाहर आ के लोग विश्व के दर्शन करस। 'केतकी कुसरी डायसन' (Ketki Kusari Dyson) के अनुसार "टैगोर के महानता आ उनकर महान अवदान के भारतीय जीवनशैली आ भारतीय लोगन में देखल आ समझल जा सकेला।"

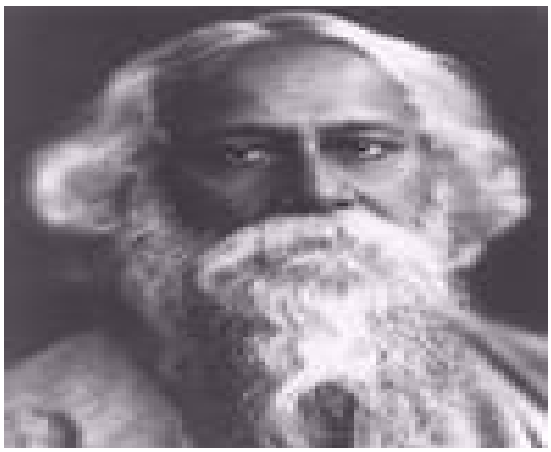

रवीन्द्रनाथ टैगोर (1861-1941) एगो विलक्षण प्रतिभा के ध नी मानव रहलन जिनकर लमहर जिनिगी में साहित्यिक विकास, अवदान, कार्यकलाप आ रचनात्मकता कूट-कूट के भरल रहे। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध आ 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध तक टैगोर आपन जीवन वैश्विक मानववाद खातिर समर्पित कइलन। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध आपन लेखनी से लोगन में पहचान स्थापित करे के भाव और लोगन के आसरा पूरा करे के काम कइलन।

टैगोर के जीवन ब्रिटिश काल के देखत-परखत पोढ़ भइल। एही समय देश में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विस्तार होखत रहे। भौगोलिक दीवार के लांघत ब्रिटिश साम्राज्यवाद के डैना अउर फैलइल जात रहे। भारत में राजनीतिक आ आर्थिक उठा-पटक से राष्ट्रीय आंदोलन के सूत्रपात भइल जबकि प्राकृतिक विपदो देश के कम क्षति ना पहुँचइलस। एइसन हालत में टैगोर के भूमिका बड़ा महत्वपूर्ण हो गइल रहे।

1857 के क्रांति (सिपाही विद्रोह) के आंदोलनकारियन के देखला से लागत रहे कि इ लोग अब चुप बइठे वाला नइखन। 1857 के क्रांति के ठीक बाद राष्ट्रीय आंदोलन के शुरुआत देश में 1880 में शुरू भइल। टैगोर इ आंदोलन के पूरा समर्थन देत शमिल भइलन। 1857 के राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन के बाद के बीसवीं शताब्दी में क्रांतिकारी आ आक्रमक आंदोलन शुरू भइल जेमे गरम दल के जोर ज्यादा रहे। 1905 में, अंग्रेज 'बंगभंग' के चाल चलल जवना में 'धरम' के आधार बनावल गइल। हिन्दू आ मुसलमान के अलग अलग राखे के नीति रहे। अंग्रेजन के एह नीति के विरोध में 'स्वदेशी आंदोलन' के सूत्रपात भइल। एह आंदोलन से टैगोर जुडलें आ हिन्दू मुसलमान के एकता बनावे में खूब प्रयासो कइलन। आपन राष्ट्रीय कविता आ गीतन से भारतीयता के प्रचार प्रसार करे में मदद कइलें बाकिर टैगोर स्वदेशी के नाम पर गुण्डागर्दी के विरोध कइलन जवन उनकर उपन्यास घरे-बाहिरे (The Home & The World) में देखे के मिलेला। देशभक्ति के नाम पर संकीर्ण मानसिकता वालन से दूर रहे के संदेश देलन। 1908 में टैगोर कहले रहलन -

"Patroitism cannot be our final spiritual shelter; my (Tagore) refuge is humanity. I will not buy glass for the price of diamonds, and I will never allow patriotism to triumph over humanity as long as I live. I took a few steps down the road and stopped: for when I cannot retain my faith in universal man standing over and above my country, when patriotic prejudice overshadow my God, I feel inwardly starved."

"देशभक्ति हमार आखिरी आध्यात्मिक शरणागृह

ना हो सकेला। हमनी के शरणस्थली हऽ 'मानवता'। हम राष्ट्रभक्ति के नाम पर हीरा के भाव में सीसा ना खरीदब। हम मानवता पर देशभक्ति के जीत ना होखे देब जबले हमरा शरीर में प्राण बा चाहे हम ओह रास्ता पर हमरा चलल छोड़े के पड़े। हमरा कवनो एइसन आदमी में विश्वास नइखे जे हमरा देश के ऊपर हावी होखे के चाहत होखे। जब देशभक्ति के पूर्वाग्रह हमार मानवतारूपी भगवान के तोपे के कोशिश करी तक हम समझ लेब कि हम भीतरी से भूखल बानी।"

टैगोर के भारतभूमि खातिर बड़ा मान सम्मान आ आदर रहे। एह देश के अलग अलग भाषा, संस्कार आ संस्कृति उनका खूब भावे। भारत के अलग-अलग रंगरूप, वेषभूषा, लोगन के नाक-नक्स, रूप-रंग, सब उनकर दिमाग में रहे आ इ कुलही चीज उनका के खूब संतुष्टि देवे। उनकर कहनाम रहे कि भारतीय लोग पच्छिमी देश के खातिर फिट नइखे लोग। पच्छिमी में एकेगो रंग बा आ ओकनी के 'रंगभेद' के करे के खूब जानेलन सन।

स्वदेशी आंदोलन के समय टैगोर ढेर देशभक्ति गीत लिखलन। उहे आपन देश खातिर राष्ट्रगान (National Anthem) लिखलन। मज़ेदार बात इ कि टैगोर भारत के अलावे 'बांगलादेश' के राष्ट्रगान भी लिखले बाड़न। भारत के 'जन गन मन' आ बांगलादेश के 'आमार सोनार बांग्ला' हऽ। जालियाँवाला बाग कांड (1919) के बाद टैगोर 'नाइटहुड' (Knighthood) के उपाधि ब्रिटिश सरकार के वापस कर देहलन जवन उनकरा के 1915 में दिहल गइल रहे। उ वायसराय के इ नरसंहार के खिलाफ आपन तकलीफ आ गुस्सा के देखावत एगो चिट्ठी लिखलन।

एक गीत के बाद दूसर गीत फेर तीसर में लगभग सभ गीतन में टैगोर भारत माता के आजादी के जोश भरलन। उनकर गीतन में भारतीय संवेदना आ मनोविज्ञान के पुट मिलेला। टैगोर के मानल रहे आजादी के सही अर्थ भय से डर से आ शोषण से आजादी हऽ। टैगोर मानत रहलन कि एक ना एक दिन देश अंग्रेजन के दासता से मुक्त होई। गीतांजली में टैगोर के महत्वपूर्ण कविता जवन प्रार्थना के रूप में आइल बा एकर भोजपुरी में अनुवाद अलग-अलग ढंग से एह अंक में छपल बा।

"Where the mind is without fear"

देखल जाव तऽ टैगोर के प्रसिद्धि राष्ट्रीय चौहदी पार करके वैश्विक व्यक्तित्व के रूप में रहे। टैगोर के राष्ट्रवाद एक अर्थ में अन्तर्राष्ट्रीयता के विस्तार कहल जा सकेला जे आजीवन उपनिवेशवाद के विरोध कइलन। 'The sunset of the century' में टैगोर लिखले बाड़े कि देशन के उपनिवेश बनावे के भूख बतलावत बा कि विनाश नजदीके बा (Tagore feels the coming of an impending doom due to the lust of the nations) टैगोर निश्चित रूप से एगो देशभक्त रहलन बाकिर संकीर्ण अर्थ में ना। उनकर मानल रहे कि कवनो तरह से पृथकवादी सिद्धान्त ना माने के चाहीं आ उग्र राष्ट्रवाद के विरोध करे के चाहीं। आपन देश के कुछ लोग उनकर कुछ बात के गलत समझेला बाकिर टैगोर संकीर्ण विचार के ना रहस उनकर विश्वास रहे कि भारत के आजादी मिलहीं के चाहीं बाकिर देश के एकता अक्षुण्ण रहे के चाहीं। दु:ख के बात इ बा कि देश के बँटवारा भइल। Isaiah Bestin के विचार बा - "टैगोर संकीर्ण मानसिकता के खिलाफ हमेशा खड़ा रहस। सच्चाई खातिर हर तकलीफ झेललन आ कबो हार ना मनलन। उनकर दृष्टिकोण कबो ना बदलल। पश्चिमी सभ्यता के लोगन के प्रति भारतीय लोगन के उन्मुखता के निन्दो कइलन।"

साँचो, टैगोर एगो बहुमुखी प्रतिभा के धनी रहले। गुरुदेव के बहुरंगी सोच के अनेक पहलू रहे। उ कवि, गद्यकार, एगो नाटककार, शिक्षाविद्, कलाकार, इतिहासकार, आलोचक, समाचोलक, गीतकार, संगीतकार, वक्ता, रचनाकार, समाज सुधारक, प्रेरक, दार्शनिक आ संत आदि सभ कुछु रहलन। अलग-अलग साहित्यिक विधा के धनी आ 'लियोनार्डो दा विन्ची' के लेखा प्रतिभा के धनी रहस : गुरुदेव विश्वकवि रविन्द्रनाथ टैगोर!

लेखक: संतोष कुमार (सम्पादक, भोजपुरी जिंदगी)

आलेख

डॉ॰ (कैप्टन) दिलिप कुमार सिन्हा

रवीन्द्रनाथ टैगोर - बिहार के गौरव

गुरुदेव टैगोर के 150वाँ जनम दिवस जहवाँ सगरो देश मनावल जा रहल बा एहसे बिहार अछूता काहे रही? बिहारो विश्वकवि के 150वाँ जयन्ती बहुत धूमधाम से मनावत बा। एह अवसर पर अलग-अलग समय में गुरुदेव के बिहार भ्रमण के याद करल बड़ा जरूरियो बा आ प्रासंगिको। टैगोर के हृदय में बिहार खातिर एगो विशेष स्थान रहे। टैगोर आपन बड़की बेटी माधुरीलता के बिआह मुजफ्फरपुर में कइले रहस। आपन पहिल ट्रेन यात्रा (1873 में) अपना बाबूजी देवेन्द्रनाथ ठाकुर के संगे कइले रहस तब टैगोर 12 साल के रहलें आ इहे यात्रा के दौरान उ दानापुर (पटना के नज़दीक) रातभर गुजरलन आ जब आपन उ अंतिम यात्रा कइलन तऽ ओकर एगो विशेष मकसद रहे। इ यात्रा उ 'विश्व भारती' के स्थापना खातिर चंदा बटोरे ला रहे। एह यात्रा के पहिल पड़ाव 'पटना' रहे जहाँ गुरुदेव के खूब मान सम्मान मिलल आ लोग चंदो दिहलस।

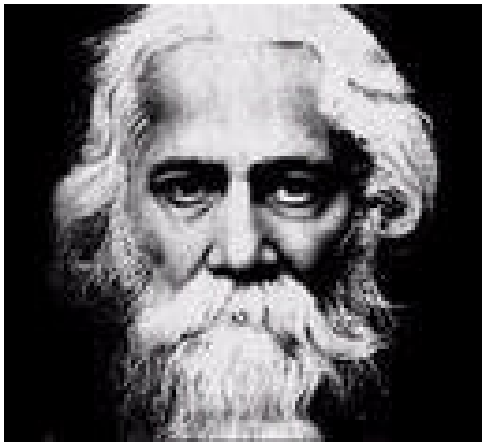

1901 में कवि के बड़की बेटी माधुरीलता के बिआह शरत कुमार चक्रवती से भइल जे ओह समय के मुजफ्फरपुर के एगो नामी-गिरामी वकील रहस आ बिहार के प्रसिद्ध कवि 'बिहारी लाल चक्रवती' के सुपुत्र रहस। जब रवीन्द्रनाथ टैगोर आपन नई नवेली दुल्हन बेटी के छोड़े खातिर मुजफ्फरपुर अइलन तब 'मुखर्जी सेमिनरी' में उनकर भव्य स्वागत कइल गइल।

17 जुलाई 1701 में टैगोर के 'A Scroll of Honour' दिहल गइल। इ टैगोर के सबसे पहिला नागरिक अभिनंदन रहे जवन बिहार में भइल। बिहार खातिर इ गौरव के बात आ दुनिया के जानकारी ला कि बिहार टैगोर के नोबेल पुरस्कार (1913) में मिलला से 12 साल पहिलही 'विश्व कवि' के दर्जा दे देले रहे आ इ गुरुदेव के महानता के पहचान कइलस। मुजफ्फरपुर (बिहार) के प्रवास के दौरान गुरुदेव आपन लघु उपन्यास 'नौकाडूबी' ('Naukadubi') के कुछेक पाठ लिखलन। एही समय कईगो आपन मधुर गीतन के रचना कइलन। जेमे 'तुमी जे अमारे चलाओ, जे केहो मोरे दिया सुख' आ उनकर एगो लिखल लेख जइसे 'अवस्था-ओ-बेवस्था', 'स्वदेशी समाज' प्रमुख रहे।

रवीन्द्रनाथ टैगोर भगवान बुद्ध के सबसे महान 'मनाववादी' मानत रहस। 1904 में गुरुदेव बोध गया के यात्रा 'जगदीश बसु', 'लेडी अबाला बसु', 'बहन निवेदिता' आ 'सर जादूनाथ सरकार' के साथे कइलन आ यात्रा के वापिसी में गुरुदेव आपन बेटा रतीन्द्रनाथ के बुद्ध के सारा धम्मपद के (जेमे बुद्ध के कथा आ प्रवचन संग्रहित) बा ओकरा याद करा देलन।

बिहार एक तरफ गुरुदेव के जीवन में रचनात्मक

काम खातिर जुड़ल बा तऽ दूसर तरफ गुरुदेव के जीवन के सबसे बड़ त्रासदी से भी जुड़ल बा। गुरुदेव के सबसे छोटका लड़िका समीद्रानाथ के देहान्त 1907 में मोनगीर में हैजा से भइल। कवीन्द्र एह जगह, एही से आइल रहस ताकि आपन बेटा के अन्तेष्टि में शामिल हो सकस।

13, 14 आ 15 फरवरी 1910 में रवीन्द्रनाथ भागलपुर के यात्रा कइलन जहवाँ 'बंग्ला सम्मेलन' के आयोजन भइल रहे। सम्मेलन के आखिरी दिने गुरुदेव सभा के 'अध्यक्षता' कइलन जहवाँ इ एजेण्डा रहे कि हिन्दी, बांग्ला आ मराठी के भारत के 'सम्पर्क भाषा' बनावे पर विचार कइल जाव। रवीन्द्रनाथ हमेशा हिन्दी भाषा के पक्ष में खड़ा

भइलन इ सगरो जहान जानत बा। 24 जनवरी 1918 में गुरुदेव गाँधी जी के एगो चिठ्ठी लिखलन जेकरा में उ हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में आपन विचार रखत लिखलन, "हिन्दी एक मात्र अइसन भाषा हऽ जवन राष्ट्रीय भाषा बने के कुव्वत राखत बा काहे कि अन्तरप्रान्तीय वार्तालाप खातिर इ सबसे समर्थ भाषा बा।" टैगोर हिन्दी के पक्ष में तऽ खुल के रहबे करस संगे-संगे क्षेत्रीय भाषा के विकास में धेयान देवे के निहोरो कइलन।

16 मार्च 1936 में गुरुदेव विश्वकवि के रूप में प्रख्यात हो गइलन। साहित्यिक शिखर पुरुष रवीन्द्रनाथ टैगोर ओही साल पटना के एलिफिस्टन सिनेमा हॉल में आइल रहलन जहवाँ उनकर नाटक 'चित्रांगदा' के मंचन दू दिन ले भइल।

"बिहार के लोग के अनुपम प्रेम आ उनका से मिलल मान सम्मान हमरा ला अविस्मरणीय बा। हम जिनगी भर ना भुला सकीला। सच्चाई इहो बा कि बिहार के लोग हमार कृतियन के मूलरूप में ना बलुक अनुवाद रूप में पढ़ले बाड़न।"

'विश्वभारती' के स्थापना खातिर धन जुटावे के प्रयोजन से गुरुदेव पटना अइलन जहवाँ ओह समय के काँग्रेस के अध्यक्ष डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद जी रहलें जे उहाँ के आगवानी कइलें। बाद में विश्व कवि के एगो लमहर नागरिक अभिनंदन कइल गइल जेमे डॉ॰ सच्चिदांनद सिन्हा जी रहनी जे ओ समय पटना वि॰ वि॰ के कुलपति रहनीं। बिहार में गुरुदेव के 1,111/- [रुपये एक हजार एक सौ ग्यारह मात्र] चंदा स्वरूप प्रदान कइल गइल। अइसन भव्य स्वागत से अभिभूत (deeply moved) होके टैगोर कहलन, "बिहार के लोग के अनुपम प्रेम आ उनका से मिलल मान सम्मान हमरा ला अविस्मरणीय बा। हम जिनगी भर ना भुला सकीला। सच्चाई इहो बा कि बिहार के लोग हमार कृतियन के मूलरूप में ना बलुक अनुवाद रूप में पढ़ले बाड़न।"

पटना के एह यात्रा के परिणाम इ भइल कि विश्वकवि के बिहार के दिग्गज हस्तियन से जान पहचान बढ़ल आ कवियन से सम्बन्ध प्रगाढ़ भइल। एकर नतीजा इहो भइल कि 'शांति निकेतन' में विश्व कवि 1940 में डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद आ डॉ॰ सच्चिदानंद सिन्हा के नेवता दे के बोलवलन ओही समय ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय गुरुदेव के सम्मान स्वरूप डी॰ लिट्॰ के उपाधि देके अंलकृत कइले रहे।

"1934 में बिहार में आइल प्रलयकारी भूंकप के पीड़ितन के मदद खातिर डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद रवीन्द्रनाथ से निहोरा कइलन कि उ विश्वकवि के नाते विश्व के अलग-अलग देशन में आपन संदेश पेठावस ताकि बिहार भूंकप पीडित सहायता कोष में मदद आ सके।"

1938 में विश्व कवि आपन एगो प्रेरणामूलक संदेश आ एगो अंग्रेजी कविता 'बिहार हेराल्ड' (Bihar Herald) बिहार के एगो नवगठित संस्था 'बिहार-बंगाल एसोशियसन' खातिर भेजलन।

एही साल गुरुदेव श्री पी॰ आर॰ दास जे बिहार के बंगाली एसोशियसन के अध्यक्ष रहलन उनकरा के शांति निकेतन में नेवतलन तब इहवाँ 'हवेली मेमोरियल हॉल' के उद्घाटन भइल रहे।

1934 में बिहार में आइल प्रलयकारी भूंकप के पीड़ितन के मदद खातिर डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद रवीन्द्रनाथ से निहोरा कइलन कि उ विश्वकवि के नाते विश्व के अलग-अलग देशन में आपन संदेश पेठावस ताकि बिहार भूंकप पीडित सहायता कोष में मदद आ सके। विश्वकवि इ दु:ख के घड़ी में बिना देर कइले आपन संदेश पेठवलन आ लिखलन कि भूंकप पीड़ितन के मानवीय संवेदना के आधार पर मदद भेजल जाव।

एह कुली ऐतिहासिक उदाहरण से स्पष्ट बा कि कविन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर बिहार के पहचान आ अस्मिता के एगो सशक्त कड़ी रहलन।

(लेखाक बिहार राज्य अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष हईं)

मूल लेख (अंग्रेजी में Bihar Information) सितम्बर 2011 में प्रकाशित भइल बा ओकर भोजपुरी अनुवाद संतोष कुमार (सम्पादक भोजपुरी जिंदगी) द्वारा कइल गइल बा।

(साभार : Bihar Information Magazine, Govt. of Bihar, Patna, Sept. 2011) ■

आलेख

प्रो० शत्रुघ्न कुमार

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ के कविता "हे मोर दुर्भागा देश" (हे हमार अभागा देश)

भारतीय समाज में जाति व्यवस्था जेकरा पर धरम के मोहर लागल बा आ जेकर तुलना 'कैंसर' जइसन बेमारी से कइल जा सकेला। जइसे अलग-अलग तरह के कैंसर अदमी के शरीर के बरबाद क देला ओही लेखा जाति व्यवस्था नियर कैंसर भारतीय समाज के फोफड़ बनावत जा रहल बा चाहे लोग 'आरक्षण' जइसन फिलिम बना के खाली आपन बेयपार करे खातिर इ व्यवस्था के उपयोग होखे, चाहे राजनीतिज्ञ लोग एकरा तरह-तरह के मुद्दा उठा के इस्तेमाल करस। इ वेवस्था खतम होखे वाला नइखे। केहू एकरा जड़ सोर के मिटावे के प्रयासो नइखे करत।

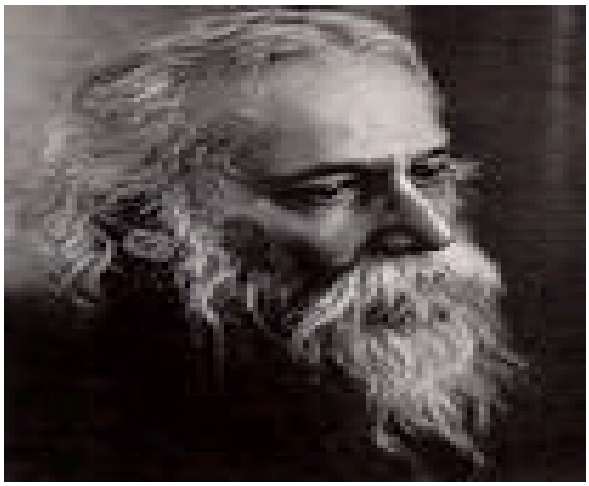

बाबा साहेब एह समस्या के एकदम जड़े से उखाड़े के प्रयास कइलन बाकिर गलती कहाँ भइल एकरो जाँच करे के जरूरत बा।

दरअसल जब हम जाति वेवस्था के 'कैंसर' के संज्ञा देत बानी तऽ एकर मतलब इहे बा कि जे लेखा अलग-अलग तरह के कैंसर के खतम करे ला दबा-बिरो कइल जाला ओकरा से इहे लागेला कि केहू के भीतरी भइल एइ बेमारी खतम हो गइल बाकिर ओकर 'किटाणु' पनप के देह के अलग-अलग हिस्सा में बढ़े लागेला। भारतीय समाज में जाति बेवस्था के उपाय त ढ़ेर भइल आ ऊपर ऊपर इहे बुझात रहल कि इ बेमारी खतम हो गइल। बाकिर आदमी के कवनो ना कवनो अंग में एह बेमारी के 'किटाणु' भा 'जीवाणु' जिन्दा बा।

विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ब्राह्मण रहलन। उनकर परिवार वालन के 'जातिवाद' के तकलीफ झेले के पड़ल रहे। दरअसल 'कृष्ण कृपलानी' के लिखल किताब 'रवीन्द्रनाथ के एक जीवनी' में उनकर पुरखा-पुरनिया के जुड़ल एगो घटना के बारे में लिखल बा -

"13वीं शताब्दी के शुरुआत में बंगाल दिल्ली के मुसलमान राजा के आधीन रहे। दक्षिण बंगाल के जशोर जिला के सुबेदार के दीवान ब्राहमण रहले उ अपना इच्छा से इस्लाम धरम कबूल करके एगो मुसलमान के लड़की से बिआह करके सुबेदार के खासमखास हो गइले। कृष्ण कृपलानी पीर अली खाँ के एगो 'हिम्मती ब्राह्मण' लिखत बाड़न। साँच कहल जाव त उ साहसी भा हिम्मती कम आ अवसरदारी आ लालची ब्राह्मण जादे रहले। एही पीर अली के इहाँ दू गो उनकर विश्वासी ब्राह्मण काम करत रहले। एगो के नाम कामदेव आ दूसर ब्राह्मण के नाम जयदेव रहे। इहे लोग 'रवीन्द्रनाथ' के पुरखा-पुरनिया रहले।

इ कहल जाला कि रमजान के महिना चलत रहे ओही दौरान एक दिन कामदेव देखलन कि पीर अली खाँ एगो नींबू सुघंत रहले। उ हँस के कहलें कि हमरा धरम में बा कि खाये वाला चीजन के सुंघलो पर भोजन कबूल मानल जाला। एही से 'रोजा' टूट गइल। ओह समय पीर अली कामदेव के कुछु ना कहलें। आपन अपमान के घोंट पी के रह गइले। बाकिर उनकर कान में कामदेव के बात हमेशा गुँजत रहल। अपमान के तीर बहुत गहिर होला।

एक अदमी दोसरा अदमी के अपमान करे खातिर हजारन का, लाख तरीका अपनावेला। केहू के अपमान से केहू के जिनगी के धार बदल जाला तऽ केहू साधु संत बन के घर के बहिरी निकल जाला। केहू अपमान के बोझ से मरियो जाला। कथा कहानी में एह तरह के उदाहरण खांची के खांची भरल बा। सच्चाई इहे बा कि इ कुल्ही कल्पना नइखे बल्कि जीवन ने सच्चाईयों बा।

कुछु दिन बितला पर पीर अली खाँ आपन महल में एगो संगीत सभा के आयोजन कइले। हिन्दू जाति के अउर दूसर ध निक लोगन के संगे संगे 'कामदेव' आ 'जयदेव' के इहाँ नेवता भेज गइले। इ दूनू जने काजकरम में अइलें। संगीत के काजकरम के साथे पीर अली खाँ एगो आउर आयोजन कइले रहे। समारोह के स्थान के बगल वाला रूम में उ तरेह तरेह के 'माँसाहारी भोजन' के बेवस्था आ खाये पीये के इंतजाम कइले रहे। एह में बकरी आ मुर्गा के अलावे गाय के भी मांस रखल रहे। गरम-गरम खाना के खुशबू चारू ओर फइल गइल बनत भोजन के सुगंध जब संगीत वाला कमरा में गइल त अतिथि लोगन में खाये के बेचैनी होखे लागल। कामदेव आ जयदेव

घबड़ा गइले। ओह समय पीर अली खाँ हँसत मजाक कइलस 'तोहरा धरम में सुगंध से आधा भोजन कइल मानल जाला। एही से भोजन के सुगंध से लोग आधा भोजन कर लिहलऽ'। एतना कहला पर सभा में भगदड़ मच गई। सारा हिन्दू धनिक लोग नाक पर कपड़ा धऽ के भागे लगलें बाकिर कलंक त लागिये गइल रहे। ओह समय से टैगोर पुरखा (पूर्वज) 'हीन' (गिरल) में गिनाये लागल। रूढ़िवादी-ब्राह्मण उनका हेय समझ के 'पिराली ब्राह्मण' कहे लगले। एही कलंक के कारण दोसर ब्राह्मण उनका वंश के 'जाति' से निकाला दे देलन। उनकर घर के लड़कियन से बिआह करे के केहू तइयार ना रहे।

"'जाति निकाला', 'दुरभाग' आ 'समाज निकाला' इ कुल्ही एह परिवार में साहस आ विद्रोह के भाव जगावे लागल।" आपन जातीय दंभ छोड़ला के चलते उनकर भितरी के भय खतम हो गइल रहे। अब गँवाये खातिर कुछउ ना बाँचल रहे। शुद्ध आ पवित्र बनल रहे के राहता बंद भइला के कारण उ लोग मानवता पर जोर देवे लगलें आ जिनगी के उहे साधना के ओरि धेयान देवे लगलन जवन ओह जुग में मौजूद हो सकत रहे।

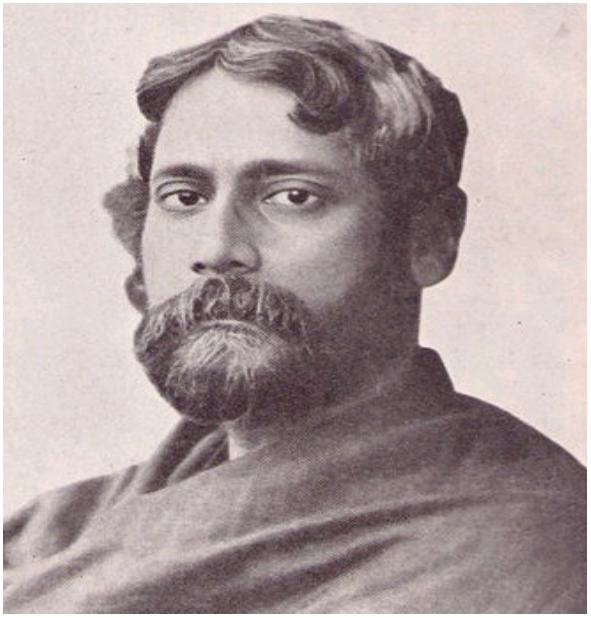

रवीन्द्रनाथ के पुरखा-पुरनिया (पूर्वज) रोजी-रोटी के खोज में निकल पड़लें आ गंगा के किनारे एगो गाँव 'गोविन्दपुर' में आ के बस गइले। इहवाँ मछुआरा लोगन के एगो बस्ती रहे। 'पीराली' भइला के बादो इ ब्राह्मण परिवार मछुआरा के बस्ती में रहे लागल। छोट जाति के लोगन के बड़ा खुशी भइल आ उ लोग रवीन्द्रनाथ के परिवार के मान-सम्मान देत 'ठाकुर' पुकारे लगलें। बांग्ला में 'ठाकुर' के माने 'भगवान' ह। ब्राह्मण तऽ पृथ्वी के देवता तऽ ह लोग। एह तरह रवीन्द्रनाथ के परिवार के ठाकुर उपनाम मिलल। जवन विदेशी लोग जहाज गंगा नदी से लेके आवस उहे जहाज से रशद लादे के काम रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पुरखा 'पंचानन ठाकुर' के मिले। एही अंग्रेज आ विदेशी व्यापारियन से पंचानन के वेयपार करे के रहे आ उ सभे 'ठाकुर' शब्द के उच्चारण कठिनाई से करस। एह तरह 'ठाकुर' बिगड़ के 'टैगोर' हो गइल।

कृष्ण कृपलानी लिखत बाड़े कि "यदि मुसलमानों ने इस वंश की जाति भ्रष्ट किया तो ईसाईयों ने उनका पवित्र नाम भी भ्रष्ट कर दिया।"

"आरक्षण' फिलिम बनावे वालन के आ ओह में अभिनय करे वाला महानायक के इ सच्चाई के जाने के चाहीं कि ब्राह्मण सब तरह से भ्रष्ट होख लो पर भी पवित्र बनल रहेले।"

एह वृतान्त के लिखे के हमार उद्देश्य इहे बा कि कहीं न कहीं जाति व्यवस्था को जवन दंश रवीन्द्रनाथ के झेले के पड़ल उहे ओकर प्रभाव उनकर व्यक्तित्व के ऊपरो पड़ल रहे। इहे कारण हऽ कि मन के कवनो कोना में जातिरूपी 'किटाणु' के वास के बावजूद इनका 'हे मोर दुर्भागा देश' जइसन कविता के रचना कइलन। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के लोग, जादेतर बंगाल के 'भ्रद्रलोग' उनका के खाली नाच-गान तक सीमित रख देलन। रवीन्द्र संगीत के भीतरी विश्वकवि के समूचा व्यक्तित्व दब के रह गइल। उनकर 'मानवतावादी' विचारधारा दब गइल। कलकत्ता के सांको में जवन जगहे उनकर खानदानी निवास रहे ओकर ठीक सामने सड़क पर बिहार आ उत्तर प्रदेश के मजदूर सारा दिन के मेहनत के बाद आपन रात के भोजन बनावत समय कबीर आ रैदास के 'पद' गावस। बालक रवि उनकर गीतन के धेयान से सुनत आ अर्थ जाने के प्रयास करस। एह तरह बालक रवि के जीवन पर कबीर आ रैदास के प्रभाव रहे जवन उनकर 'गीतांजलि' में स्पष्ट दिखाई देत रहे। शायद कम लोगन के मालूम रहे के गीतांजलि पर कबीर, रैदास के पद के प्रभाव बा। 'आरक्षण' फिलिम बनावे वाला आ समानता के ढ़िढोरा पीटे वालान के विश्व कवि के मानवतावादी दृष्टि के उनकर कविता के सामने राख के विचार विमर्श करे के चाहीं।

आजो साहित्य अकादमी जइसन साहित्यिक संस्था के माध्यम से एगो आदमी के रवीन्द्रनाथ ठाकुर के विशेषज्ञ घोषित कर भांड-नाच के तरह तरह मंच पर नचावल जात बा जवन जातिवाद के पोषक आ दलित के सत्यानाश करे वाला हऽ। अइसन हालत में रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'मानवतावादी दृष्टिकोण के उजागर के करी?

'हे मोर दुर्भागा देश' कविता में कवि खुल के देशवासियन

से जातिवादी सोच से बाहर आवे के आह्वान करत बाड़े। गाँधी जी एह कविता के अंग्रेजी अनुवाद करवा के आपन हरिजन नामक पत्र में 1932 में छपवावे रहस। यह कविता के अंग्रेजी अनुवाद देंखी आ हिन्दी आ फेर भोजपुरी पर गौर करीं।

इस कविता के हिन्दी अनुवाद पर गौर करीं –

हे मेरे अभागे देश!
'हे, मेरे अभागे देश' तूने जिनका अपमान किया था
उनके साथ तुझे भी अपमानित होना होगा।
उनके मानवीय अधिकारों की अवज्ञा की थी, जिन्हें?
सामने खड़ा रखकर,साथ बैठने का मान नहीं दिया था,
उनके साथ तुम्हें भी अपमानित होना होगा।
मनुष्य को स्पर्श के योग्य न समझ तूने मनुष्य में स्थित देवता का अपमान किया है। विधाता के क्षोभ भरे दुष्काल द्वार पर बैठ तुझे सबके साथ अन्न-पानी का सभभागी होना पड़ेगो। उनके साथ तुझे भी अपमानित होना होगा। अपने ऊंचे आसन से तूने उन्हें नीचे धकेल दिया-उनके साथ अपनी शक्ति को भी निर्वासित किया। अब वह चरणों से रौंदी जाकर धूल में मिल जाएगी।
अब तू नीचे उतर,
अन्यथा तेरे परित्राण की आशा नहीं।
जिन्हें तूने नीचे उतारा है वे तुझे ही बांधे हुए हैं,
आज्ञानान्धकार के परदे में जिन्हें तूने डाल दिया है उन्होंने भी तेरे मंगल-मार्ग में प्रसाद आवरण डाल दिये हैं।
सैकड़ों सदियों से तेरे कन्धों पर अपमान का भार
पड़ा है, तब भी तूने नर-नारायण को नमस्कार नहीं किया।
अपनी आंखों को झुकाकर तू देख नहीं पा रहा।
दीन-हीनों का भगवान पृथ्वी पर उतरा है
तुझे दिखाई नहीं दे रहा कि मृत्युदूत सामने खड़ा है
जो तेरे जातीय अंधकार पर अभिशाप चढ़ा दिया है।
अब भी यह तू सबको नहीं पुकारेगा, दूर खड़ा रहेगा और अपनी रक्षा के लिए झूठे अभियान की रेखाएँ खींचेगा।
तब तो मृत्यु ही चिताभस्म में तुझे सबके बराबर बनाएगी।

इ समूचा कविता में कवि जाति- व्यवस्था पर प्रहार कइले बाड़न। कविता के शीर्षक बा 'हे हमार अभागा देश', कवि पूरा देश के अभागा बतावत बाड़े काहे कि इ देश में जाति व्यवस्था कायम बा। इ स्थान पर उनकर एगो अउर कविता के धेयान आ जाता। इ कविता का भितरी भारत वर्ष के बडाईओ बा।

इ कविता के भोजपुरी अनुवाद पर धेयान दीहीं –

'हे हमार अभागा देश'
हे हमार अभागा देश, तू जेकर अपमान कइलऽ
ओकरा साथे तोहरो अपमानित होखे के पड़ी
जेकर मानवीय अधिकार के अवज्ञा कइले रहलऽ
सोझा खड़ा रखलऽ, साथ उठे बैठे के मान नाहि दिहलऽ
ओकरा संझे तोहरो अपमानित होखे के पड़ी
अदमी के छूअे के लायक ना समझलऽ तऽ अदमी के भितरी के देवता कऽ अपमान कइलऽ। विधना के क्षोभ-भरल दुख के दुआर पर बइठल तू सभ का संगे अन्न-पानी के सहभागी होखे के पड़ी।
ओकरो साथे तोहरो अपमानित होखे के पड़ी
आपन ऊँच आसन से तू ओकरा नीचे धकेल दिहलऽ ओकरा संगे
आपन ताकतो के निर्वासित कइलऽ। अब उ चरनन से रौंदल जा के धूरा माटी में मिल जाईं।
अब तू नीचे उतरऽ
ना तऽ तहार परित्राण के कवनो आसा नइखे।
जेकरा तू नीचे उतरलऽ उ तोहरो के बांध देले बाड़न
जेकरा तू पीछा धकेल देलऽ उ अब तोहरा पीछे खीचंत बाड़े
अज्ञान आ अंधेरा के परदा जेकरा तू डाल दिहलऽ उहो लोग तोहरा मंगल मार्ग में लमहर परदा डाल दिहले बा
सैकड़न सदियन से तोहार कान्हा पर अपमान के भार पड़ल बा, तबो तू नर-नारायणके परनाम ना कइलऽ
आपन आँखके झुका के तू देखत नइखऽ
गरीब-गुरबा के भगवान धरती पर उतरल बाड़े
तोहरा देखाई नइखे पड़त बा कि मउगत के दूत सोझा ठाड़ा बा
जवन तोहार जातीय अंधकार पर सराप चढ़ा रहल बा
अबो इ तोहरा सब के ना पुकारी, दूरे खड़ा रही
आ आपन रक्षा खातिर झुठ के अभियान के रेखा खीचीं
तबो मरला पर चिता के राख में तोहरा सभ के बराबरे बनायी।

(भोजपुरी अनुवादः संतोष कुमार)

"The Great Equality"
By Rabindrnath Tagore

In 'The Great Equality' Rabindra Nath Tagore warns his countrymen not to ignore the untouchables. The poem translated by Basant Koomar Roy for the original Bangali was published in Gandhiji's HARIJAN in the issue dated August 5, 1933.

"Proud casteman of my unfortunate Country!"
Throw aside your pride of caste
Lest on your own unwilling head
Should be heaped the burning insults
That you now shower on others.
You have deprived the outcasts;
Of the common rights of man.
With your very eyes
You have behind their misery,
And yet have you refused to take them to heart
But remember, Please do remember :
Some day you shall have to be
The equal of them all in ignominy
By contemptuously shunning
Touch of your fellow men
You have insulted the Lord of Creation
And is a punishment from on high,
You shall have to share their crumbs.
At times of famine and starvation :
But remenber, please do remember :
Some day you shall have to be,
The equal of them all in ignominy.
You have stifled your own power
When you pushed aside your brothers,
And trampled them under your haugh feet.
But you never, never can be saved
Until you have fully adased youself
To their state of inglorious existence.
But remember, please do remember :
Some day you shall have to be
The equal of them all in ignominy.

उनकर मानल बा कि इ देश तीरथ-धाम के लेखा पूजनीय बा। एकरा पाछे कारण का बा? कारन इ देश के बनावे में, बढ़ावे में एगो ना सभ जाति और धर्म के लोगन के हाथ बा। आर्य, अनार्य, द्रविड़, शक, हूण कुमण, पाठान, अंग्रेज सभ केहू एकरा निर्माण करे में आपन-आपन योगदान देले बाड़न। बाकिर टैगोर 'हे मोर अभागा देस' के रचना कइलन तऽ उनका लागल कि एह देस में इंसान-इंसान में जाति भेद कायम बा। इ उचित नइखे। विश्वकवि बार-बार जाति बेवस्था के विरोध कइलन। उनकर मानल रहे कि जवन पद दलित इन्सान के साथ अन्याय भइल बा ओकरा न्याय मिले के चाहीं। सदियन से जेकरा अन्हार में राखल गइल ओकरा अंजोर मिले के चाहीं। टैगोर चेतावनी देत बाड़े के जदि इ बेवस्था खतम ना भइल तऽ सब कुछ नाश हो जाई। आखिर मउगत के बादयिता में भसम होखे भस केहू राखि खन के एके हो जाई।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के एह कविता में जवन संदेश दिहल गइल ओकरा पर केहू अमल ना कइल। कबीर, रैदास के मानवतावादी विचारधारा उनकरा के अइसने कविता लिखे के प्रेरित कइलख। कुल मिला के उ एह कविता में भारतीय चिन्तनधारा के मानवतावादी पक्षन के उजागर कइलन। एही मायना में देखल जाए तऽ बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर एह देस के महान चिन्तक लोगन कबीर, रैदास फूले आ गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के विचारधारा के कानूनी जामा पहिरा के आ संविधान में एकरा जगह देके सफल कइलन। आज इह बात के जरूरत बा कि बुद्ध, कबीर, रैदास, फुले, अम्बेडकर, कांशीराम आ उनकर दूसर मानवतावादी विचारधारा के जगह मिले आ एगो नया सिरा से भारत के निर्माण में सभे योगदान देस। आधुनिक युग में ज्ञान-विज्ञान के प्रगति आ विचार के लेके हमनी एगो सफल, मजबूत भारत के निर्माण कर सकीले एकागी होके ना।

अनुवाद

सिपाही सिंह 'श्रीमंत'

गीतांजलि कविता संख्या 39

इहाँ जवन गीत गावे हम अइलीं
तवन गा ना सकलीं।
रह गइल बेगावले ऊ गीत
जवन गावे खातिर अइलीं।

आजले खाली
सुरे साधत रह गइलीं
वीणा के तारे कसत रह गइलीं
गावे खातिर
सुरे-सार करत रह गइलीं
सोचते रह गइलीं

जवन सुर साधे के चहलीं
से सधा ना सकल
स्वरन में समता आ ना सकल
जे कहे के चहलीं
से कहा ना सकल
हमार वाणी
लड़खड़ात रह गइल
गावे के बेचैनी
खाली हमरा प्राण में बा
हमार प्राण त गीत गावे खातिर
आकुल बा व्याकुल बा।

बाकिर ऊ फूल
आजो ले ना फूटल।
आजो ले ना खिलल
ई त खाली एगो बेयार बहल बा
जइसे डोल रहल बा ऊ फूल
हिल रहल बा ऊ फूल
हम ना उनकर मुँह देखले बानीं
ना बोली सुनले बानीं
बाकिर हर घड़ी, हर पल,
उनकर पदचाप सुनते रहिले
सुनाते रहेला छने छन
उनका चरनन के आवाज।
हमरा दुआरी का सामने से
(हमरा दुआरिए परे)
उ हरदम आवेले, हरदम जाले।

उनका खातिर खाली आसन डासन में
हमार समूचा दिन सरक गइल
घर में दीयो ना बराइल।
उनका के पुकारीं केंगईं?
उनका के पुकारीं केंगईं?
बाकिर मिलिहें ऊ जरूर
अइहें ऊ जरूर
आस लागल बा
विश्वास जमल बा।
अबहीं ले ऊ ना भेंटइले
बाकिर भेंटइहें ऊ जरूर।

मूल कवि - कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर

(साभार सिपाही सिंह 'श्रीमंत' के भोजपुरी अनुदित 'गीतांजलि'),
प्रकाशक-'कॉन्फ्लुएंस इंटरनेशनल, ग्रेटर कैलाश-II, नई दिल्ली-48

व्यंग्य

डॉ. गोरख प्रसाद 'मस्ताना'

स्वारथ आ साधु

परमारथ... परमारथ... परमारथ... एकर कवनों भयलू बा स्वारथ ना रहित त परमारथ का। रावणे से राम आ कंसे से कृष्ण के नाम बा जइसे नेता से ही देश के पहिचान होला, लालचे से ही कुकुर आ धुरतई से ही कऊआ के पहिचान बा। बस अइसहीं स्वारथ से साधु के महानता हऽ। ओइसे एगो फिलिम 'साधु और शैतान' बनल रहे जइसे शैतान शब्द साधु के सहचर होखेला ओइसही 'साधु' शब्द हमनी का सामने आवते अउरू कुछु लउके भा ना लउके बाकी लमहर-लमहर दाढ़ी, कपार पर तिलक त्रिपुंड, हाथ में कमंडल आ चिमटा लिहलें एगो अइसन फोटो लउके ला जवन कबहूँ त बड़ा सीधा-सादा लागेला त कबहूँ 'पालकी के बॉस नियर सोझ' दोसरा भाव से कहीं कबहूँ त कबहूँ शुक्राचार्य खानी टेढ़।

ओइसे भी कलयुग में साधु या असाधु में भेद कइल बड़ा कठिन बा। जइसे दुध से पानी हटावल कठिन बा ओइसहीं साधु आ असाधु में फरक कइल कठिन बा। एह कठिनाई के कारणों बा। जब लालच के लेई से साटल दाढ़ी होई, स्वारथ के गोन से सटल पहिरावा त एह चोला के कइसे केहू हटा पाई। बढ़-बढ़ पहलवानो लोग एह चोला के हटावे में भहरा जाई। जवना साधु लोग के कलयुगी त्रिदेव बाहुबली रंगदार अउर राजनेता के वरदान मिली ओकर चोला के उतारी? आ चोला उतरिए जाई त चेली कहाँ से आई लोग जे ओह महापुरुष लोगन के मन राखी। इहे चोला त देश के भरमावेला। सधुनी लोग के जुटावेला, देवदासी के उपरावेला आ कलयुगी महापुरुष लोगन के चरणन के दासी बनावेला। तबे नू कहल बा धन बाड़े साधु आ धन बा उनके चोला जे साधु लोगन के गुरू कम गुरू घंटाल बेसी बना दिहले बा।

बड़ा पढ़ाई का आ शोध के बाद हम तीन किसीम के साधु लोग के खोज कइनी। पहिला जोगी साधु, दोसर भोगी साधु आ तीसर प्रेम रोगी साधु। जोगी साधु उ लोग हऽ जे अपना जोग साधना से एक रोपैया के तीन रोपैया बनावे में माहिर बा। हर बेमारी का इलाज उनके जड़ी-बूटी में हाला। उ लोग अपना जोग से आ दवाई के संयोग से दवाई आ दोकानदारी के मधुर सम्बन्ध बना देवे में धुरन्धर होले। इहे सम्बन्धवा उनका दवाई के अचुक बना देला जे चूकल उ गइल काम से। अइसन साधु लोग साधु कम 'बाबा' जादे कहाला। कंजूस चेला लोग के उनके दवाई से लाभ कम होला। दवाई तबहीं लाभ पहुँचाई जब जोग साधना के संगे-संगे बाबा के फैक्टरी के बनल दवाई खाइल जाय। काहेकि ओही मरीज के बाबा के आर्शीवाद फरी जे बाबा के बनावल दवाई खाई ना तऽ जानो से जाई आ जहानों से जाई। कमाल त एह दवाई के ई बा कि केतना लोग ई दवाई खाते, खाते अपनहूँ जोग गुरू हो जाला आ आपन अलगे दोकान

चलावे लगला। एकरे के कहल जाला गुरू गुड़ चेला चिन्नी। आईं हमनियों का अइसन साधु बाबा बने के जोगाड़ बइठाई।

साधुअन के दोसन श्रेणी बा भोगी साधु। एह लोगन के राजपाट बड़ा जादूई, तिलस्मी भा करिश्माई होला। देहात में एकरे के कहल जाला 'आँख पर पट्टी बाँधल'। एह किसीम के साधु लोगन के चेला होला लोग 'आँख के आन्हर गाँठ के पूरा'। एह किसीम के साधु लोग बाहर से त शैतान लगबे ना करी चाहे कवनो दूरबीन से झाँकीं। अब भीतर का बा इ कहल त ओतने भारी बा जेतना नेता के पहिचान कइल। बाहरे उज्जर आ भीतर करिया कहेला ना, हम तऽ साधू हई। चमकत चेहरा दमकत देह बोली में मिसीरी। हँ, एह किसीम के साधु लोग दाढ़ी ना रखेले। सफाचट होले, देह पर महँगा कपड़ा, ए.सी. कार ओ सोना के सिंहासन पर बईठ के जब परवचन देले त बुझी की जवान से तनिकों कम अपना के बुझेले। आ उ का बुझेलें उ त अधयातम के अइसन परसादो बाँटेले कि उनकर चेला चेली उनका बिनु रहिए ना सकेले। ताम झाम अइसन कि सुरग में बइठल इन्द्र भगवान भी कबहूँ लज्जा जात होइहे काहे कि उनका दरबार के शोभा ह लोग रंभा, मेनका, उर्वसी त कलयुगी साधु लोग के दरबार में उनहन से कम सुन्दरी लोग के जमावड़ा ना होला। मठ बुझी पंच सितारा होटल चेली लोग सधुनी कम तितली जादे लागेला लोग। एह किसीम के साधु लोग अपना सेवा में एह चेलियन के भरपूर उपयोग करके भरपूर आर्शीवाद बाँटेला। लोग एही चेलियन के सहारे सत्ता के सीढ़ी पर आसानी से चढ़े में सफल हो जाले। रउआ इ कही कि सफलता के झंडा गाड़ दिहला।

अब देखीं साधुअन के तीसर किसीम। इ प्रेम रोगी साधु ह लोग। एह लोगन के हम परिवार चलावे में निकम्मा लोग के जमावड़ा कहिले। 'काम ना काज के घोड़ी घास के'। कुछ लोग पत्नी पीड़ित होले त केहूँ प्रेम रोगी। एइनू बीमारी से बेमरीयाइल लोग भगवान के चरण पकड़ लिहेला भा कवनों मठ मठिया के शरण में आ जाला आ थोड़ही दिन में स्वामी चरणदास बन जाला। भगवान खाँ भा ना खायें एह लोगन के पेट तनिए दिने में गनेशो जी के फेलियावे लागेला। हेराफेरी में इ लोग माहिर होला। मंदिर-मंदिर में भटकी आ कबहूँ मठ के घंटा, त कबहूँ भगवान लोग के मूर्तिये के सटकी। बाकी केहूँ के थाह ना लागी इ लोग पक्का साधु तबही होला जब 'खेत खाये गदहा आ मार खाये जोलहा' के कहावत पर खरा हो जाले। इ साधु लोग प्रेमरोग से भी पिड़ित होले। मतवा बा सधुनी लोग के हाथ से बनावल भोजन कइसनों होखे अमरित बुझी के खाले समझीं किं परसाई खाले। भोजन कम, मतवा के मुँह के निहारे में अधिका समय देला लोग।

भगवान भला करस ए देश के आ भागवानों का भला होखे कि उ साधु नियर जीव धरती पर बनवले ना त हमनी के ना देश रहित ना लोकतन्त्र। इ साधु लोगन के आर्शीवाद बा परमारथ भाव बा जे देश चल रहल बा, भा कहीं कि दउड़ रहल बा। संसद के शोभा एही लोगन से बा। एही लोग से जंतर मंतर के शोभा बा कि भारत भुकभुकात बा ना त कहि इ गतल में चल जाइत। हमरा त कबहूँ-कबहू लागेला कि इहे सोची विचारी के बहुते माई बाप अपना लइकन के नाम धरेले-साधु लाल, साधुगोप त केहू साधुशरण। धन बा ई माई बात लोग जे साधु शब्द के महिमा जनलो बा। काश! हमहूँ साधु रहती। ■

अनुवाद | सिपाही सिंह 'श्रीमंत'

गीतांजलि कविता संख्या 37

रात के सपना छूट गइल
छूट गइल रे छूट गइल
बंधन सब अब टूट गइल
टूट गइल रे टूट गइल

अब प्राण के परदा ना रहल
हम निकल के बाहर आ गइलीं
हमरा हृदय कमल के
सब पँखुरी फूट गइल
फूट गइल रे फूट गइल

दरवाजा हमार तूर के
जब तूं खुदे आके
हमरा दुआरी ठाढ़ हो गइल
तब हमरा नैन-जल में
हमरा हृदय के बहे द
आ अपना चरनन में लोटाए द
आकाश से भोर के अँजोर
हमरा ओर हाथ बढ़ा रहल बा
जेल के फाटक टूट गइल
टूट गइल रे टूट गइल
जै जैकार के सोर मच गइल।
मच गइल रे मच गइल।

मूल कवि - कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर
साभार सिपाही सिंह 'श्रीमंत' के भोजपुरी अनुदित 'गीतांजली'
प्रकाशक-कॉन्फ्लुएंस इंटरनेशनल,
ग्रेटर कैलाश-II, नई दिल्ली-48

अनुवाद | अविनाश कुमार पांडेय

A English poem of Ravindra Nath Tagore

Day by day it float my paper boats

Day by Day it float my paper boats
One by one down the running steam
In big block letters I write my name
On them and the name of the village where I live
I hope that some one in some strange
Land will find them and know who I am
I load my little boats with shiuli
flowers from my garden, and hope
that these blooms of the
down will be carried safely to land
in the night

रविन्द्र नाथ टैगोर की अंग्रेजी कविता **'डे बाई डे इट फ्लोट माई पेपर बाट्स'** के भोजपुरी अनुवाद

हमरा मन में पूरा इ आस बा
कबो लागी किनारे हमरो नाव इ विश्वास बा
एक एक करके उतरे जहवा बहे माच्छन धार
हमर कागज के इ छोटहन नाव
लिखनी ओपर हम आपन बड़का नाम
कवने गाँव हमर ठाँव
टिकल बा ऐही पर हमार उम्मीद के छाँव
कबो लगिहन किनारे हमरो नाव इ विश्वास बा
ओकरा ऊपर चढ़ के आई कवनो अजनबी
जेकरा पर टिकल बा सब मनई के आस
कबो लागी किनारे हमरो नाव इ विश्वास बा
कागज के नाव हमार बा भले छोट
हम त लादेनी सीली ओपर रोज
बीती अन्हरिया इक दिन इ विश्वास बा
हमर मन में पूरा इ आस बा
कबहु लागी किनारे हमारो नाव इ विश्वास बा।

रतनमाला, बगहा, प. चम्पारण, बिहार

अनुवाद

रमरती - रतन

गीतांजलि

मूल कविता

डॉ रवीन्द्र नाथ ठाकुर

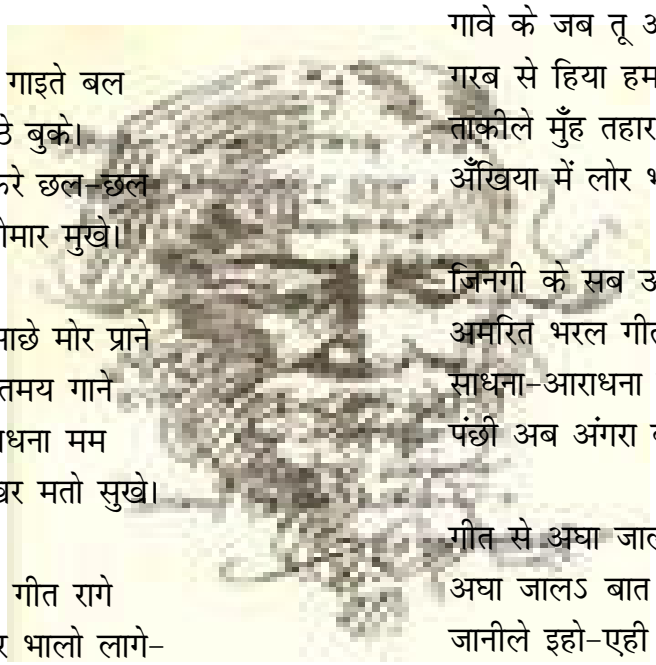

तुमि जखन गीत गाइते बल
गर्व हमार भरे उठे बुके।
दुइ आँखि मोर करे छल-छल
निमेषहारा चेये तोमार मुखे।

कठिन कटु जे आछे मोर प्राने
गलिते चाय अमृतमय गाने
सब साधना आराधना मम
उड़िते चाय पाखिर मतो सुखे।

तृप्त तुमि आमार गीत रागे
भालो लागे तोमार भालो लागे-
जानि आमि एइ गानेरी बले
बसि गिये तोमारि सम्मुखे।

मन दिये जार नागाल नाहि पाइ
गान दिये सेइ चरन छूँए जाइ।
सुरेर घोरे अपना के जाई भूले
बन्धु बले डाकि मोर प्रभु के।

भोजपुरी अनुवाद

रामरती - रतन

गावे के जब तू अढ़ावे लऽ
गरब से हिया हमार फाटेला
ताकीले मुँह तहार एकटके
अँखिया में लोर भरि-भरि जाला।

जिनगी के सब ऊ बेमेल, रुखर
अमरित भरल गीत में गल जाला
साधना-आराधना हमार सब
पंछी अब अंगरा के उड़ जाला।

गीत से अघा जालऽ हमरा तू
अघा जालऽ बात हम जानीले
जानीले इहो-एही गीत गुने
हम तहरा आगा बइठ जाईले।

चाहियो के जवन चरन ना छुअतीं
गीत गुने आ के हम छू लीले।
गावे का सुर में विभोर भइल
बन्धु प्रभु! तहरो के कह दीले।

कहानी

सदका

संतोष कुमार

'सदका' उर्दू शब्द हऽ जेकर माने दु:ख दरिदर आ परसानी दूर करे खातिर कइल गइल दान पुन कइल हऽ। एकरा में गरीब, यतीम (अनाथ), टुअर-टापर के भोजन करावल जाला जेमें पोलाव, गोश्त भा कुछु खाये पीअे के कवनों चीज होखेला।
'Sadqua' or Charity practiced to work off troubles.

के हऽ बाबू, के गेट पर के ठाड़ा बा...? के गेट खटखटावताऽ? घरे के भितरी से खाँसत सिद्दीकी चाचा हॉक लगावत रहलन। गेट पर खड़ा राजू बोललें .... हम हई, हम ... राजू, चाचा राजू ...।

सिद्दीकी चाचा आवाज आँकते तुंरते कहलन - अच्छा राजू बाबू! आव, बाबू आव! गेटवा खोललऽ, भितरी आवऽ। गेट के पल्ला खोलते राजू देखलन कि घर के कोठरी अन्हार रहे, अंजोर एकदम मधिम रहे। चाचा के घर के तीनू ओरिया से नाली के पानी बजबजात रहे, बदबू से माहौल गुमसाइल रहे। घर के ओसारा में मुर्गा-मुर्गी के दरबा बनल रहे आ मुर्गा-मुर्गी चोथ हगल चारू ओरि देखाई देत रहे। ओसरा में दू-तीन गो बकरी, खोसी कटहर के पत्ता खात रहलीं सन आ ओंकनी के लेड़ी आ मूत ओहिजा पड़ल देखाई देत रहे। दोसर कोना में बरमदा के नीचे ध इल रहे बतख के दरबा आ उहें दरबा के नीचे बइठल बतख पेंक-पेंक करत रहली सन। बरमदा में घुसला के बाद राजू बहरी कोठरी में चौकी पर सूतल सिद्दीकी चाचा लगे गइलन।

जिनगी के सभ कमाई आ पेंसन के पइसा के डोनेसन दे के इंजिनियर बनवनी। नोकरी करे लगलन। दुबई गइलें। बाबू हो, इंजिनियर बनला के बाद कहवाँ तऽ हमार सहारा बनतनऽ अब तऽ झाँकियों पारे एने ना आवस कि चलीं, तनी अब्बा के हाल जान लीं। शादी के बाद उनकर मेहरारू, साला, साली, सास आ ससुर उनकर परिवार हो गइल आ हमनी पराया।

चाचा के कोठरी बड़ा गुमसाइले बसात रहे। एइसन बुझात रहे कि कोठरी के खिड़की बंद भइला के चलते घाम भीतरी आवते ना होखे आ बदरी के मउसम के चलते घर फोकराइने महकत रहे। बिछावन के हालत अइसन रहे कि पसेना के बदबू नाक में सीधे ढुकत रहे आ मच्छरदानी के दिनों में टाँगल मजबूरी रहे काहे कि मच्छर के प्रकोप बड़ा भयंकर रहे। मच्छरदानी में झाँकते राजू चाचा के 'सलाम' कइले। जवाब में चाचा कहले 'जीअ'।

सिद्दीकी चाचा के उमिर 70-72 साल के होई। बिहार सरकार में 'दफ्तरी' के पद पर काम कइले आ रिटायर भइला पर कुछ दिन तक उहे एगो यतीमखाना में चार पाँच साल तक ले काम कइले। देह-दवासा आ कद-काठी से लंबा चौड़ा रहले चाचा। बाकिर चाची के पिछला साल गुजर गइला के बाद चाचो बिछावन ध लेले रहलन। चाची के मरला के बाद गवे-गवे चाचा बेमारी के चपेट में पड़ गइलन। राजू उनकर इ हाल पहिलका बेर देखत रहस। चाचा के गोड़ थारी बइठल राजू चाचा से पूछल।

'का चाचा कइसन बाड़?'

चाचा कहलन – 'अल्लाह के फज़ल बा! केहू तरह जिअत बानी। देखऽ अल्लाह के कब बोलावा आवता' चाचा बोलत-बोलत फफक पड़लन।
'का कहीं बाबू? तू तऽ बम्बई चल गइलऽ बाबू हो तू तऽ कबो-कबो आइयो जालऽ, हालो पूछ ले लऽ। इहाँ तऽ हमार चार गो बेटा लोग बाड़े। बड़कु असलम घर के करकरे के चलते दोसरा ठाँही किराया के घर में रहत बाड़े। छोटकु 'छोटे' ठीकदारी करत बाड़े। दूसरकू असगर आ तीसरू मुन्ना में साँप आ नेवुर के झगड़ा बा।

ए बाबू, तोहार संघतिया 'मुन्ना' दुबई से साल दू साल पर आवेलें बाकिर शादी भइला के बाद उ तऽ ससुरारीये में बस गइलन। महतारी के मरला के बाद अब तऽ फोन-फान कइले बंद क देलन। अब इहाँ उनकर केहू नइखे बाबू। तू तऽ जानत बाड़ऽ 'मुन्ना' के कइसे पढ़वनी। जिनगी के सभ कमाई आ पेंसन के पइसा के डोनेसन दे के इंजिनियर बनवनी। नोकरी करे लगलन। दुबई गइलें। बाबू हो, इंजिनियर बनला के बाद कहवाँ तऽ हमार सहारा बनतनऽ अब तऽ झाँकियों पारे एने ना आवस कि चलीं, तनी अब्बा के हाल जान लीं। शादी के बाद उनकर मेहरारू, साला, साली, सास आ ससुर उनकर परिवार हो गइल आ हमनी पराया। आजू एक-एक पइसा ला मोहताज बानी, ... कहत चाचा के लोर टप-टप चुअत रहे आ खाँसी आवे लागल।

लोर पोछत चाचा, तकिया पर से मुड़ी उठा के आपन कपड़ा सरियावत, उठ के बइठलन आ कहे लगलन ऐ बाबू! मुन्ना के इ चाल देख के तोहार चाची बहुत सोंचत रहली आ सोचत-सोचत अल्लाह के लगे चल गइली आ हमरा छोड़ गइली इ चारू जाने के बात, एकनी के मेहरारूसन के खोबसन सुने ला।

साँझ लौका के बाद गदबेरा खतम होते चाचा के तीसरकी पतोह एगो लालटेन जरा के कोठरी में ध गइली। ललटेन के अंजोरा में राजू चाचा के मुड़ी टोवलन, तनी गरम बुझाइल बोखार चढ़त रहे, खाँसी रुक-रुक के आवतो रहे। बुढ़ापा के बेमारी सभ बेमारी से बड़ होला। पते ना चले के कब का हो जाई? चाचा बतवलन कि दवाई चलत बाऽ, खोखी वाला दवाई पिअले बानी।

गवे-गवे रात के आठ बजत होई, लगे के मस्जिद में अज़ान भइल रहे। एही समय चाचा के तीनु लइका लोग काम से लउट के आइले आ संगे-संगे उनकर बेटी दामाद। चाचा आपन दूनू बेटियन के बिआह लगही के महल्ला में क देले रहलन।

कोठरी में ढुकते बड़की बेटी 'फरजाना' पूछलीं, 'का हो अब्बी कइसन बाड़? आदाब!'
चाचा कहले – 'ठीके बानी बेटी!'
फरजाना फेर कहली, 'हो अब्बा! जान ताड़ हम एगो जरूरी काम से इहाँ आइल बानी। कलकी रात ख्वाब में अम्मी आइल रहे आ तोहरा समेते सभकर हाल-चाल पूछलीं। बाकिर उनका चेहरा से बुझात रहे कि उ कवनो परसानी में पड़ गइल बाड़ी। उनकर इह हालत से बुझात रहे कि अम्मी ठीक से नइखे। आखिर अम्मी के इ ख्वाब के मतलब का भइल?'

'हम तऽ अब्बी! सवेरे उठते बड़का भाईजान के फोन क के बतवनी। उ कहलन कि साँझ के घरे आव सन उहे अब्बा लगे इ बात करल जाई। अब्बा हो! हमरा बुझाता अम्मी के इ परसानी दूर करे ला 'सदका' करे के चाहीं। अइसन कइल जाव कि काल्हे जुम्मा के दिने यतीमखाना में पोलाव आ गोश्त बनावा के भेज दिहल जाय उहाँ सभे यतीम खाई लोग। आ कुछु जाकात बाँट

दिहल जाइ तऽ तनी अम्मी के रूह के सुकून मिली।'

राजू ओहिजा बइठल इ कुल्ही बात बतकही सुनत रहलें। बतकही राजू के भौचक्का करत रहे। उनकर अचरज इ चीज से रहे कि सिद्दीकी चाचा के लइका लइकी के चाचा के बोखार आ बेमारी के कवनो चिन्ता फिकिर ना रहे। चाचा के तत्काल इलाज के जरूरत रहे, इंतजाम करे के जरूरत रहे एह पर केहू धेयान ना देत रहे जबकि अम्मी के ख्वाब पर बड़ा धेयान रहे। अम्मी जे इ दुनिया में ना रहली, बाकिर उनकर ख्वाब, उनकर रूह के चैन ना रहे इ चीज उनकर लइका लइकी के फिकिर में डाल देले रहे। आ 'सदका' करके इ लोग आपन जिम्मेवारी से बचे के रास्ता खोजत रहस।

बेटा बेटी के बात में चाचा के हँ में हँ मिलावल मजबूरी रहे .... कर का सकत रहस? इहे लोग के हँ में हँ मिलावत चाचा राजू के ओरि देखत रहस ..... अइसन बुझात रहे कि चाचा के आँख बोलत होखे –

"..... कि जिअत इन्सान के केहू के फिकिर नइखे ओकर केहू सेवा भाव नइखे कर सकत, दिन में केहू झाँकि पारत नइखे, दवाई खरिदे ला पइसा ना, सेवा के डर से बेटा किराया में रहत बाड़े, एगो बेटा सारा पइसा खर्चा करावे के ससुरारी के सेवा में लाग गइलें, पतोह चाय देवे में बाप-बाप करत बाड़ी सन, एगो गंजी, लुंगी साफ करे वाला केहु नइखे, बेटी अपना घरे बस गइल लोग बाकिर मरल इंसान के ख्वाब के पूरा करे में हमार इ औलाद मिटिंग करत बा लोग ....."

इ कुल्ही देखत ..... राजू उहाँ सब के आदाब करत, आपन घर खातिर निकल गइलन। रात के अन्धरिया भइल जात रहे ....।

■

अनुदित कविता

विनय कुमार मिश्र

रवीन्द्रनाथ टैगोर के कविता 'Where the Mind is without fear' के भोजपुरी अनुवाद

रहियो उहे देशवा में,
जहवाँ डर के कउनो ना रहे नजारा।
गर्व से मस्तक ऊँचा रहे,
सबके खातिर बहे ज्ञान के धारा।।

समुचा देश एके रहे,
ना नफरत से छूटे भाई चारा।
आपन देश अपने रहे
सांच के रहे बोलबाला।
निमन कार के आसा में
रहे सभन के भागीदारी।
देशवा के मुख्यधारा में
सिंचित रहे फुलवारी।।
करनी और कथनी में,
बनल रहे तालमेल।
बिना जगवले देश के
संभव नइखे इ खेल।।

व्याख्याता अंग्रेजी विभाग,
जी.एम.एच.पी. कॉलेज, बगहा
जिला-प. चम्पारण, बिहार

अनुवाद — **रामबिहारी ओझा 'रमेश'**

चित्त जेथा भयशून्य उच्च जेथा सिर

दिल में भय ना रहे जहाँ सिर ऊँच रहे जन के
जहाँ ज्ञान उन्मुक्त, भेद ना रहे बुद्धि-मन के

जहाँ काटि राखल न जा सके माँ धरती के तन
क्षुद्र दिवारन के घेरा में बँटे न घर-आँगन

जहाँ सुवचन-सुवाक्य मधुर निकसे अंतरतर से
उछलि चले निर्बाध तरंगित कल-कल निर्झर से

देश-देश में दिशा-दिशा में कर्मधार धावे
सिद्ध करे पुरुषार्थ, निरन्तर सहस मुखन्हि गावे

जहाँ तुच्छ आचार-आचरन के सूखल मरुस्थल
बुधि-विचार के सहज स्रोत के कबो न सके निगल

खण्ड-खण्ड कइ सके न जे मनु के पौरूष-बल के
रवाँ हईं नेता आनन्द-विचार-कर्मफल के

हे करुणाकर पिता, तनिक निष्ठुर आघात करीं
हमनी के भार त जगाईं ओही सरग धरीं।

मूल कवि - कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर

■

गीत — **सुरेश गुप्त**

पेटवा के आग

पेटवा के आग पापी कब ले जराई,
हमरा सजनवा के देसवा छोड़ाई।
बड़ी गरीबी लउकल जबसे अईनी करके गौना
घर में तनिको खरची-नइखे, ना लकड़ी, ना लौना
देहिया पर सुभइत लुगरी ला तरसत बानी कबसे
अचकल पचकल हंड़िया पतुकी टूटल खाट बिछौना
रहे सब देख हमरा आवेला रोआई
हमरा सजनवा .....
पटना जइहें, दिल्ली जइहें भा जइहें लुधियाना
भगिया ले जाई जहवाँ के लिख देहल बा दाना
उहवाँ से पाती के साथे मनिआर्डर जे भेजिहें
लइकन के इस्कूल पठाएब के मारी तब ताना
सोची ले सुख के दिनवा कहियो त आई
हमरा सजनवा .....
डर लागे ला कइसे रहिएँ सहर अकेला जा के
नगर कहीं ना रख ले उनका अपना में ओझरा के
पेट के चिन्ता एक ओरिया बा दोसर ओरिया सइयाँ
जिनगी अब काटे के बाटे अपना के समझा के
केकरा देखाईं अपना गोड़ के बेवाई
हमरा सजनवा .....
सुनी लें मजदूर कमा के जे बाहर से अइहें
नसाखुरानी डाकू सब के चक्कर में पड़ जइहें
रस्ते पेड़ा आँख देखइहें खाकी वर्दी वाला
मजदूरन के मजबूरी पर तरस तनिक ना खइहें
रेले में लूट लीहें सगरी कमाई
हमरा सजनवा .....

गैस लाल चौक, मु. पुरानी गुदरी,
पो. बेतिया - 845438
जि. - प. चम्पारण (बिहार)

कविता

ओ.पी. अमृतांशु

माई के दुलार-चुचुकार हो

माई के दुलार - चुचुकार हो
भूली गईलऽ दु:खवा के मार! ये बबुआ।

दिहलीं जनमवा दरदिया के सहलीं,
सउरी में सेई के सोहरवा गववलीं,
रहे नाहीं सेनुरा सिंगार हो
भूली गईलऽ दु:खवा के मार! ये बबुआ।

कवरे खीआईके दुधवा पिआइके,
भुखलीं जिउतिया, कायावा जराईके
पी गईलीं लोरवा के ढार हो
भूली गईलऽ दु:खवा के मार! ये बबुआ।

कोखवा के हुकवा दरदिया समाईल,
कलपेला रोंआवा करेजा बिधुनाइल,
तेलवा लगाई बा उधार हो
भूली गईलऽ दु:खवा के मार! ये बबुआ।

जाए के घरी बा आइल बोली लटपटाईल
आजा रे सुगनावा जिया अंईठाईल
ना त नोच खईहें चिल्हावा सियार हो
भूली गईलऽ दु:खवा के मार! ये बबुआ।

मरलस महंगिया

टूटल कमरिया के हड्डी
रे हाय! मार मरलस महंगिया

भरपेट भोजनवा के आस में
खटिला घमवा-बताश में
हड्डिये पे होखेला कब्ब्डी
रे हाय! खखड़ीआइल ठटरिया।

छछनेला रोवेला बालकवा
सपना भइल दूधा-भातवा
पियराइल बबुआ के बड्डी
रे हाय! जहुआइल जीनिगिया।

फटही लुगरिया मेहरिया के
अधमरा जीउवा महतरिया के
ठेकल करेजवा में ठंडी
रे हाय! रे बुताईल बोरसिया।

महँगी के धार-मजधार में
लागे ना नईया किनार में
केहू लुटावेला गड्डी
रे हाय! केहू मरे भूखमरिया।

टूटल कमरिया के हड्डी
रे हाय! मार मरलस महंगिया

मो. 09013660995

लघु कथा

गोरख प्रसाद मस्ताना

मुँहबाई

काकही ए भाई हमरा त मुँहबाई ध लिहलस, अक्किल के परदा थरथराए लागल, बुद्धि के बिलाई के हगुअइनी ध लिहलस, आ बाक ..... मरदवा, खाली बुझउवले बुझइबऽ कि बातो बतईबऽ, परमेसर भाई टोकले त हमरा कुल्ही बात बतावहीं के पड़ल, त सुन ऽ एक दिन हम एगो कवि सम्मेलन में भाग लेवे ट्रेन से जात रहनी। भीड़-भाड़ त रहे बाकी केहुनी से ठेलत-ठेलत भीतर घुसीए गइनी आ सट से एक गो सीट पकड़ लिहनी। पाँच मिनिट में मियाज अस्थिर भइल त कविता के डायरी निकाल के पढ़े लगनी। एतने में एगो जवान गरीब के लइकी जवन लोथ रहे घीसीट-घीसीट के सामने चलत लउकल। हाथ पसेरले भीख माँगत रहे। पाछू-पाछू दस बारह बरिस के एगो लइको कटोरा लिहलें चलत रहे। लड़की जवान ऊपर से लोथ ओकर जिनिगी कइसे कटी एही में तनी देर ला मन में विचार पवड़े लागल। ए बाबू रोपिया दीहीं बाबू हमनी के गरीब हई। हमार कवि हिरदय दया के दरियाव में गोता खाये लागल आ हम पाँच गो रोपेया ओकरा हाथ में धर दिहनी। उ दोसरा ओरी बढ़ी के भीख माँगे लागल। आ हम ओकरा जिनगी के दुख दरद पर कविता रचे में मगन हो गइनी। एतने में ट्रेन धीरे होखे लागल। हमार स्टेशन जहाँ कवि सम्मेलन रहे, आ गइल। हम झटके से उतरे लगनी कि देखऽतानी उ लोथ लड़किया आ ओकरा संगे के लइका खिलखिलात गाड़ी से उतर के भागे लागलन सन। इ दिरिस के देखत हमरा त अकबकाई ध लिहलस। इ का, हमार मन कहलस कि हम ओकनी के दउर के गरदन ध ऽ लीहीं। एइसन धोखा! हम आँख किचकिचाये लगनी आ ओकनी के आँख से ओझल हो गइले सन। हे भगवान! केह तरे केहु लोथ लाचार के भरोसा करी मदद करी इ दूनू त असलीयो गरीब के राहता बन्द कर दिहें सन। हे भगवान! तू ही सचका लोथवन के पत रखिह ऽ। इहे सोचत हम नया कविता के रचना में अझुरा गइनी।

गुमान

साँचहू धन के धाह सबका से ना अड़ाला। एकर धाह पहिले बुद्धि के जरावे ला फेरू विवेक। रामरतन के घरे बाढ़ के पानी नीयन धन के बढ़न्ती होखे लागल। बँगला, अटारी सब दनादन, बाकी इहो साँच बा कि भगवान कुछु देले त ऽ कुछ लेइ ओ लेलें। पता लागल कि धन के बाद में बियाज के कमाई बा, उहो रोआ के, गरीबन के, लाचारन के, मजदूरन के, दस परसेन्ट के घेरा में घेराइल राम रतन के दुनिया सिक्का के गोलाई में अइसन घेराइल कि माई, बाबू, भाई, बहिन सभे छूट गइल। बाँच गइल मेहरारू आ बाल बच्चा, त सभी उल्लू हो गइल। सुरसती माता गइली, लक्ष्मी आ गइली। संतुलन बनावे में बेचारे रामरतन अइसन अझुराइल बाड़े कि मामला सझुरात नइखे। आखिर सझुराओ त कइसे। ओह में गुमान के गाँठ जे लाग गइल बा।

काव्यांगन
पुरानी गुदरी, महाबीर चौक, बेतिया,
प. चम्पारण, बिहार, मो. 09431601682

कवि एक रंग अनेक

रामजीत राम

मारता अमीरी

मारता अमीरी गरीबवन के खाके।
पानी बिनऽ मछरी मुवेले छपिटाके।।
धनवा! ईमानवा से बढ़ि के पुजाला।
मेहनत तऽ कउड़ी के मोल से किनाला।
गदहा नियर खटे जाँगर ठेठाके।
पानी बिन .....।।

कबले! हतियारसन के तमगा बँटाई।
औलाद भारत माँ के गोली से भुनाई।।
छिछियाला गली-कूचा पोंछि सुटुकाके।
पानी बिन .....।।

कबले इन्सानियत बन्हकी धराई।
जाने कब सचहूँ के रामराज आई।।
मारताड़े पानी अस खुनवा जरा के।
पानी बिन .....।।

गारी फजीहत रोज-रोजे के उठवना।
अदमी भइले इहाँ सुअरि के छवना।।
छछने गरीबवा अमीरवन के मार से।
पानी बिन मछरी .....।।

गमछा

राणा के जान रहे जइसे भाला बरछाऽ।
हम भोजपुरियन के शान हउवे गमछाऽ।।

भोर भिनुसरवा सुनि, मुरुगवा के बोली।
साते नींन सूतलो पर, आँख देलन खोली।।
खेतवा की ओर जालन, बाँधी माथे पर गमछाऽ।
हम भोजपुरियन के .....।।

खेत जोते चली देलन, लेके बैलऽ के जोड़ी।
साँझ होत आवेलन, घरवा की ओरी।।
हाँथ गोड़ धोइके, मुँह पोछलन लेके गमछाऽ।
हम भोजपुरियन के .....।।

मंगला चरण सखिया, गावेली सब अंगना।
पिया खातिर पीयर भइली, अइहन सजना।।
परीछेलन लावा भइया, धई माथे पर गमछाऽ।
हम भोजपुरियन के .....।।

चउका पुराला दुलहिन, चउका पर आवेली।
दुलहा संग दुलहिन, रसमऽ पुरावेली।।
सात फेरा लेवे खातिर, गाँठ लागेला गमछाऽ।
हम भोजपुरियन के .....।।

.....।।

सम्पर्क : 1/सी/4-सिमला शतधरा रोट (एक्सटेन्शन), रिसड़ा हुगली (प.बं.) 712249
मो. 09748826189, 08981101057

निबन्ध

विश्वकवि रवीन्द्र समान अब भी विश्व में कोई नहीं - मैथिलीशरण गुप्त

कवीन्द्र रवीन्द्र के उदय बंग साहित्य वदे सूरज के समान मानल गईल बा। इहाँ के प्रकाश के पहिले राजाराम मोहन राय बंगला के गद्य के सांचा में ढालत रहीं, विद्यासागर जी भाषा के परिस्कार आ परिशुद्धि करत रहीं, बंकिमचन्द्र, उपन्यास अउर प्रबन्ध के सृष्टि करत रहन। माईकेल मधूसूदन काव्यन के सर्जन करत रहन बाकिर एह सभ लोगिन के एके साथे प्रयास भी रवीन्द्र के बिना अंजोरिया ना दे सकल।

रवीन्द्र नाथ के बचपन कठोर अनुशासन में बीतल रहे। ढेर धनी के बेटा भईला का बावजुद साधारण लईका मतिन घर के नौकर - चाकर का साथे बचपन बीतल। घरे पर सभ विषय के टीचर लोग के व्यवस्था इहाँ के पिताजी कईनीं। पुस्तक-ज्ञान का साथे संगीत आ पहलवानी भी सीखत रहन रवीन्द्र बाबू। कविता के भी अभ्यास चलत रहे। साते वरिस के उमिर में पामर छंद में कविता लिखईल। महर्षि देवेन्द्रनाथ बोलपुर में आपन साधना-भूमि बनवले रहीं। रवि जी अपना पिता जी का साथे हिमालय घूमे खातिर गईनीं। इहाँ का प्रकृति परिचय का साथे संस्कृत आ व्याकरण भी पढ़नीं। एकरा बाद सोरह वरिस के उमिर रहे रविबाबू विलायत गईनीं आ संतोष ना भईल ग्यारह वरिस का बाद इंगलिश शिक्षा के नया-नया अनुभव का साथे देश वापिस हो गईनीं। कुछ दिने के बाद दोबारा विलायत जाये के मौका मिलल आ अबकी बार यूरोपिय आ जर्मन संगीत में दक्षता प्राप्त करके अईनीं। लगभग 30 वरिस के उमिर होई, सियालदह में रहके जमींदारी के काम देखे लगीनी। एह काम में इहां के किसानन आउर साधारण लोगिन का लगे आवे के अवसर मिलल। जेकरा चलते रवि का काव्य सृजन में दीया मिलल। जमींदारी के तीन गो केन्द्र रहे जहवाँ पदमा नदी का हेल के जाए परत रहे। 10 बरिस तक पदमा का सानिध्य में बीतल आ 'सोनारतरी' के रचना पदमा के ही गोदी में भईल। एह काव्य में बुद्धिमुलक आध्यात्मिक भाव बा। बंगाल नदियन के धाम ह रवीन्द्र नाथ टैगोर के ढेर कवितन में नदी के रमणीय दृश्यन के संगठन बा। पश्चिमी आलोचक लोग रवीन्द्र के नदी के कवि मानेलन। जैसे कि कालीदास पर्वत के कवि रहन वैसे रवीन्द्र नदियन के कवि हवन। सन् 1905 ई0 बंग-भंग के अशुभ घड़ी आ गइल। रवीन्द्र निठाह स्वर में ओकर विरोध कईलन। आ अपना प्रस्तुति गान आउर कविता का माध्यम से सरकार के एह खराब काम के सघन विरोध कईलन बाकिर राजनीति उनका अनुकुल ना लागल एह से शांति-निकेतन में आ के काव्य-साधना में लाग गईलन।

रवीन्द्र बाबू के मैकाले के शिक्षा-पद्धति प्रिय ना लागल आ कलकत्ता विश्वविद्यालय से इहाँ के घृणा ले रहे। एह अपना प्राचीन पद्धति के अनुसार अपना पिता के साधना भूमि बोलपुर में शांति-निकेतन के स्थापना कइनीं। अब ऊ निकेतन विश्व-भारती में परिणत हो गईल। शांति-लाभ खातिर रवि बाबू अपना के भगवान के चरनन में समर्पित कऽ देनीं। आ ओकरा प्रसादी स्वरूप 'गीतांजलि' लिखाइल। गीतांजलि कवि के मर्मान्तक (मर्म के छूए वाला) शोक के फल ह। गीतांजलि के पढ़न के सुन के रवीन्द्र के परम स्नेही मित्र सी0एफ0 (दीनबंधू) एतना मुग्ध आ प्रभावित भईलन कि उनके प्रयास से गीतांजलि के रूप अंगरेजी में परिणत हो के नोबुल पुरस्कार से पुरस्कृत भईल।

हालाँकि एह खातिर एण्ड्रूज के ढेर सिफारिस करेके परल रवीन्द्र बाबू से इहाँ के अंग्रेजी रूपांतरण खातिर तइयार ना रहीं। प्रथम महायुद्ध के टाईम कवि रवि राजनीति के समरभूमि में कुद गईलन। भारतीय वाणी के देश देश में पहुँचवलन। जालियांवाला बाग हत्याकांड आ रॉलेक्ट एक्ट के विरोध में सरकार द्वारा दिहल गइल सभी उपाधियन के स्वाभिमानी कवि त्याग देहलन बाकिर रचना अवाध गति से चलत रहल। शिल्प-निपुणता का दृष्टि से - कल्पना, चैतालि,

क्षणिका, तपति गीतिमाल्य इत्यादि रवि बाबू के प्रसिद्ध ग्रन्थ बाडीसन। बलाका, पलातकला, पूरवी, शिशु, भोलानाथ महुआ, पुनश्च इत्यादि विशेष प्रसिद्ध काव्य बाड़ीसन। गोरा, आँख की किरकिरी, नौका डूबी, शेार कविता आदि ढेर प्रसिद्ध बा।

रचना के सीमा एहिजे तक ना रहल बलुक नाट्य-ग्रन्थ, गद्यनाट्य, प्रबन्ध, जीवन-कथा, दर्शन, भाषा-साहित्य, पत्रावली विधा, धर्म, चित्र सम्बंधी अनेकानेक रचना बाड़ीसन। भारते ना विदेश में भी इहाँ के चित्रकला के विशेष स्थान बा। 'रवि बाबू मेरिट के सेन्टर रहीं' सभ विवरण दिहल असम्भव बा। अभिनेता भी रहीं। उच्चकोटि के दार्शनिक रही सौन्दर्यवादी रहीं, उपनिषद के पंडित रहीं। रवीन्द्रनाथ संस्कृत साहित्य से भी अनधा प्रभावित रहीं। मेघदूत रविबाबू के बहुते प्रिय रहे। हिन्दी कवियन में विद्यापति, कबीर आ सूरदास से रवि के पूरा परेम रहे। अपना कवि-कर्म द्वारा आजिवन चाहे आजो प्रेम आ श्रेय के दान मिलता। सौन्दर्य के दृष्टिकोण 'उर्वशी' इहाँ के श्रेष्ठतम कृति हऽ।

बापू के साथे रवि के अत्यंत अंतरंगता रहे। भारत वर्ष के सभ भाषा के रचयिता रवि से प्रभावित बाड़न। (एही से यह सुप्रसिद्ध भोजपुरी पत्रिका में ई लेख के श्रेष्ठ स्थान बा।)

रविन्द्र नाथ टैगोर आचार्य रहीं, विद्यासागर रहीं, सिद्ध अध्यापक रहीं, प्रभावशाली रहीं। इहाँ के बाहरी आ भीतरी से गुरुत्व आ देवत्व झलकत रहे। एही से गाँधी जी के साथे सभे गुरुदेव से सम्बोधित कईल। अकेले रविन्द्र के रचना संसार के कवनो भाषा के श्रेष्ठ साहित्य से सामना करे के समर्थ आ शौर्य राख ता भले ही इहाँ के कवनो महाकाव्य के रचना ना कइनीं। रविन्द्र आधुनिक युग के सर्वश्रेष्ठ छायावादी आ रहस्यवादी कवि बाड़न।

गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर कविन्द्र रहीं, विश्व कवि रहीं।

(डॉ. देवव्रत चौबे)
दर्शन एवं धर्म विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
(भोजपुरी स0 भावानुवाद)

पुस्तक समीक्षा

अविनाश कुमार पाण्डेय

प्रश्नगत चम्पारण

प्राध्यापक अउरी पत्रकार अरविन्द नाथ तिवारी के किताब 'प्रश्नगत चम्पारण' साहित्य के साथे-साथे सामाजिक दृष्टिकोण से भी एगो अनमोल धरोहर बा। इ किताब में इनके द्वारा आपन उ तमाम बढ़िया लेख संकलित कईल गईल बा जवन कि पूर्व में चौथी दुनिया साप्ताहिक में छप चुकल बा। इ किताब में चम्पारण के तमाम सामाजिक, राजनैतिक अउरी आर्थिक समस्या के साथे-साथे जंगल, बाघ, अपराध के साथे ही तत्कालीन समस्या के भी पूरा बेबाकी के साथ उठावल गईल बा। इ लेखक के पहिला पुस्तक बा। प्रुफ आ कुछ प्रकाशनिक त्रुटि के छोड़ देहल जाये त इ चम्पारण के लोग आ जनजीवन के आईना बा। बगहा जइसन छोट कस्बाई शहर से इ किताब के प्रकाशन चम्पारण साहित्य परिषद द्वारा भईल, इ ज्यादा महत्वपूर्ण बा। उहवे पत्रकार अरविन्द नाथ तिवारी में भी एगो संवेदनशील लेखक के गुण विद्यमान बा। कुल मिलाके एगो अच्छा प्रयास बा। छोट जगह से छपल 'प्रश्नगत चम्पारण' के साहित्य के एगो नया एवं तरोताजा संभावना के रूप में देखे के चाही।

रतनमाल, बगहा -1,
प. चम्पारण, बिहार

भोजपुरी लिखीं
भोजपुरी पढ़ीं
भोजपुरी बोलीं।

उपन्यास समीक्षा

डॉ० कुमार विरल

पूर्वी के धाह में आह

– जौहर शाफियाबादी

कवनो व्यक्तित्व पर कलम चलावल ओसहीं होला जइसे कवनो सर्जन मस्तिष्क के आपरेशन करेला। कवनो बारीक नस कटा गइला से पक्षाघात तक हो जाला, उहो जवन व्यक्तित्व लोक में मुँहा-मुहीं फेंटात होखे। मनुष्य में अंधकारमय पक्ष अउर उज्जवल पक्ष दूनो होला। कलमकार के चेतना समाज के सुन्दर बनावल होला एह से अंधकार पक्ष के चर्चा के छोड़लो देखल जाला। जइसे महाकवि तुलसीदास जी के 'रामचरितमानस' में राम के उज्जवल पक्ष गोचर बा। नायक होखे खातिर का-का गुण होखे के चाहीं, ई सब बात साहित्य शास्त्र में लिपिबद्ध बा। तबो महेन्दर मिसिर के नायक बनावे के उतजोग भोजपुरी साहित्य में देखाई देता। 'फूलसुंघी' उपन्यास में पाण्डेय कपिल महेन्दर मिसिर के 'पागल प्रेमी' बनवले बाड़न जवन कहाँ तक ठीक बा? उहे जानस, हँ, उहाँ का हलिवन्त सहाय के नायक बनावे के बेलूरा कोशिस जरूर कइले बानी। भावनात्मक कल्पना लोक में जाके जाति बीज अवचेतन में जमता। हलिवन्त सहाय के पलायन देखा के त्याग के इन्जेक्शन देके नायकत्व आ कोरा भावुकता के भकोल बना देल गइल बा। अद्भूत बा। बस जाति के जंग खाइल तलवार लिहले कूदले प्रसिद्ध उपन्यासकार रामनाथ पाण्डेय जी हाँलाकि इनकर सिद्धहस्त कथा लेखन के बल पाके 'महेन्दर मिसिर' जीवित हो गइले आ चर्चा के विषय में आ गइले। एगो बात विनम्रता से कहल चाहत बानी कि का महेन्दर मिसिर के सांस्कृतिक भावना से ओतप्रोत एगो पूरबी के जन्मदाता ही मानलेल काफी नइखे? का श्रत् चन्द्र चट्टोपाध्याय के देवदास के नायक से बढ़के महेन्दर मिसिर नइखन का? अगर बंगाल में महेन्दर मिसिर के जन्म भइल रहित त शरत् बाबू जरूर उनका के बेजोड़ प्रेम के नायक बना दिहिते। बाकिर बिहार के माटी में जन्मल महेन्दर मिसिर के जीवन के खींचातानी में उनकर चारित्रिक विकास जवना रूप में होखल चाहत रहे, नइखे हो पावल। अब जब तिसरा प्रयास भइल भाई जौहर जी के, त पढ़े के उत्सुकता जागल, आ ई अपना जाने में महेन्दर मिसिर के गड़ल जमीन से उखाड़ के एगो अजबे कहानी में खड़ा करे के सार्थक प्रयास कइले बाड़े। महेन्दर मिसिर के पूर्वी के धाह में ई कथा लिखाइल बा। कबो धाह तेज, कबो मधिम बा। एह से कथाक्रम में एकर व्यतिक्रम देखल जा सकेला।

'पूर्वी के धाह' पुस्तक नेशनल बुक ट्रस्ट से प्रकाशित जौहर शफियाबादी के मन मिजाज से लिखाइल बा। धाह के आह, आ ओहू में पूरबी के पुरवइया से लसलसाइल मन के भाव गंभीर गोचर बा। लेखक एके का मानों, नइखे लिखले कि कवन विधा बा। सीधा कथा बा। शैली हुँकारी भरेवाला नइखें। पहिलके झोंका में फोंका उठल बटोहिया गीत के तर्ज पर मोरे मितवा के गीतवा। लमहर गीत फेटा कसके खड़ बा आ क्रांतिकारियन के मन हरिअर करे खातिर काफी बा। लेखक के अँखिगर कैमरा स्वामी अभयानंद पात्र पर फोकस होता आ बाबा महेन्दर मिसिर पर ठहरता; फेर, ओही में एगो अउर पात्र आवत बाड़े ख्वाजा जाने अली। ई किताब 'हम' शैली धर लेता, बाकिर हड़बड़ी में हराई भूला जाता। कहानी के इलिम जहुआ जाता। आत्मकथात्मक शैली में अगर संपराइत त निकहा उठान पर जाइत। महेन्दर मिसिर कबहुँ लुकार भाँजत

बाड़न आ तुरते काँचे-काँचे कलियन पर भौंरा बनल रस चूसे बदे बएखराइल गीत में डूबत बाड़न। ई साफ बुझा जात बा कि असल में महेन्दर मिसिर का रहले। रसिक, गुंडा, क्रांतिकारी, नोटछपवा वगैरह। कवनो ऐतिहासिक दास्तावेज के आधार नइखे, पात्रन के पक्ष में। तब रवि कवि केनहू ऐने ओने चल जाला। तिल के ताड़ बना देला। अबहींले दू उपन्यास महेन्दर मिसिर के छूये के प्रयास कइलस अउर, अउर ना बनल त अउर बना देलस। अब ई तिसरकी किताब उनका जीवन के छूए के चोराह कोशिश बा। बिहारी समाज के भीतर जाति के नोनी पूरा सामाजिक धरोहर के नींव में लागल बा आ तबे नू ई हालत बा। भसिया, कटारी राम मोची एगो पात्र बा। ओकरा के देखा के जाति विहीन क्रांतिकारी माहौल पैदा करेके चालाकी काबिले तारीफ बा। ई किताब हलिवन्तवा, रिबेलवा जइसन बोलचाल के व्यंग घृणा से उचरल बानी खल पातन के सजाए के रूप में आइल बा। स्वामी अभयानंद महेन्दर मिसिर से किरिया खिअवलन के तू हथिआर मत छूइह। तू जा रंडियन में रम जा आ गवनई के ढोंग रचके आजादी के लड़ाई के आगा बढ़इह। लेखक इहो कहता कि मिसिर जी भगवान, कलयुग के कृष्ण हई। थुम्ही देंके पात्रन के लत्तर अलान पर चढ़ावत लेखक हड़बड़ाइल मांकत ठहरत नइखे। पुरवइया से सनकल पूर्वी के धाह धधकता का? विष्णु महायज्ञ में हिंदू, मुसलमान, सिख लोग भाग लेले। ई सर्वधर्म भाव प्रचारक दलील ठीक बा। आखिर नायक के नायकत्व ओकर चरित्रिक पुष्ट अख्याने से नू होई। कुरान हदीश में व्यक्त देश प्रेम के हवाला देके राष्ट्रप्रेम के भाव जगावल किताब के मुख्य उद्देश्य बा। हलिवन्त सहाय के दारूपिअवा रंडिबाज बतावल गइल बा आ फेर, महेन्दर मिसिर के एगों पेंच के चलते उनकर बात मान के ढेला बाई के बरिआरी उठवा लेत देखावल गइल बा। ढेलो क्रांतिकारी बन गइली। बाबा महेन्दर त नायके बाड़ें। ढेला बाइ कुशल गुप्तचर कादो बाड़ी। पूर्वी गीतन से भरल पूरल किताब हिलकोरा मारत क्रांतिकारियन के बहवले जाता, ना जाने कवना ओर। अपहरण काण्ड में ढेला के अपहरण कर्त्ता महेन्दर मिसिर बाड़ें। देश खातिर कइले अपहरण। 'फूलसुंधी' शब्द अचेतन में पड़ल आ गइल बा, जवन पांडे कपिल के उपन्यास ह कृष्ण बनल महेन्दर बाबा के गणिका पैर छू-छू जुड़ात बाड़ी सन। रसदार पूर्बी के आह से भीतरे-भीतर कटातारी सन।

लेखक सम्प्रदायिकता आ देशद्रोह के खिसिआइल बा आ जगह मिलते ओकरा पर वार करता। मांझी काण्ड से बनारस तक क्रांति के बात करत लेखक क्रांति के नेवता तक विराम लेत बा। लेखक के शब्द में '1857 के आंदोलन के बाँचल-खुचल मनोवैज्ञानिक निशानियों के अँग्रेजी सत्ता पूरी-पूरी नेस्तनाबूद करे के बीड़ा उठा लेले रहे।' जानू दादा जेहादी मिलादी संगठन चला के देश प्रेम के परचम लहरावत दिखाई देत बाड़न। अभयानंद महेन्दर मिसिर के केसर बाई के कोठा तक पहुँचाके दम लेत बाड़न। महेन्दर मिसिर भिखारी ठाकुर के हजाम होखला खातिर चिंतित बाड़े - 'भिखारी ठाकुर हमनियों के मोल एक दिन लागी। आज ना जब जात-जमात ऊँच-नीच से लोग ऊपर उठ जाई।' ई किताब तनि भिखारियों ठाकुर पर धेआन देता। महान सुधारक सामाजिक बदलाव अउर भोजपुरी के भाषा महत्व पर प्रकाश डालत भागत अगर भाषा विज्ञान के ण-स-श-ष-ड़-त्र के भंवर जाल में दम तूरत कथा हाँफत बिआ। लेखक एही लोग के बहाने आपनो भँड़ास छूट के निकलले बा। जवन पचे जोग बा का? अब इहे घोड़-दउड़ में शिवनंदन भगत कूद गइल बाड़े। बाड़े 'गोआर' माने 'गो' एण्ड 'वार'। भिखारी बेचार, हजाम चिचुरा कलकत्ता मे नाँच करत कृष्ण लीला प्रंसंग में चित्रण कइले -

ले दही, दे दही, रात कहाँ रहीं।
रात रहीं संइया लंगे, दिन बेंची दही।।

ई गीत सुन के शिवनन भगतवा समुझ गइलकि ई गोवालिन के उपहास बा बस सीधे लउर कपारे पर। बेचारा ठाकुर हजाम के कादो सुननिहाँ मानहानी के केस कलकत्ता हाईकोट में कर देलेबा। पूरा किताब सुनला का आधार पर बा जवन ऐतिहासिक पुष्ट नइखे। फेर भगत के किताब छपल – 'भिखारी के उलटा हजामत' –

जाति के हजाम भइले, पेशा के नापाक कइले।
हिजरा के गिनती में गइले भिखरिया।।

अब फेर महेन्दर मिसिर बनाम क्रांतिकारी मेल के कथा गाड़ी खुलत बिया। ढेलाबाई मंदिरों बनववली। सात चूहा खा के हज करे बिल्ली चलल। ढेला बाई के मुँहे संस्कृतो बोलवा के, लेखक अपना विद्वता के परिचय देत आगे बढ़ता। कलकत्ता में जहाँ तहाँ गीत गवनई करावत बाकिर असली उद्देश्य क्रांतिकारी भावना के जगावत महेन्दर मिसिर जाली नोट छाप के बिट्रिश साम्राज्य के कादो चह हिलावे लगले। फेर सोना बाई के संगे चानी काटत बाबा महेन्दर कहवले – 'हमरा से छोटी–मोटी, भइली लर कोरिया, हाय रे सँवरिया लाल'।

आ तब भइल सरकारी खजाना के लूट काण्ड। सपना के अधभोर में क्रांतिकारियन खातिर जाली नोट छापे वाला मशीन पकड़ा गइल। गोपीचंद जे सरकारी जासूस रहले एगो गीतो गवले। बेचारा जासूसी करत–करत बाबा महेन्दर से गीतो–गावे के सिख गइल, काहे कि पूर्वी के धाह ओकरो लागल। बाबा के जेहलखनवा देखा देलस। ढेलाबाई से अंतिम भेंट भइल आ बाबा महेन्दर आ गइले अपना घरे। उनका बिरहा सतावे लागल। काहे कि देश आजाद ना भइल। लेखक कबो–कबो डक्यूमेंट के चर्चा भी कइले बा; जइसे, फारसी विद्वान इतिहासकार शेरून मोना खेवानों के वक्तव्य देखाके कसहुँ सिद्ध करे के सिरसासन स्वागत योग्य बा। महेन्दर मिसिर के मन मिजाज में पसिजत पूर्वी के धाह देखाई देता। अगर लेखक उनकर सांस्कृतिक पक्षन के खाली उद्धृत करित त ई किताब अउरी जम जाइत। छपरा शिव मंदिर में शिवलिंग पर गावते–गावते प्राण त्याग करेवाला महान पूर्वी गायक के अंत होला। जे उनकर गीत कर्म के प्रति सच्चा अनुराग दर्शावत बा।

कुल मिला के छपाई–सफाई बेजोड़ बा। लेखक के पात्रन के पक्ष में वकालत भा दलील बड़ा बेजोड़ बा। बाकिरका तर्क से सिद्ध हो जात बा उनकर कथ्य। अनेक पात्रन के गुमनामी के अन्हरिया से निकाल के सबके सामने प्रस्तुत करे खातिर हम मौलाना शफियावादी के साधुवाद दे तानी।

कविता

रामजीत राम

चिपरी पाथऽ

कसहूँ आपन जिनिगी काटऽ,
ए बबुआ तू चिपरी पाथऽ।

एगो चिपरी हाथ से बने,
एगो चिपरी मुँह से बने।
एगो चिपरी चुल्ही जरे,
एगो चिपरी मुँह में जरे।
आग लगे जब चिपरी से
तऽ!
छोड़-छाड़ के चाउर छाँटऽ,
ए बबुआ तू चिपरी पाथऽ। कसहूँ .....

एक चिपरी से धुआँ निकले,
एक चिपरी से धुहा निकले।
एक चिपरी से खाना बने,
एक चिपरी से ताना बने।
चिपरी से जब चिपरे मन,
तऽ!
काट-छाँट के पेवन साटऽ,
ए बबुआ तू चिपरी पाथऽ। कसहूँ .....

एगो चिपरी बाहर सूखे,
एगो चिपरी भीतर सूखे।
एक चिपरी के हाथ निचोड़े,
एक चिपरी के दाँत निचोड़े।
हिहिअइला से थके मन,
तऽ!
कहऽ! हे धरती तू फाटऽ,
ए बबुआ तू चिपरी पाथऽ।
कसहूँ .....

सम्पर्क : 1/सी/4-सिमला शतधरा रोट (एक्सटेन्शन),
रिसड़ा हुगली (प.बं.) 712249
मो. 09748826189, 08981101057

अनुवाद

डॉ. गोरख प्रसाद 'मस्ताना'

रवीन्द्रनाथ टैगोर के कविता Heaven of Freedom के भोजपुरी अनुवाद

Where the mind is without fear and the head is held high;
Where knowledge is free;
Where the world has not been broken up into fragments by narrow domestic walls;
Where words come out from the depth of truth;
Where tireless striving stretches its arms towards perfection;
Where the clear stream of reason has not lost its way into the deary desert sand of dead habit;
Where the mind is led forward by Thee into ever-widening thought and action -
Into that heaven of freedom, my Father, let my counrty awake.

भोजपुरी अनुवाद

जहवाँ कवनो डर ना होखे, माथ रहे हरमेश
खुलल ज्ञान होखे जहवाँ, भगवान! बना दी अइसन देश
कोत घरेलू भाव-गीत ना, चाहीं इहवाँ उठे
देश रहे मजगूत, कबो ना टूकी टूकी टूटे
जहवाँ लोग साँच के गहिराई ले जाके बोले
होखे नीमन काम, अथक मेहनत में मनई डोले
बालू नियर भरल आदत से होखे सभे दूर
सबका हिया-हिया में उजर भाव बहे भरपूर
कवनो काम करी पूरा त बनके करीं उदार
होखे के चाहीं एकरा ला, लमहर भाव विचार
हे सबकर बपसी! दीं आजादी के सुन्नर सरग अशेष
अइसन किरपा करीं रहे जागल हरमेशे आपन देश।

आलेख

नितेश कुमार

भोजपुरी उपन्यास के उद्‌भव आ विकास

आधुनिक भारतीय साहित्य में उपन्यास के विकास ओह भाषा सब में सबसे पहिले भइल जवन अंगरेजी के सम्पर्क में रही सन। अठारहवीं सदी में अंगरेजन आ अंगरेजी से भारत के तटवर्ती प्रदेशन के सम्पर्क होखे लागल रहे। सन् 1757 के प्लासी युद्ध के बाद त सउसे बंगाल ईस्ट इण्डिया कम्पनी का आधिपत्य में आ गइल। सन् 1857 के पहिला भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी आ भोजपुरी क्षेत्र अंगरेजन के विरुद्ध संघर्षरत भइल। एह कारण से हिन्दी आ भोजपुरी क्षेत्र से पहिले बंगला क्षेत्र अंगरेजन आ अंगरेजी से प्रभावित भइल एह से पश्चिम के कथा साहित्य आपन रूप बदलत भारत में सबसे पहिले अंगरेजी के सम्पर्क में अइला से बंगला में आ बंगला के सम्पर्क में अइला से हिन्दी में आ हिन्दी से भोजपुरी में आइल।

अब जहाँ तक भोजपुरी उपन्यास के उद्‌भव आ विकास के सवाल बा त भोजपुरी उपन्यास के उद्‌भव आजादी मिलला के बाद भइल आ भोजपुरी उपन्यास के क्षेत्र में काम करे वाला पहिला उपन्यासकार रामनाथ पाण्डेय भइलन जिनकर पहिल उपन्यास 'बिंदिया' जब 1956 में छप के आइल त एकर स्वागत भोजपुरी क्षेत्र के बड़हन-बड़हन विद्वान लोग कइल। एह विद्वान लोग में प्रमुख रहले-आचार्य शिवपूजन सहाय, राहुल सांकृत्यायन आ प्राचार्य मनोरंजन प्रसाद। 'बिंदिया' कथा वस्तु आ शिल्प के दृष्टि से बहुते सशक्त रचना बा।

भोजपुरी उपन्यास के उद्‌भव आजादी मिलला के बाद भइल आ भोजपुरी उपन्यास के क्षेत्र में काम करे वाला पहिला उपन्यासकार रामनाथ पाण्डेय भइलन जिनकर पहिल उपन्यास 'बिंदिया' जब १९५६ में छप के आइल त एकर स्वागत भोजपुरी क्षेत्र के बड़हन-बड़हन विद्वान लोग कइल।

'बिंदिया' के छपला के बाद सन् 1962 में 'थरूहट के बउआ आ बहुरिया' राम प्रसाद राय (वीरगंज, नेपाल) के प्रकाशित भइल। एह उपन्यास में नेपाल के अंचल में बसल थारू जाति के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन के देखावल गइल बा। एकरा बाद सन् 1964 में राम नगीना सिंह 'विकल' के उपन्यास 'जीअन साह' छप के आइल जवन पर लोग के जीवन पर आधारित एक मात्र उपन्यास बा। सन् 1965 ई. में डॉ. बच्चन पाठक सलिल के उपन्यास 'सेमर के फूल' प्रकाशित भइल जवन ब्रह्मपुर तीर्थ आ मेला के पृष्ठ भूमि पर लिखाइल

बा। सन् 1966 ई. में जगदीश ओझा 'सुन्दर' के उपन्यास 'रहनीदार बेटी' प्रकाशित भइल। जवना के चर्चा भोजपुरी के सुधी पाठक आ लेखक लोग के बीच काफी भइल। एह उपन्यास का बारे में डॉ. विवेकी राय जी के कथन बा कि 'अत्यन्त असरदार इस लघु उपन्यास में आंचलिकता के साथ-साथ मध्यकालीन आदर्शवादी जीवन मूल्यों की जबर्दस्त वकालत है। इसका रोमैन्टिक रूप पाठकों को मुग्ध कर देता है।' एही बरिस अरूण मोहन भारवि के पौराणिक कथा के आधार पर लिखाइल उपन्यास 'परशुराम' प्रकाशित भइल। सन् 1978 ई. में प्राध्यापक अचल के उपन्यास 'सुन्नर काका' छपल। ई आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी उपन्यास बा। एही साल विक्रमा प्रसाद के एगो पहिला यथार्थवादी उपन्यास 'भोर मुसकाइल' प्रकाशित भइल। सन् 1979 ई. में पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह के उपन्यास 'घर होला गाँव' प्रकाशित भइल। ई एगो आंचलिक उपन्यास बा। एही साल विक्रमा प्रसाद के 'मुट्ठी भर सुख' आ योगेन्द्र प्रसाद सिंह के 'फुलमतिया' छपल। ई दूनो उपन्यासिका बा। सन् 1980 ई. में गणेशदत्त 'किरण' के उपन्यास 'धुमिल चुनरी' प्रकाशित भइल। ई उपन्यास एगो ऐतिहासिक कथा पर आधारित बा। सन् 1982 ई. में गणेशदत्त 'किरण' के एगो आउर उपन्यास प्रकाशित भइल 'रावन उवाच'। पौराणिक कथा पर आधारित एह उपन्यास में उपन्यासकार राम के साथे-साथ रावन के चरित्रो के बड़ा उद्दतता के साथे उठवले बाड़न। एही साल रामनाथ पाण्डेय के दोसरका उपन्यास 'जिनगी के राह' प्रकाशित भइल, जवन प्रगतिवादी आ जनवादी धारा पर लिखईल उपन्यास बा। एही साल चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के बाल उपन्यास 'खैरात' प्रकाशित भइल। एही साल भगवती द्विवेदी के एगो उपन्यासिका छप के आईल 'दरद के डहर'।

सन् 1982 ई. में अशोक द्विवेदी के उपन्यास 'सनेहिया भइल झाँवर' प्रकाशित भइल। ई एगो प्रेमकथात्मक उपन्यास बा। एही साल यथार्थवादी धरातल पर लिखाइल उपन्यास 'बगावत' भगवती प्रसाद द्विवेदी के प्रकाशित भइल। सन् 1983 ई. में डॉ. नर्वदेश्वर राय के उपन्यासिका 'कवाछ' छपल। महाभारत युद्ध के परिणाम से घबड़ाइल धृतराष्ट्र के मनोवैज्ञानिक प्रस्तुतिकरण एह उपन्यासिका में कइल गइल बा। ई एक तरह से आत्मकथात्मक उपन्यासिका बा।

सन् 1980 ई. में गणेशदत्त 'किरण' के उपन्यास 'धुमिल चुनरी' प्रकाशित भइल। ई उपन्यास एगो ऐतिहासिक कथा पर आधारित बा। सन् 1982 ई. में गणेशदत्त 'किरण' के एगो आउर उपन्यास प्रकाशित भइल 'रावन उवाच'। पौराणिक कथा पर आधारित एह उपन्यास में उपन्यासकार राम के साथे-साथ रावन के चरित्रो के बड़ा उद्दतता के साथे उठवले बाड़न।

सन् 1985 ई. में डॉ. अरूण मोहर भारवि के दुगो उपन्यास प्रकाशित भइल 'राख अउर आग' आ 'करेजा के कांट' ई दुनो उपन्यास जन-समस्या से जुड़ल बा। एही साल गणेशदत्त 'किरण' के उपन्यास 'तोहरे खातिर' छपल। ई उपन्यास मौर्य वंशीय ऐतिहासिक कथा के आधार बना के लिखल गइल बा।

सन् 1986 ई. में सूर्यदेव पाठक 'पराग' के उपन्यास 'अकूत' छपल। ई एगो आदर्शवादी उपन्यास बा। एही साल जगन्नारायण पाण्डेय 'विधुर' के उपन्यास 'परिणाम' छपल। सन् 1988 ई. में गणेशदत्त 'किरण' के एगो आउर उपन्यास ऐतिहासिक पौराणिक आधार पर आइल 'सती के सराप'। मुगल बादशाह

शाहजहाँ के काल पर आधारित ई एगो सती स्त्री के महत्व के उकेरत उपन्यास बा। सन् 1989 ई. में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित एगो ऐतिहासिक उपन्यास कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' के 'मुण्डदान' छपल।

सन् 1991 ई. में प्रवासी भोजपुरियन के जीवन आ संघर्ष पर आधारित रास बिहारी पाण्डेय के उपन्यास 'जहाजी भाई' छपल। एही साल नागेन्द्र प्रसाद कानू के बीरगंज, नेपाल से 'पपिहारा' उपन्यास छपल। सन् 1992 ई. में धर्मनाथ तिवारी के 'कचोट' उपन्यास छपल। सन् 1994 ई. में रामनाथ पाण्डेय के उपन्यास 'महेन्दर मिसिर' छपल। जवन पाण्डेय कपिल के उपन्यास 'फुलसुथी' के कथाधार पर लिखाइल बा। सन् 1995 ई. में राजगुप्त के उपन्यास 'अँजोर साँच के' छपल। सन् 1997 में नरेन्द्र रस्तोगी मशरक के उपन्यास 'कमली' प्रकाशित भइल। जवन छोट कलेवर में बहुते मजबुत कथा शिल्प अपना भीतर समेटले बा। एकर कथा देश भक्ति आ प्रेम से ओत-प्रोत बा। एही साल रामनाथ पाण्डेय जी के एगो आउर उपन्यास छप के आइल 'इमरीतिया काकी'। सन् 1998 ई. में सभापति कुशवाहा के उपन्यास 'कम्प्यूटर के जंजाल' प्रकाशित भइल। एही साल डॉ. बच्चन पाठक 'सलिल' के उपन्यास 'मेनका के आँसू' छपल। एही साल रामनाथ पाण्डेय के उपन्यास 'आधे-आध' छपल। एही साल डॉ. विवेकी राय के उपन्यास 'अमंगल हारी' प्रकाशित भइल। एकर कथावस्तु देश प्रेम से ओत-प्रोत बा। सन् 1999 ई. में गोपाल अश्क के उपन्यास 'फूलवा' छपल। सन् 2000 ई. में भगवती प्रसाद द्विवेदी के लघु उपन्यास 'साँच के आँच' प्रकाशित भइल। सन् 2005 में डॉ. के.डी. सिंह के उपन्यास 'झुबली' छपल आ हीरा प्रसाद ठाकुर के 'चिराग' आ 'लाल चुनरी' छपल। सन् 2006 ई. में डॉ. रामदेव शुक्ल के उपन्यास 'ग्राम देवता' प्रकाशित भइल। ई एगो सामाजिक उपन्यास बा। सन् 2007 ई. में हरेन्द्र कुमार के उपन्यास 'सुष्मिता सान्याल के डायरी' प्रकाशित भइल। ई उपन्यास नया विषय-वस्तु पर लिखाइल बा। सन् 2008 ई. में विक्रमा प्रसाद के उपन्यास 'बात इन्साफ के' प्रकाशित भइल। सन् 2009 ई. में डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव के उपन्यास 'दाल भात तरकारी' प्रकाशित भइल। ई एगो सामाजिक उपन्यास बा। सन् 2010 ई. में डॉ. जौहर शफियाबादी के महेन्दर मिसिर पर केन्द्रित भोजपुरी उपन्यास 'पूर्वी के धाह' प्रकाशित भइल। एकरो कथावस्तु देश प्रेम आ राष्ट्रीयता के भावना से भरल बा।

भोजपुरी

भोजपुरी उपन्यास के अब तक के विकास क्रम पर नजर डलला से ई पता चलत बा कि भोजपुरी उपन्यास अपना एह ऽऽ बरिस में केतना आगे बढ़ल बा। बाकिर एतने से हमनीं के संतोष ना करे के चाहीं काहे कि अभियो समाज के बहुते अइसन पक्ष बा जेकर चित्रण भोजपुरी उपन्यास में भइल जरूरी बा। साथे-साथ गद्य के एह विधा का तरफ महिला साहित्यकारन के झुकाव होखे के चाहीं। जवना के भोजपुरी भाषा-साहित्य-साहित्य संस्कृति के निरंतर विकास हो सके।

सन्दर्भानुक्रम: भोजपुरी साहित्य प्रगति की पहचान
- डॉ. विवेकी राय, पृ. 49

छात्र, स्नातकोत्तर भोजपुरी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय,आरा (बिहार) मो. 08002049617

संस्मरण

अविनाश नागदंश

सत्यार्थी जी आ शांतिनिकेतन

जनभाषा भोजपुरी के नवही अध्येता लोग के ई जान के अचरज होई कि भोजपुरी के लोकगीतन के सभसे पहिलका आउर सभसे बड़का संग्रहकर्ता लोग कवनो भोजपुरी भाषी लोग ना रहे बलुक गैरभाषा भाषी लोग रहे। पहिलका संग्रहकर्ता आ बिबेचनकरता सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन एगो अंग्रेज रहस त सभसे बड़का संग्रहकर्ता देवेन्द्र सत्यार्थी एगो पंजाबी रहस।

जुनूनी संकल्पशक्ति के धनिक, तपस्वी सत्यार्थी जी बीस बरिस तक ले, पाकिट में एगो अधेली नाहियो रहला पर अपना मेहरारू आ बेटियन के संघे एह समूचा उपमहाद्वीप में घूम-घूम के सभ लोक भाषन के चार लाख से अधिका लोकगीत इकट्ठा कईनीं, जवना में भोजपुरी लोकगीतन के संख्यो बहुते बा आ आउरुओ कुछुओ से बहुते जादे बा। कवि, कथाकार, उपन्यासकार, लोकगीत संग्रहकर्ता आ प्रकासन विभाग के पत्रिका आजकल (हिन्दी) के प्रथम सम्पादक सत्यार्थी जी के एह कालजयी, कष्टप्रद साहित्यिक-सांस्कृतिक सेवा के समुचित सम्मान समकालीन समाज त ना दे सकल आ उहाँ के आउर उहाँ के परिवार के जिनगी हरमेसा निरघनेवस्था में गुजरल बाकिर उनका साध ना के मोल समाकालीन सभ जुगनायक लोग समुझल लोग आ सराहल लोग जवना में महात्मा गाँधी, राजगोपालाचारी, नेहरू जी का संघे-संघे कविन्द्र रवीन्द्र नाथ ठाकुर के नाँव सर्वतोप्रमुख बा। काँग्रेस के फैजपुर अधिवेसन में खास क के बोलावल सत्यार्थी जी जब पंजाबी के एगो लोकगीत - 'रब्ब मोया, देवते भज्ज गए, राज फिरंगी दा ....।' जे तरजूई के एगो पल्ला में हमार आउर जवाहरलाल के सभ भाषण ध दिआव आ दोसरका पल्ला में अकेले ई गीत, त एह लोकगीत के पल्ला भारी रही।

गाँधी जी लेखा गुरुदेव रवीन्द्रो सत्यार्थी जी के बहुते मानत रहस आ उनका खानाबदोस जिनगी आउर अनोखा काम के बहुते मानत रहस आ उनका

खानाबदोस जिनगी आउर अनोखा काम के बहुते सराहत रहस। उनका शांतिनिकेतन, जेकरा के सत्यार्थी जी के बहुते लगाव रहे, के दुआरी उनका खातिर हरमेसा खुलल रहत रहे, जवना के एगो कुटिया में उ केतनो दिन ले रह सकत रहस। उनका बारे में माडर्न रिव्यू में प्रकाशित एगो चिट्ठी में गुरूदेव लिखले रहीं, 'उहाँ के भारत के गाँवन में बसल भारत के आत्मा के दिग्दर्सन करावेनीं।' सत्यार्थी जी से गुरूदेव के एतना नेह-छोह के कारण ई रहे कि अपना किसोरावस्था में उहो, बैलगाड़ी पर बईठ के, सगरी बंगाल घूम के, उहवाँ के पल्लीगीत (लोकगीत) बिटोरे के सपना देखले रहस। उनकर उ सपना त पूरा ना हो सकल, बाकिर भावुक अमिर के ओह अधूरा सपना के पूरा होखे के उमेद उनका सत्यार्थी जी के चमकत आँखन के निष्कम्प आभा में लउकत रहे। देस के सभ लोकभासा सन के प्रगति खातिर जुगद्रष्टा रवीन्द्र केतना बेआकुल रहत रहीं एकर गवाह सत्यार्थी जी के दीहल उनकर उ प्रेरणा बा, जवन उनका के

अपना माई भाषा गुरूमुखी पंजाबी में लिखे का ओरो अभिप्रेत कर देलख।

सत्यार्थी जी पहिले हिन्दी, उर्दू आ अंगरेजी में त लिखत रहस बाकिर अपना माई भासा पंजाबी में ना। तब गुरूदेव उनका से कहनीं, 'चाहे तू दुनिया के कवनो भाषा में लिखऽ, तू तालेक ले उरिन ना हो सकऽ, जालेक ले अपना माई भासा में ना लिखबऽ।' गुरूदेव के ई अमर उक्ति ना साल्ही सत्यार्थी जी लेखा एगो बहुते समरथ साहित्यकार के अपना भाईया भाषा में लिखे के अभिप्रेरित कईलख बलुक अनन्त काल तक हर ओह सचेतन प्रानी के प्रेरित करत रही, जेकरा अपना देस के माटी, हवा, पानी आ भाषा से असीम अनुराग होई।

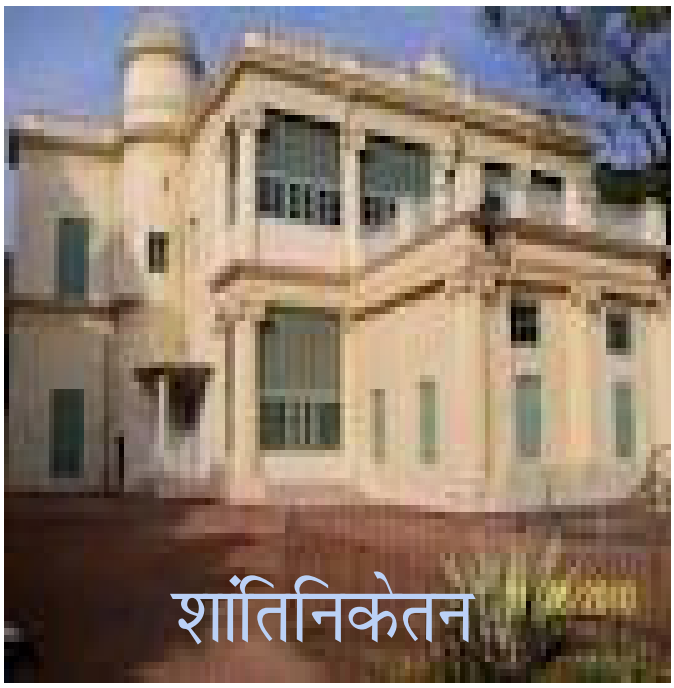

सत्यार्थी जी जब पहिलका हाली संथाल लोकगीतन के एकत्रित करत अपना तपस्विनी अरधांगनी आ गोदी में बेटी के ले के गुरूदेव के शांतिनिकेतन आश्रम में चहुँपलन आ आपन परिचय देत अपना काम के बारे में बतवलन त गुरूदेव के आनंद के सीमा ना रहल। ई 1897 के बात ह। गुरूदेव उनका से पूछलन, 'राउर बेटी के का नाँव ह?'

'कविता!' उ कहलें।

'तोहरा कवि बने खातिर लिखे के जरूरत नईखे!' उ कहलें – 'यू आर फादर आफ पोएट्री।'

गुरूदेव भलहीं ई बात मजाक में कहले रही, बाकिर ईहे बात सत्यार्थी जी के एगो कालजयी लोकगीत संग्रहकर्ता से एगो श्रेष्ठ साहित्यकारो बना दीहल आ ओकरा बाद उहाँ के बिबिध भासन में जवन विपुल साहित्य के सिरजन कईनीं उ भारतीय साहित्य जगत के एगो अनमोल थाती बा। अपना बेहद चर्चित किताब 'धरती गाती है' में सत्यार्थी जी शांतिनिकेतन के बहुते मरमस्पर्सी ढ़ंग से इयाद कईले बानीं। एगो पंजाबी मूल के आदमी के बंगला भाषा के महामानव आ दुनिया में दूगो स्वतंत्र, सार्वभौम देसन के राष्ट्रगीत लिखनिहार गुरूदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर आ उनका शांति निकेतन पर लिखल एगो उत्कृष्ट लेख के भोजपुरी अनुवाद उहाँ के डेढ़ सँउवा बरिस के सुभावसर पर विश्वभारती के एगो पूर्वछात्र आ इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय खुला वि.वि. में भोजपुरी भाषा, साहित्य आ सांस्कृतिक केन्द्र के निदेसक प्रो. (डॉ.) शत्रुघ्न कुमार के अतिथि सम्पादन, डॉ. गोरख प्रसाद 'मस्ताना' के प्रधान संपादन आ उत्साही सम्पादक संतोष कुमार के सम्पादन में प्रकाशित सुप्रतिष्ठित भोजपुरी पत्रिका 'भोजपुरी जिंदगी' के एह कवीन्द्र रवीन्द्र बिसेसांक में छापे खातिर सादर पेठावत, भोजपुरी भाषा के एगो टिटिहरी आपन सरधांजुरी एह रूप में अरपित करत बिया। ■

अनुवाद

मातृ-अभिषेकः रवीन्द्रनाथ ठाकुर

राम बिहारी ओझा 'रमेश'

हे मोर चित्त, पुण्य तीर्थे जागो रे धीरे एइ भारतेर महामानवेर सागर नीरे।

पुनि रे तिरिथिया में जागु चित्त, धीरे-2
महामनु भारत के सागर का तीरे।
रुकि इहाँ आपन बठाइ दूनो बाँहिया
नर देवता के छू ले चरन के छाँहिया
महामोद मने भरि मुकुति का सुरे निज-
हिया खोलि बार-बार कइले बिनतिया।
ध्यान में मगन योगिराज हिमवनवा
नदीयन के माला जपे तपे खेत-बनवा
सुख से निहारू ई पावन धरती रे। महामनु ...
के बताई, केकरा ले अइले ई धरवा
कहाँ से चलल आवे भरे के सगरवा
आरज अनारज द्राविड़ इहाँ चीन बा
हूण शक मुगल पठान एमें लीन बा
पछिया दिशा में जे खुलल दरवाजा
पीठी ले-ले पाहुर रहल सभे आ-जा
देइ-लेइ मिलिके रहेके एही भीरे। महामनु ...
धार ध के जुधि के करत जयकरवा
पागलन्हि लेखा मचावत हाहाकरवा
लाँघि मरुभूँइ-परबत-बन-झरिया
लाके बरबादी जे कइल पइसरिया
सभ केहू अब हमरा में महफूज़ बा
दिल में जे धड़के ओही के सुर-गूँज बा
बाजु-बाजु-बाजु आजु रुदरऽ के बीना
दूर जे बा खाढ़ अबो धइ मने घिरिना
आई ऊहो पास मोरा बान्ह तूरि, हीरे। महामनु ...
इहाँ कबो नित पल-पल छिन-छिन में
महा ओंकार के महान सुन-धुनि में
भावुक हिरदिया के सुमधुर तान पर
गूँजत रहल एके मंत्र कल्याणकार
तपवा का बले ओही एकता-अगिन में
आहुति आपन जे दिहल अनगिन में
भेद के दीवार ढाहि जागल रहल जे
सीमाहीन एगुड़े हिरिदया रहल से।
ऊहे तप-साधना-आराधना उमेदी
खोलले बा निज जगिशालवा के बेदी
मिले के बा इहवाँ सभे का नतसीरे। महामनु ...
ओही रे अगिनिया का जरि से झरत बा
दुखवा के लाल-लाल लुतुकी बरत बा
सहहीं के होई, एमें दहहीं के होई
भगिया के रेख ना मिटाइ सकी कोई
मनवा रे, ढोउ ओही दुख के गँठरिया
सुनु का कहत सके सुर से हँकरिया
सभे लाल-भयि के घंघरिया उतारि दे
चिर अपमान के बिलरिया के मारि दे
दुखवा के दरद दुसह दूर भागी
फेनु त महान प्रान तने तीरा जागी
काटे राति जागि जागि माई भारती रे। महामनु ...
आरज-अनारज गला में बाँहि डारे
हिन्दू-मुसलमान सिख पारसी पधारे
बौद्ध-जैन जहूदी धरम ध्वज धारे
आवे अंगरेज ईसाइयो एहि द्वारे
बाबाजी, आपन तनी साफ क के मनवा
हाथ ध के सभका के ले चलीं अंगनवा
होखे जे पतित चंडाल जोश भरि के
आवे सभ लोग अपमान से उबरि के
माई के पूजन खाति बेगे चलि आवे
शुभ रे कलसवा में हथवा लगावे

अनुवाद

सुरेश कांटक

डाक बाबू

मूल बंगला कहानी - रवीन्द्रनाथ ठाकुर

उलापुर गाँव में पहिले-पहिल डाक बाबू के बहाली भइल।

गाँव त बहुते छोट रहे, बाकी भीरिये नील के एगो कारखाना रहे, ओकरा मालिक के कोशिश से उहवाँ एगो डाकघर खुल पावल रहे।

डाकबाबू कोलकाता के रहे वाला रहन। उनकर मन एह गाँव में ना लागत रहे, जइसे कवनो मछरी पानी में से निकल के जमीन प ध दियाइल होखे। उनकर डाकघर आ रहे के कोठरी - दूनो खपड़ैल रहे। भीरिये एगो पुरान पोखरा रहे, जवना के चारों ओर सघन फेंन खाड़ रहन स।

नील के कारखाना के कामगर के फुरसत ना मिले। ऊ लोग भलमानुस लोग का साथे मेल-जोल के लायको ना रहन। कलकाता में रहे वाला लोगन के बीच गरबी ला ना, त दुखी लागेला लोग। डाक बाबू के साथी-संघतिया रहे ना। उनका कामो कमे करे के पड़त रहे।

कबो-कबो ऊ कविता लिखे के कोशिश करत रहन। पतइन के सिहरल आ आसमान में पँवरत बदरी उनका जिनगी में हुलास जगावत रहे आ कविता लिखे के उकसावत रहे। बाकी असल में ऊ ओह घरी अधिका खुश होखस, जब घन फेंन के बदले सड़क, आ, बदरी के बदले ऊँच मकान देखे के कलपना करस।

डाक बाबू के तनखाह कम रहे। उनका आपन खाएक खुदे बनावे के पड़े। हँ, एह काम में ऊ रतन के मदत ले लेत रहन। रतन ओही गाँव के एगो अनाथ लइकी रही। ऊ डाक बाबू के अधिका से अधिका काम-काज क दिहल करत रही। सँझवत के बेरा जब गाँव से धुआँ कचरात ऊपर उठे, चिरई चहचहाये लागस, बाउल साधू तेज आवाज में सामूहिक प्रार्थना-संगीत गावस, जब कवि फेड़न के हिलत पतइन से उकसावा पाके कविता लिखे के जोरदार जरूरत महसूस-डाक बाबू आपन ललटेन जरावस आ पुकारस -'रतन!'

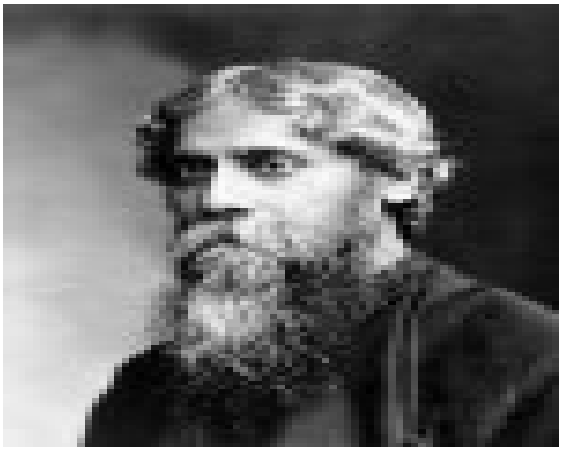

रतन ओह पुकार के इंतजार करत बहरी बइठल रहस; तुरंते भीतरी आवे के बदले उहँवे से जवाब देस -'रउवा हमरा के बोलवनी हा का?'

'तू करत का बाड़ू' डाक बाबू पूछस।

'अब आवत बानी, चूल्हा जोरब।' रतन बोलस।

आ डाक बाबू कहस -'चूल्हा देर से जोरिहऽ, पहिले तनी हुक्का पी लेवे दे।'

रतन तब अंत में भीतरी जास आ तमाकू प अँगार ध के फूँकस-सुनगावस।

डाक बाबू के उनका से बतियावे के नीमन मोका मिल जाव आ पूछस -'रतन! का तहरा अपना माई के इयाद आवेला?' बतियावे के शुरूआत खातिर ई बढ़िया विषय रहे। रतन के कुछ इयाद रहे, कुछ भुला गइल रही। उनकर बाबू जी उनका के माई से अधिका प्यार देत रहत। उनकर इयाद उनका

आजो ताजा रहे। काम काज के बाद साँझि के ऊ धरे लवटत रहन; उनकर घरे आइल रतन के आजो नीके तरे याद रहे।

जब पुराना दिनन के यादगारी रतन के दिमाग में बाढ़ आइसन आवे, त ऊ डाक बाबू के गोड़ भीरी बइठि जास। उनका अपना छोट भाई के इयाद आवे, जेकरा साथे बदरियाह दिन में पोखरा के किनारे मछरी पकड़ल करस। बाकी बाते-बात में समय बीत जाय आ डाक बाबू खाएक बनावे में

असकतिया जास। तब रतन हाली-हाली चूल्हा जोरस आ कुछ रोटी पका देस। फेनु ओही रोटियन के फजीरे के बाँचल-खोंचल खाएक-तरकारी के साथे खा-पी के ऊ तिरपित हो जास।

कबो-कबो साँझि के बेरा बइठल-बइठल ऊ (डाकबाबू) अपना घरे का बारे में सोचस। कबो माई इयाद आ जाय, त कबो बहिन के मूरत दिमाग के चदरा प उतरि आवे। सोचते सोचत उनका अपना जवानी के समय प खीझ बर जाय। ऊ यादगारी उनका मन के हरदम खखोरत रहे, बाकी कारखाना के आदमीन से ऊ कुछो कहि ना पावत रहन। हँ, जब कबो रतन भीरी रहस, ऊ आपन यादगारी उनका सोझा खोल के रख देस। गते-गते रतन डाक बाबू के भाई, बहिन, आ भाई के आपन माई, बहिन आ भाई समुझे लगली। रतन के हियरा में ऊ लोग जीयत'जागत बइठि गइल लोग। दूपहर के समय रहे। तनी-सा बरखा होके रुक चुकल रहे। ठंडा हवा चलत रहे। जमीन से सोन्ह गमक निकलत रहे। एगो अकेल चिरईं चहकत रहे। ओकरा चहक में कवनो शिकाइत भा उदासी के आवाज रहे।

डाकबाबू के छुट्टिये-छुट्टी रहे। उनका कुछ करे के ना रहे। बरखा के बाद पतइन के हरियरी बढ़ि गइल रहे। आ घटत घटा के झलकी बहुते मनमोहक रहे। डाकबाबू के आँखि ओकनी प लागल रही स। ऊ सोच के समुंदर में डुबुकियो लगावत रहन। 'हाय! केहू आपन रहित, जेकरा के हम करेजा से सटा पइतीं!'

सउँसे वातावरण में उदासी लपिटाइल रहे। पतइयो हिल-डुल के मानो इहे भाव देखावत रही स। चिरइनो के आवाज में इहे भाव रहे। केहू जानित, त विश्वास ना करित कि एगो महमूली, कम दरमाहा पावेवाला डाकबाबू के मन में अइसनो विचार उठ सकत बा।

डाकबाबू एगो ठंडा साँस लिललन आ पुकरलन - 'रतन!'

ओह धरी रतन अमरूध खाये में मगन रही। मालिक के आवाज सुनिके दउरल अइली आ पूछली - 'रउवा हमरा के बोलवनी हा, भइया?'

'हम तहरा के पढ़ावे के सोचत रहीं।' डाकबाबू जवाब दिहले आ सउँसे दिन रतन के अक्षर-ज्ञान करावत रहि गइलें। एह तरह से रतन के बहुते कमे दिन में जुड़वा अक्षर पढ़े आ गइल।

एक दिन घनघोर बरखा शुरू भइल। अइसन बुझात रहे के एकर अंते ना होई। नहर, गड़हा सभ भर चुकल रहन स। रातो-रात बरखा झमझमात रहल आ बीच-बीच में बेंगन के दर्र दों सुनात रहल। गाँव के सड़क पानी से भर गइल। बाजार-हाट कइल कठिन हो गइल।

भोर के समय रहे। आसमान में बदरी घेरले रहे। डाकबाबू के चेली दुआरी प खाड़ होके बोलाहट के इंतजार करत रहे। अंत में ओकरा से रहाइल ना। ऊबि के फाटल-चिटल किताब लिहले गते-गते भीतरी चलि गइल। डाकबाबू खटिया प पड़ल-पड़ल कुछ सोचत रहन। उनकाके देखि के रतन लवटही के रही कि पुकार आइल -'रतन!' ऊ घूमि के पुछली।

'रउवा सूतल रहनी हा का, भइया?'

डाकबाबू थहराइल आवाज में जवाब दिहलें -'हमार तबीयत ठीक नइखे। कपारओ बहुते गरम बा का?'

बहरी बरखा होत रहे। डाकबाबू रहन। अइसन हालत में ऊ हलुक-हलुक सेवा-टहल के जरूरत महसूसे लगलन। उनकर ईछा भइल कि कवनो कोमल सुकवार अँकवारी वाला हाथ उनका माथ के छूइत भा उनकर माई भा बहिन अनकर कपार सुहुराइत।

ओह बाहरी आदमी के निराश ना होखे के पड़ल। रतन आपन कविता बाली संकोच छोड़िके माई अइसन अनकर सेवा करे शुरू क दिहली। ऊ गाँव के डाक्टर के बोलवली आ जाँच करववली। उनका के दवाई के दवाई देवे लगली आ राते-दिने उनका सेवा में आपन नीन भुला गइली। उनका खातिर पथो बनावे लगली। कबो-कबो ऊ डाकबाबू से पूछस -'तबीयत ठीक बा नू, भइया?'

डाकबाबू गते-गते ठीक हो गइलन, बाकी कमजोरी रहि गइल। ऊ अब उहँवा से उबिया गइल रहन आ बदली खातिर दरखास देवे के मन बना लेले रहन। ऊ विरोधी आबोहवा के आधार प अपना स्थान बदले खातिर दरखास लिखि के कलकत्ता भेज दिहलें।

डाकबाबू के निरोग भइला प रतन फेनु दुआरी प पुकार के इंतजार करे खातिर बइठे लगली। बाकी पहिले अस ना। अब ऊ खुदे कबो-कबो झाँकि के भीतर देखसु। डाकबाबू कुरसी प बइठिके कुछ सोचत रहसु भा खटिया प भकुआइल लोटत रहस। रतन उनका पुकार के इंतजार में रही आ डाकबाबू अपना दरखास के नतीजा के इंतजार में। ऊ अपना पाठ के बेर-बेर दोहरावस काहे कि उनका डर एह बात के रहे कि पूछला प जुड़वा अछर के पहचान कतहीं भुला मत जाय। पूरा एक हफ्ता का बाद डाकबाबू उनका के बोलवलन। ऊ दउरल-दउरल उनका भीरी गइली आ बोललली - 'रउवा हमरा के बोलवनी हा का, भइया?'

'काल्हु हम इहँवा से जा रहल बानी, रतन!' डाकबाबू कहलन।

'कहँवा जा रहल बानी, भइया?'

'घरे जात बानी।'

'कब लवटब?'

'कबो ना।'

रतन फेनु कबो ना पूछली। डाकबाबू खुदे कहत जात रहन कि उनकर दरखास नामंजूर हो गइल, एह से ऊ त्यागपत्र देके घरे जात बाड़न।

बहुत देर तक दूनो जना चुप रहल। दीया गते-गते जरत रहे। कुछ देर के बाद रतन उठली आ चुहानी में रसोई बनावे चल गइली। बहुते भारी भावना उनका मन में उठत रहे। जब डाकबाबू खा लिहलें, त ऊ पूछली - 'भइया, हमरा के अपना घरे ना ले चलब का?'

डाकबाबू ई सुनि के हँसि पड़लन। 'वाह कइसन बात बा!'

बाकी ऊ रतन के कुछ ना बतवलें कि उनका के साथे ले जाये में कवन अड़चन बा।

रतन ओह रात जागल रहि गइली आ डाकबाबू के शब्द उनका दिमाग में हड़होड़ मचवले रहल – 'वाह! ई कइसन बात बा।'

जब ऊ भोर में उठलन, त उनका नहाये के तेयारी हो चुकल रहे। कलकाता अइसन उनका घइयला के पानी से नहाये के आदत बन गइल रहे। उनका एही तरह से नहाइल भावत रहे। पोखरा भा कुआँ-कुआर पर जा के नहाइल उनका भावत ना रहे। ना जाने काहें, रतन डाकबाबू के जाये के समय ना पूछले रही। एह से ऊ सुरुज उगे से पहिलकी नहाये के तेयारी क देले रही।

नहइला का बाद डाकबाबू उनका के बोलवलें। ऊ चुपचाप उनका भीरी जाके खाड़ हो गइली। डाकबाबू कहलन –'रतन! हमरा जाये के बात से तहरा चिंता ना करे के चाहीं। हम नयका डाकबाबू से तहरा के देख-भाल करे के कहि देब।'

'हमरा खातिर केहू के कुछ कहे के जरूरत नइखे; हम अब इहँवा एको छन रहल नइखीं चाहत।'

डाकबाबू के काठ मार देलस। एकरा पहिले रतन के ऊ एह रूप में कबो ना देखले रहन।

नयका आदमी समय प आ गइल। डाकबाबू उनका के उनका के कागज-पत्तर समुझा के जाये के तेयारी कइलन। जाये के पहिले ऊ रतन के बोला के कहलन, 'ई ले ल। एह से ताहार कुछ दिन चल जाई।'

यात्रा खातिर कुछ रकम राखि के पूरा महीना के रकम ऊ रतन के देबे लगलन। बाकी रतन डाकबाबू के गोड़ प गिर पड़ली आ रोइ- रोइ के कहे लगली –'भइया! किरपा क के हमरा के कुछ मत दीहीं, आ हमरा बारे में फिकिरो मत करीं। आ ऊ दउरि के आँखिन से ओझल हो गइली।'

डाकबाबू लमहर साँस छोड़त आपन थइला उठवलें आ छाता तनलें। आगे-आगे नाँव का ओर बढ़े लगलें, पीछे-पीछे एगो आदमी उनकर समान लिहले चहत रहे।

ऊ नाव प बइठि गइलें। नाव चल पड़ल। नदी में लहर उठत रहे, अइसन लागल रहे जइसे धरती सुसुकत होखे आ ओकरा आँखिन से लोर ढरकत होखे। एगो गँवई लइकी के उदास चेहरा में धरती के अथाह दरद झलकत रहे। कबो-कबो अइसन लागल रहे कि ऊ लवटि जाय ओ ओह असहाय लइकी के ले आवे।

नाव बीच नदी में पहुँचि चुकल रहे। गाँव बहुते पीछे छूट चुकल रहे। अब त उनका गाँव के बाहरी शमशान घाट खाली लउवत रहे। अब ऊ दार्शनिक विचारन से अपना मन के ढ़ाढस देवे लागलें। आइल-गइल त प्रकृति के नियम ह। मिलल-विछोह त संसार के जरूरी सत् ह। आ, मउवत ऊ स्थायी वियोग ह, जवना का बाद मिले के कवनो असरा ना रहेला।

बाकी रतन में ई दर्शन के भाव कहँवा रहे! ऊ डाकघर के अगल बगल लोर भरल आँखि संगे बेमन रहे। हो सकत बा कि मन में अबहियो तनी-सा असरा होखे कि भइया कहियो जरूर लवटिहें। साइत इहे कारन रहे कि ऊ एकदम निराश ना भइल रहे।

हाय रे हमार प्रकृति! हमनी का हरदम भावुकता के झोंका में गलती करत जाईंलाजा। बुधी-विचार देर से आवेला। आदमी अपना हियरा में झूठ असरा ढोवले चलेला। एक दिन हियरा झाँझर हो जाला आ बान्ह तूरिके चल देला। एक बेर फेनु से दुख भरल बुधी-विचार जागेला, बाकी हमनी का ओही पुरनकी गलती के भूल-भुलइया में भटक जाई लाजा। ■

अनुवाद

विद्यार्थी के परीक्षा

मूल बंगला एकांकी - बी.एन. विश्वास

रामरक्षा मिश्र 'विमल'

(छात्र: मधुसूदन के काला चाँद (मास्टर जी) पढ़ा रहल बाड़े। अभिभावक के प्रवेश)

अभिभावक: तब, मधुसूदन के पढ़ाई कइसन चल रहल बिया; कालाचाँद बाबू?

काला चाँद: ओइसे तऽ मधुसूदन बहुते दुष्ट बा बाकिर पढ़ाई में बहुत तेज बा। ओकरा के कबो एक बार से दू बार समुझावे के ना परे। जवन हम एक बेर पढ़ा दिहींले, ऊ कबो भुलाय ना।

अभिभावक: अच्छा! तऽ आजु हम एक बार जाँच कइल चाहतानी।

काला चाँद: तऽ करीं ना।

मधुसूदन: (अपने आप से) काल्हु मास्टर जी अतना मरले रहन कि अवहीं ले पीठ चरचरातिया। आज एकर बदला लेबि। उनुका के तऽ भगाइए के दम लेबि।

अभिभावक: का रे मधुआ! पहिले के कुल्हि पाठ याद बा?

मधुसूदन: मास्टर जी जवन बतवले बानी, ऊ सभ याद बा।

अभिभावक: 'बताउ तऽ, 'अद्भिद' केकरा के कहल जाला?

मधुसूदन: जवन जमीन फोड़ के अंदर से निकलेला।

अभिभावक: एगो उदाहरण दे।

मधुसूदन: केंचुआ।

काला चाँद: (आँख देखावत) ऐं! का कहले हा?

अभिभावक: ठहरीं साहब। अबहीं कुछ मत बोली।

(मधुसूदन से)

तू कविता तऽ पढ़ले बाड़ऽ। अच्छा, बतावऽ! फुलवारी में का खिलेला?

मधुसूदन: काँटा।

(काला चाँद बेंत देखावत बाड़न)

काहे महाशय? मारतानी काहें? हम का झूठ बोलत तानी?

अभिभावक: अच्छा, सिराजुद्दौला के के कटले रहे? इतिहास से बताव त?

मधुसूदन: कीड़ा।

(काला चाँद बेंत मारत बाड़न)

अरे! झूठ-मूठ के मार खातबानी। खाली सिराजुद्दौले के काहें? पूरा इतिहास के कीड़ा काट लेले बाड़े सभ। ली, देखीं।

(खोल के किताब देखावता। काला चाँद मास्टर माथा खुजलावत बाड़न।)

अभिभावक: व्याकरण याद बा?

मधुसूदन: जी, बा।

अभिभावक: कर्ता का होला? एगो उदाहरण देके समझावऽ।

मधुसूदन: कर्ता एह टोला के जय मुंशी हवे।

अभिभावक: काहें? बतावऽ तऽ।

मधुसूदन: ऊ क्रिया-कर्म का साथे रहेले।

कला चाँद: (खिसिया के) तोहार कपार! (पीठ पऽ बेंत से मारत)

मधुसूदन: (चौंकि के) ई कपार ना पीठि हऽ।

अभिभावक: षष्ठी तत्पुरुष केकरा के कहल जाला?

मधुसूदन: पता ना!

(काला चाँद बाबू बेंत देखावत बाड़न)

एकरा के त हम नीमन से जानतबानी। ई जष्ठी तत्पुरूष हऽ।

(अभिभावक के हँसल आ काला चाँद बाबू के विपरीत भाव।)

अभिभावक: गणित के पढ़ाई भइल बा?

मधुसूदन: जी।

अभिभावक: अच्छा? तोहरा के साढ़े छव गो संदेश देके बोलल जाँईं कि पाँच मिनट खइला का बाद जतना संदेश बाँचि जाई ऊ अपना छोट भाई के दे दीह। जो एक संदेश खाए में तोहरा दू मिनिट लागी तऽ अपना भाई के केतना सदेश देब?

मधुसूदन: एगो ना।

काला चाँद: कइसे।

मधुसूदन: मए खा लेबि। देबि कहाँ से?

अभिभावक: अच्छा एगो बऽर के पेड़ रोज सवा इंज कऽके बढऽत। ए हिसाब से जवन पेड़ एह बैशाख महीना के पहिल तारीख के दस इंच रहे ऊ अगिला बैशाख के पहिल तारीख के कतना ऊँच हो जाई?

मधुसूदन: जब ऊ पेड़ टेड़ हो जाई त ठीक-ठीक ना कर सकबि। जब बराबर सीधा उठत जाई तऽ नपला से पता चली। आ जब बीचे में सूख जाई तऽ बाते खतम।

काला चाँद: बिना पिटाई के तोर बुद्धि ना खुलेले। कंबख्त् जब मार के तोर पीठि लाल कऽ देबि तब तें सोझ होखबे।

मधुसूदन: मरला से त बहुत सोंझो चीज टेढ़ हो जाले।

अभिभावक: काला चाँद बाबू, ई राउर भरम बा। मार-पीट से बहुत कमे काम हो पावेला। एगो कहाउत हऽ कि गदहा पिटइला से घोड़ा ना होखे, बाकिर बहुत बेरि घोड़ा पिटइला से गदहा हो जाला। ज्यादातर लइका सीख सकत बाड़न बाकिर ज्यादातर मास्टर सिखा नइखन सकत। तबो मार लइकने के परेला। रउँवा आपन बेंत लेके जाईं। कुछ दिन में मधुसूदन के पीठि ठंडा जाई) एकरा बाद इनका के हमहीं पढ़ाइबि।

मधुसूदन: (अपने आप से) - आह! बच गइलीं।

काला चाँद: बच गइलीं साहब। एह लइका के पढ़ावल मजदूर के काम बा एकदम मैनुअल लेबर। तीस दिन एके लइका का साथे खटि के हमरा पाँच रूपया मिलेला। एतना मेहनत कऽके माटी खनला से तऽ कम से दस रूपया जरूरे मिल जाई।

डॉ. रवीन्द्र नाथ ठाकुर के गीतन के भोजपुरी अनुवाद

अमृतपुत्र

(1)

गावे के जब तू अढ़ावेलऽ
गरब से हिया हमार भर जाला।
मुँह तहार ताकीले टुकुर-टुकुर
अँखियन में लोर-तोर बढ़ जाला।

जिनगी के जवन बाटे तीत-मीठ
अमरित भरल गितवा में गल जाला।
का कहीं पूजा-जाठ साधन सब,
पंछी अस अगरा के उड़ जाला।।

गीत से अघा जालऽ हमरा तू,
लागेला गीत नीमन लागे ला।
एही गीत ले तऽ जानी हम
तोहरो आगा बइठल रूप (जाला)

चाहियो के जवन चरन रूपन रहल,
गीत गुने हिया छू जुड़ा जाला।
गावे का सुर में बिभोर भइले
हम से तोहरा के 'बन्धु' कहा जाला।

(2)

हमार गीत उतार देलख सब गहना,
साज-सिंगार के गरब रहल अब ना।

गहना बिगाड़ित हमनी के शुभ मिलन
बीच में रोड़ा बनित हमरा-तहरा
खनखनाइल ओकनी के तोप दिहित
बतिया, करके के तहार सुनाइत ना।

कबि के 'हम' मर जाला आगा तहरा
महाकवि गोड़ के तहरा बा असरा।
बंशी अस करड सरल हमार जिनगी
नाथ! भरऽ छेदन के सुर से अपना।

(3)

गा ना सकली गीत उ आज ले
आइल रहनीं इहाँ गावे जवन।

बीन के तार उतारत बान्हत
गवाँ देनीं आज ले दिन आपन
ना सुरे सधल ना सबदे जूड़ल
खाली गावे के ब्याकुल बा मन।
आजो ना फुलाइल ई फूल, बस
सनसनात रह गइल एगो पवन।।

ना हम देखले बानी मुँह उनकर
ना हम सुनले बानी बात-बचन।
आवत-जात दुअरा, रहतिया पर
सुनले बानी उनकर पड़त चरन।

सउँसे दिन बीत गइल बिछावे में
स्वागत में उनका खातिर आसन।
साँझ के दीओ ना जरल अब ले
कइसे बोलाई बा अन्हार सघन

मिलन के भरोस बा मन में भरल
भले ई ना हो सकल आज के मिलन।।

भोजपुरी लिखीं
भोजपुरी पढ़ीं
भोजपुरी बोलीं।

(4)

हे गुनी! कइसे गीत गावेलऽ
सुनीले बस अवाक् होके, सुनीले।

सुर के अँजोर तिरभुवन के भर देला।
सुर के बतास गगन-गहन छू देला
गीत के गंगधार राह के पत्थल

बेग से तूड़त् बहते निकल जाला।
मन करेला सुर में सुर मिला दीहीं
कंठ में सुर ना खोजले पाइले।।

बोलीले बोल मगर गीत ना बने
हार के हहर-हहर रोई ले मने।
कइसन फंदा में हिया अझुरा देलऽ
सुर के गाल देख सगोरा, सिटाइसे।

(5)

मेघ पर मेघ जम गइल,
आ गइल अन्हार कइले।
हमके काहे बइठा देलऽ
टुअरा, जोहत अकेले।

दिन भर काम में जुटल
रहीले भीड़ का संगे
तहरे दरस ला, बानी
आज रहे साँझ ले अगोरले।
हमरा के काहे बइठा देलऽ
दुअरा, जोहत अकेले।।

ना देखइबऽ आपन मुँह
छोड़ देबऽ हमरा के अइसहीं
कइसे कटी लमहर इ रात
बरसात के, मह ना जानीं।

ताक रहल बानी दूर ले
उदास आकाश में एकटुक।
हवा में उड़त मेघ संगे
उड़त रही मन छछनत कबले।

हमरा के काहे बइठा देलऽ
दुअरा, जोहत अकेले।।

(6)

ढलल दिन चरन
धरती पर सांझ के परल।
घाटे चल रे
धइला भरे के बेर भइल।

साँझ के हवा
नदी का गीत से ब्याकुल
अपना सुर में
हम के बराबर रह रहल
थाहे चल रे
धइला भरे के बेर भइल।

सुनसान राह
कठिन बा राही से मिलल।
हवा तेज बा,
प्रेमनदी में लहर उठल,
ना जानी हम
फेर वापस घर आएब
ना जानीं हम
केकरा से होई मिलब

नाव में बीन
बजावे अजनबी बइठल
घाटे चल रे
धइला भरे के बेर भइल।

निबंध

इतिहास गूंगा होला

डॉ० देवेन्द्र प्रसाद सिंह

परत-दर-परत पिछला समय के हिसाब आ ओकरा से जुड़ल वास्तविक आ यथार्थ घटना के संग्रह इतिहास कहाला। इतिहास के बहुत व्यापक अर्थ होला काहे कि ऊ पूरा विश्व के हिसाब अपना भीतर राखेला। सृष्टि के कवनों अइसन वस्तु नइखे जेकर संबंध इतिहास से जुड़ल नइखे। इतिहास मानव-जीवन के सभ्यता के क्रमिक विकास से लेके ओकर ह्रास के भी कहानी कहेला। विश्व-समाज में कतना उठा-पटक भइल, शासन आ गद्दी के हकदार बने खातिर का-का षडयंत्र कइल गइल, ई सब के लेखा-जोखा इतिहास में मिलेला। इतिहास खाली राजा चाहे शासक वर्ग के करनी के ही हिसाब ना राखे ऊ हर स्थिति के, घटना के, प्रक्रिया के, प्रवृति के भी व्याख्या करेला। इतिहास लेखन के आधार पक्का सबूत होला, एह से एगो सही इतिहास से प्रमाणिकता के उम्मेद कइल जाला। संक्षेप में ई कहल जा सकेला की इतिहास एगो अइसन अनमोल धरोहर होला जवना के हमनी के समय-समय पर खोलिलजा, आ ओकरा भीतर लिखल कवनों बात समय-कुसमय अइला पर दोहराईलजा। इतिहास बनावल चाहे इतिहास में नाम कइल कठिन होला बाकिर बिगाड़े में बहुत कम समय लागेला।

अपना युग के वीर-बाकुँड़ा लोग इतिहास से खेलेलन। यदि इतिहास के पुरान पन्ना पलटल जाई त हमनी के ई देखे के मिली कि ढेर राजा लोग अपना दरबार में कवि राखत रहन, जे खूब बढ़ा-चढ़ाके उनकर गुणगान करत रहे। रानी लोग के राज महिषी कहल जाला, काहें कि ऊलोग भइस जइसन मजबूत आ ताकतवर होली।

इतिहास आन्हर आ गूंगा दूनो होला। आन्हर एह से कि ऊ समय चाहे जमाना के कबो-कबो ठीक से ना देख पावे, चाहे ओकरा देखे के बा कहाँ आ देख लीही कहाँ? बहुत महत्व वाला आ भारी-भरकम लोग छूट जाला आ खखरी पतई के अपना में जोड़ लेला। जे ओह युग के अपना आँख से नइखे देखले, आ ओह समय के हिसाब नइखे रखले, ऊ जब इतिहास के पन्ना पलटी त हलुकहवे के भारी मानत चली आ कही कि हइहे एह युग के नामवर, शूरवीर, प्रतापी बा बड़का कलमकार हवन। इतिहास से पूछल जाव त ऊ एकर जवाब ना दे सके। हम ई मान के चलीला कि इतिहास के औकात एगो अइसन देहात के सिधवा मेहरारू जइसन होला। जवना पर कतनो अत्याचार होत रहेला बाकिर ऊ कुछ ना बोले ना आपन कवनो प्रतिक्रिया व्यक्त करे ले। इतिहास कहीं-कहीं अइसन करेला कि नीक के जबून बना देला आ जबून के नीक कर देला। जइसे मेहरारू के चोली-दामन के स्थायी संबंध बनल बा ओइसहीं हमनियों के इतिहास से हमेशा खातिर संबंध बा। जब हम अपना-अड़ोस-पड़ोस में झाँकीला, साहित्यिक मिजाज के ताप नापे खातिर ओकर नब्ज टोइला आ अपना आँख के आगे समय से जुड़ल इतिहास लिखात देखीला, त हमरा बुझाला, ई असल इतिहास ना ह, ओकरा साथे छल-छद्म आ धोखा कइल जा रहल बा। इतिहास स्वाभाविक रूप से अपना से बनल नइखे, बनावल जा रहल बा। पहिलका बरसात भइला पर कई तरह के मेढ़क 'टर्र-टर्र' के आवाज दे दे पुकारत रहेलन आ हमनी के धेयान

बेवजह ओइजा अपने आप चल जाला। ऊ लोग अपना भइला के एहसास करा देला कि हमहूँ एह योनि में पैदा ले के तू लोग से कम वाचाल नइखीं। कवि यदि कविता करे के मूड में होई त मेढ़क के आवाज ओकरा कान में घुसके कहीं-न-कहीं ऊहो जगह बना ली, आ कविता के इतिहास में आपन नाम स्थायी रूप से लिखवा ली। इतिहास में घुस के आपन जगह बनावे के एगो ई तरीका भइल।

अपना युग के वीर-बाकुँड़ा लोग इतिहास से खेलेलन। यदि इतिहास के पुरान पन्ना पलटल जाई त हमनी के ई देखे के मिली कि ढेर राजा लोग अपना दरबार में कवि राखत रहन, जे खूब बढ़ा-चढ़ाके उनकर गुणगान करत रहे। रानी लोग के राज महिषी कहल जाला, काहें कि ऊलोग भइस जइसन मजबूत आ ताकतवर होली। कमजोर राजा के कहीं-कहीं मजबूत रानी मिल जात रही, अपना मन के बहलावे खातिर कवि से कहस कि हमार मन जइसन करता ओइसन कविता कर। राजा शिवसिंह के मेहरारू लखिमा देई अइसने रही, ऊ विद्यापति से मन माफिक कविता लिखवाके सुनस आ प्रसन्न होखस। विद्यापति 'राजा शिवसिंह रूप नारायन, लखिमा देई रमाने' जइसन पद लिख के एह तथ्य के स्वीकार कइले बाड़न। ओह घरी से आज तक हमनी के इहे पढ़त बानी जा आ इतिहास के कारण जानत बानी जा।

'महाभारत के साँझ के दुर्योधन युधिष्ठिर से कहत बा- मैं जानता हूँ युधिष्ठिर, तुम विजेता हो! अपनी देखरेख में इतिहास लिखवाओगे। मैं तुम्हारा हाथ पकड़ने नहीं आऊँगा। तुम मुझे सुयोधन से दुर्योधन बना दोगे यही न? एगो विजेता के इतिहास लिखवावे के तरीका ई भइल। इतिहास के संबंध में जवन धारणा हमरा मन में बइठल रहेला जब हम दोसरा के मन में झाँक के देखिला त बुझाला कि ऊ लोग भी जे जागरूक बाड़न, हमरे जइसन सोचत होइहन। राष्ट्रकवि दिनकर त इतिहास के अउर महत्व कम कके लिखले बाड़न-अंधा चकाचौंध का मारा, क्या जानें इतिहास बेचारा। पुरनका साहित्यकार लोग के मनके इतिहास यदि पढ़ल जाव त बुझाता कि पहिले के रचनाकार लोग आपन जीवनवृत्त बतावे में शर्मिंदगी महसूस करत रहन। एह से ऊ लोग रचना लिख दे अपना बारे में कुछ ना बतावस। उनका नजर में रचना प्रमुख रहे, जीवनी गौण। आज अपना बारे में अधिक-से-अधिक लिखवावे खातिर, इतिहास के पन्ना में सगरे नाम दर्ज करावे खातिर, राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय रचनाकार कहाये खातिर लोग जतना जोर लगा रहल बा, ओह से इतिहास के मिट्टी पलीद हो रहल बा। फूल कवनो राहगीर के धर के अपना ओरे देखे आ सूंधो के ना कहे। ऊ आँख के आकर्षक लागेला, आँख अपना मने उहाँ दउड़ल चल जाला, आ नाक से ओकर सुगंध के ग्रहण करेला। तब जाके आपन मनोभाव प्रकट करेला कि हमरा कइसन लागल। रचना अइसने लिखाये के चाही जवना में स्वत:स्फूर्त आकर्षण रहे। ओकरा में आकर्षण पैदा करे खातिर कवनों बल चाहे प्रसाधन के प्रयोग ना कइल गइल होखे। बहुत रचना अइसन लिखाइल बा जवना के देखते ही नाक-भौं सिकोरे के परेला, कई लोग अइसन किताब के समीक्षा लिखे के कहेलन, जवना के विषय वस्तु गला के नीचे उतरे लायक ना रहे। उहो लिखवावे खातिर घेराबंदी करेलन। ई सब बेमन के लिखला-लिखववला से साहित्य में कूड़ा-कर्कट भर जाई, फिर ओकर इतिहास घूरा पर फेंके लायक बहारन हो जाई। कवि कुंजन अइसन लोग के चिन्हले रहन। उनकर विचार बा निरर्थक आ ऊबंके मूल्यांकन करत। नाम ठीक से इयात नइखे, ना किताब के लिखल पंक्ति इयाद बा। ऊ जवन लिखले रहन ओकर छाया हम लिख

रहल बानीं। ऊ लिखे के शुरुआत कइले रहन-राउर बहुत नाम बा, बहुत शोहरत बा, रउआ राष्ट्रीय स्तर के विद्वान हईं। उनकर लिखल पहिलका पंक्ति पढ़ के हम किताब बंद कर देली। सोचलीं-ई दोसरा के मुँहा-मुँही सुनल बा प्रचारक के प्रभाव में आ गइल बाड़न। रचना चाहे रचनाकार के ई गहराई से मूल्यांकन ना कर सकस। कवनों गंभीर समीक्षक पहिलहीं हइसन घासलेटी साहित्य के भाषा ना लिख सके। सोचलीं उनका ई सब लिखला के जरूरत का रहे। धारा में बहला से कवनों किनारे ठूंढ बनके स्थायी खड़ा रहल अच्छा होला। एह से लाभ ई होई कि इतिहास गलत दिशा में जाये से बच जाई। एगो लोकोक्ति बा-जइसन खाई अन्न, ओइसन होई मन्न। मतलब बा अन्न के रस से मन के पोषण होला आ उहे मन के स्वभाव बनावेला। जइसे मन के भीतरी संबंध अन्न से बा ओइसहीं आदमी के संबंध समाज से बा। जब कोई दूषित अन्न खइले रही, ओकर मन दूषित रही। अइसन आदमी इतिहासकार बन जाव, ऊ कइसन लिखी- योग्य के अयोग्य बना दी काहे कि इतिहास अदिमिये लिखेला। पहिले कहात रहे-'झूठे का मुँह काला, सच्चे का बोलबाला', बाकिर आज के परिवेश में ई क्रम उलट गइल बा। समाज 'पंडित होई सो गाल बाजावा' के ढर्रे पर चल रहल बा। इतिहास के आड़ में हम कई जगह कड़वा सच कह-देले बानी काहे कि आज इतिहास के प्रामाणिकता पर आँच आ रहल बा। कोई भी आदमी साहित्य, समाज चाहे आदिमियत के इतिहास लिखो ऊ इतिहास-सर्जन के रास्ता अख्तियार कके चलो, जवना से इतिहास के प्रति बढ़त भ्रामक अवधारणा के रोकल जा सके।

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
शान्ति प्रसाद जैन महाविद्यालय
सासाराम (रोहतास), मो0- 9470769466

अनुवाद

यमुना तिवारी 'व्यथित'

जोति

घर के दुआर तुरि अइली किरिनियाँ
जय जयकार भइल,
भागल अन्हरिया भइले भोर
जग उजियार भइल।

हे रश्मि देव वीर जीवन के शुरुआत भइल
तोहरे हथवा से आशा के आगाज भइल,
मनवाँ प्रफुल्लित पोरे-पोरे
जय कयकार भइल।

निर्दयी दुख अइला से नाहीं घबराइला
सुखवा के बात छोड़ीं दुख के बोलाइला,
हम ना बहाइबि आँखि लोर
जय जयकार भइल।

भोरे सुरुज तोहरा जल्दी आ गइला से
गम के तिमिर पथ में, तुहिर बजवला से,
ज्योति छलकत बा चहुँ ओर
जय जयकार भइल।

देहियाँ में जोति भरलऽ ताकत भरपूर मिलल
मउवत से लड़े के, अमृत भरपूर मिलल
भक्ति में तोहरा हम भइलीं विभार
जय जयकार भइल।

मूल कविता : रवीन्द्रनाथ ठाकुर
साभार : लुकार, अंक 37,
जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद

सदस्यता फार्म

घर बैठे 'भोजपुरी जिंदगी' के सदस्य बनें

सहयोग राशि -
वार्षिक (4 अंक) - 100/- रु॰ मात्र

महोदय,

मैं **'भोजपुरी जिंदगी'** का वार्षिक सदस्य बनने का इच्छुक हूँ।

इसका सहयोग राशि रु॰ _____

चेक/ड्राफ्ट सं॰ _____ दिनांक _____

द्वारा/नगद जमा कर रहा / रहीं हूँ। मुझे निर्देशित पते पर निर्धारित अवधि तक नियमित रुप से **'भोजपुरी जिंदगी'** भेजी जाए।

नाम _____

पता _____

_____

सम्पर्क नं. घर : _____ मोबाइल : _____

शीघ्र संपर्क करें

सम्पादक

भोजपुरी जिंदगी

आर जैड एच/940, जानकी द्वारिका निवास
प्रथम तल, राजनगर-2, पालम कॉलोनी
नई दिल्ली-110077
मोबाईल॰ : 09868152874
Email : bhojpurijinigi@gmail.com

इस फार्म की फोटो कॉपी भी भरकर भेजें।